

बहुत दूर, कितना दूर होता है



मानव कौल

बहुत दूर, कितना दूर होता है



मानव कौल

बहुत दूर, कितना दूर होता है
(यात्रा-वृत्तांत)

बहुत दूर, कितना दूर होता है

मानव कौल



ISBN : 978-93-87464-80-3

प्रकाशक :

हिन्द-युगम

201 बी, पॉकेट ए, मयूर विहार फ़ेस-2, दिल्ली-110091

मो.- 9873734046, 9968755908

आवरण डिजाइन : सुगंधा गर्ग

कला-निर्देशन : सौमित्र सिंह

लेखक की तस्वीर : सुगंधा गर्ग

पहला संस्करण : नवंबर 2019

© मानव कौल

Bahut Door, Kitna Door Hota Hai

Travelogue by *Manav Kaul*

Published By

Hind Yugm

201 B, Pocket A, Mayur Vihar Phase 2, Delhi-110091

Mob : 9873734046, 9968755908

Email : sampadak@hindyugm.com

Website : www.hindyugm.com

First Edition: Nov 2019

मैं बहुत पहले ठोकर खाकर गिर चुका था...
जो बाद में उठकर भागा, वो मैं नहीं था।

बहुत दूर का सपना...

यह बहुत पुरानी बात है, जब बंटी कुएँ की मुँडेर पर बैठे हुए अपनी दोपहरें काटा करता था। उन्हीं दोपहरों में अपनी चाय की दुकान छोड़कर, उसका पक्का दोस्त सलीम भी उसकी बगल में आकर बैठ जाता था। दोनों की उम्र लगभग सात या आठ साल होगी। हर दोपहर गाँव के ऊपर से एकमात्र हवाई जहाज़, तेज़ आवाज़ करता हुआ उनके आसमान से गुज़र जाया करता था। सलीम की आदत थी कि वो कुएँ की मुँडेर पर खड़ा होकर हवाई जहाज़ को टाटा किया करता था और बंटी की आदत थी कि वो उस हवाई जहाज़ का अक्स अपने कुएँ के पानी में देखा करता था।

पर आज के दिन इंतज़ार कुछ लंबा था।

“यार बंटी, अबे बहुत ही ज्यादा टेम हो गया। आज तो आसमान भी चकाचक चमक रिया है।” सलीम ने अपनी मैली क़मीज़ से पसीना पोंछते हुए कहा।

“अबे थोड़ा घूमकर आ रिया होगा।”

“अभी तक तो आवाज भी नई आरी उसकी... आवाज तो आ जानी चईये अब तक।”

इस बात का बंटी ने कोई जवाब नहीं दिया। वो पहली बार हवाई जहाज़ का इंतज़ार नहीं कर रहा था। उसके दिमाग में कुछ वक़्त से एक सवाल चल रहा था।

“सलीम, ये जहाज आता कहाँ से है? और ये रोज जाता कहाँ है?”

“पीछे से आता है, बहुत दूर से... और फिर आगे तो बहुत ही दूर चला जाता है।”

“किधर?”

“अबे बहुत दूर!”

“बहुत दूर, कितना दूर होता है?”

दोनों इस सवाल पर चुप हो गए। सलीम, कुएँ की मुँडेर पर खड़ा हो गया और कुछ देर कान लगाकर सुनने लगा। उसे लगा कि हवाई जहाज़ की आवाज़ है पर वो पीछे जोशी जी के ट्रैक्टर की आवाज़ थी। वह वापिस बंटी की बगल में बैठ गया।

“आज तो भटक गया लगता है।” सलीम ने साँस छोड़ते हुए कहा।

“अगर हम रफ़ीक़ मियाँ की दुकान से साइकिल किराये पर लें और हाईजाज के पीछे भगा दें तो हम भी क्या बहुत दूर चले जाएँगे?”

“तुझे साइकिल चलाना कां आता है!”

“अबे बस पूछ रिया हूँ।”

सलीम और इंतज़ार नहीं कर पाया। उसकी चाय की दुकान पर ग्राहकों की भीड़ जमा हो गई होगी। अपनी चाय की दुकान की तरफ़ जाते हुए उसकी निगाह पूरे वक्रत आसमान पर ही थी। कुछ देर में बंटी ने भी इंतज़ार छोड़ दिया। हवाई जहाज़ से ज़्यादा उसे उसका सवाल कचोट रहा था। वह वहाँ से दौड़ता हुआ, बाज़ार के पीछे की तरफ़ से होता हुआ, जीवन की पतंग की दुकान पर चला गया।

दोपहर को जीवन की दुकान पर कम ही बच्चे आते थे। वह दोपहर को इत्मीनान से नमाज़ पढ़ता था और फिर अपनी दुकान पर लगे गणपती के सामने अगरबत्ती जलाता था। बंटी जीवन की कई दोपहरों का हिस्सा था सो उसे इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होता था। ऐसा कहते हैं कि जब जीवन के अब्बा को जीवन एक मज़ार पर पड़ा मिला था तब उसके गले में गणपती का लॉकेट लटक रहा था।

“आज तो वो आया नहीं...” बंटी ने गुप्त स्वर में बोला।

“कौन?” जीवन मांझा गिरी में लपेट रहा था।

“हाईजाज।”

“हाँ... आज सुनाई नहीं दिया।”

बंटी को हमेशा लगता था कि जीवन उसे बच्चा समझता है। और ये बात अभी तक सिर्फ़ उसके पक्के दोस्त सलीम को पता थी कि वो अब बच्चा नहीं रहा था। पिछली बार बंटी ने जीवन से कहा था कि एक बार वो नीली पतंग उड़ा रहा था, उस पतंग को आसमानी हवा लग गई थी और वो ऊपर की तरफ़ जाए जा रही थी... तभी जहाज़ निकला और उसने जैसे-तैसे अपनी पतंग को जहाज़ से बचाया था.. वरना वो जहाज़ में फँसकर उस दिन उड़ जाता।

जिस सवाल को लेकर बंटी जीवन के पास आया था उसने उस सवाल को झिड़क दिया।

“मैं बहुत दूर जाना चाहता हूँ।”

जीवन की गिरी अचानक रुक गई। जीवन को लगा कि उसने कुछ ग़लत सुना है... बंटी ने फिर कहा।

“मैं बहुत दूर जाना चाहता हूँ।”

“कितनी दूर?”

“बहुत दूर।”

“नदी के उस पार तक...”

“नहीं... और दूर... जहाँ ये हाईजाज जाता है।”

“कहाँ जाता है हवाई जहाज?”

“बहुत ही दूर।”

“तेरे को पता है बहुत दूर कितना दूर होता है?”

“कितना?”

“अबे जहाज तो चाँद पर भी जाते हैं।”

“ये वाला थोड़ी जाता होगा।”

“क्या पता!”

“ये वाला जाज जहाँ तक जाता है मैं वहाँ तक जाना चाहता हूँ।”

“कैसे जाएगा? जहाज में अपनी पतंग फँसाकर?”

बंटी को लगा कि जीवन उसे बड़ा नहीं होने दे रहा है। उसने, बड़ों की-सी गंभीर आवाज़ में कहा—

“नहीं, रफ़ीक़ मियाँ के यहाँ से साइकिल किराए पर लूँगा और जाज के पीछे भगा दूँगा।”

“तेरे को साइकिल चलाना कहाँ आता है!”

“सीख ली है मैंने...”

उसने झूठ बोला था। जीवन से झूठ बोलने पर आँखें खुद झुक जाती थीं।

“अच्छा! और जब आगे जाकर नदी आ जाएगी तब... जहाज तो ऊपर से निकल जाएगा... तब तू क्या करेगा?”

जब बंटी ने आँखें उठाई तो वो जीवन से हार चुका था।

जीवन के हाथों में बहुत सारा उलझा हुआ धागा था जिसे वो लगातार सुलझाने की कोशिश कर रहा था। कुछ देर में जीवन झुँझला गया। उसने सारे उलझे हुए धागे को तोड़कर फेंक दिया और बचे धागों के बीच गाँठ बाँध दी। बंटी को गाँठ कभी भी पसंद नहीं थी, पर बंटी को लगा कि जीवन से, बीच में आई गाँठ के बारे में सवाल करना उसे फिर बच्चा बना देगा। बंटी ने वो उलझा हुआ हिस्सा उठा लिया और उसे धीरे-धीरे सुलझाने लगा। ये उसका जीवन को जवाब था कि चीज़ें सुलझाई जा सकती हैं। तभी हवाई जहाज़ की आवाज़ कहीं दूर से आई। बंटी ने जीवन को देखा। जीवन, बंटी के हाथों में सारा कुछ उलझा हुआ देख रहा था। बंटी जल्दी-जल्दी धागा सुलझाने लगा। हवाई जहाज़ की आवाज़ करीब आने लगी... वो बस कुछ ही देर में उनके ऊपर से होता हुआ निकल जाएगा। जीवन मुस्कुराने लगा। बंटी का धैर्य टूट रहा था और उसके सुलझाने में हिंसा दिखने लगी थी। हवाई जहाज़ की आवाज़ अभी अपने चरम पर थी... वो उनके सिर के ऊपर था। तभी आँसू की बूँदे धागे पर टपकने लगीं, जिसके कारण उसका सुलझाना और भी मुश्किल होता जा रहा था। जीवन ने बंटी को रोकने की कोशिश की पर बंटी ने जीवन का हाथ झिड़क दिया। बंटी की नाक बहने लगी थी... पर वो जल्दी से धागा सुलझाकर हवाई जहाज़ को एक बार देखना चाहता था। बंटी की उँगली सख्त होने लगी और उसने

खुद को अपने ही धागे के बहुत भीतर फँसा हुआ पाया। हवाई जहाज़ की आवाज़ अब लगभग नहीं के बराबर आ रही थी। ये अंत था। बंटी का सिर झुका हुआ था... उसने धागा सुलझाना भी छोड़ दिया था। कुछ दूसरे बच्चे पतंग खरीदने जीवन की दुकान पर आ चुके थे। बंटी शर्म के मारे दुकान के कोने में घुस गया। हवाई जहाज़ जा चुका था। जीवन ने बंटी को एक छोटी नीली पतंग दी और कहा कि ये मेरी तरफ़ से है, रख ले... बंटी ने हिचकते हुए वो पतंग जीवन से ली, पर उसके हाथ आँसुओं के कारण गीले थे... और धागा भी भीग चुका था। पतंग हाथ में आते ही वो कोने से भीग गई... और फटने लगी। बंटी अभी भी बच्चा था... बड़ा होने में अभी बहुत वक़्त था। जीवन बंटी के हाथ में पतंग का फटना देख रहा था। बंटी ने जीवन को देखा और उसके सामने पूरी पतंग गुस्से में फाड़ दी और वहाँ से भाग गया।

बंटी घर नहीं गया। वह सीधा सलीम की दुकान पर गया। उलझा हुआ धागा अभी भी बंटी के हाथ में था। बंटी ने सलीम को वो धागा दिया और कहा कि सुलझाकर बता। सलीम की दुकान पर बहुत भीड़ थी। उसने बंटी को रुकने के लिए कहा। दोपहर को अपना काम निपटाकर सलीम और बंटी रेलवे स्टेशन की तरफ़ अपने अड़्डे पर आ गए। स्टेशन से लगी हुई पुलिया के ऊपर दोनों बैठे हुए थे। सलीम ने कुछ ही देर में वो उलझा हुआ धागा सुलझाकर बंटी को दे दिया। बंटी आश्चर्य से सलीम को देखता रहा... पर सलीम के लिए ये सामान्य बात थी सो उसने बंटी के देखने को कोई तव्वजो नहीं दी। बंटी सोचने लगा कि क्या मेरे बड़े होने की ज़िद में मैं देख ही नहीं पाया कि असल में सलीम बड़ा हो चुका है! उसने सलीम से तुरंत पूछा—

“सलीम, क्या तू बड़ा हो चुका है?”

“मतलब?” सलीम की समझ में नहीं आया।

“मतलब, क्या तू बच्चा नहीं है अब?”

“मैं बच्चा नहीं हूँ।”

“कब से?”

“कभी से!”

तभी उन दोनों के सामने से धड़धड़ाती हुई पंजाब मेल निकल गई। ट्रेन की रफ़्तार में दोनों के बाल उड़े... सलीम ने ट्रेन के गुज़रते ही तपाक से कहा कि ग्यारह... बंटी ने कहा कि नहीं बारह डिब्बे थे। दोनों ने एक-एक कचौड़ी की शर्त लगाई और बात कल पर टल गई।

“तो क्या सलीम तेरे को पता है कि अपने गाँव में जो नदी बहती है वो कहाँ से आती है?”

“अमरकंटक से।”

“तेरे को कैसे पता बे?”

“अबे सबको पता है ये तो।”

“अमरकंटक कहाँ है?”

“जबलपुर के आस-पास है कहीं।” सलीम के जवाब से बंटी थोड़ा चकित था।

“और ये नदी जाती कहाँ है?” बंटी ने डरते हुए पूछा।

“समुंदर में।”

“वो कहाँ है?”

“बहुत दूर है कहीं।”

“और ये ट्रेनें जो धड़धड़ाते हुए निकलीं वो... वो कहाँ से आती हैं और कहाँ जाती हैं?”

“अबे मुझे क्या करना उसका! उसके डब्बे ग्यारह थे ये मुझे पता है... और तू शर्त हार गया है।”

“बारह थे।”

“चल...”

“चल...”

कुछ देर की चुप्पी के बाद बंटी ने कहा—

“तेरे को पता है... जाज अपने गाँव से गुजर जाते हैं, ट्रेनें गुजर जाती हैं... नदी चली जाती है... यहाँ तक कि नदी में बहती हुई कागज की नाव भी पता नहीं कहाँ चली जाती है... अबे मुझे कुछ नहीं पता ये सब जाते कहाँ हैं?”

“मुझे पता है।”

“तुझे पता है?” बंटी हतप्रभ था।

“हाँ, मुझे पता है... पर मैं बताऊँगा नहीं।”

सलीम के जवाब में एक तरीके का पक्का विश्वास था जिससे बंटी चकित रह गया था। उसे लगा कि सलीम ने उसके साथ धोखा किया है, वो बड़ा हो गया और उसने उसको बताया भी नहीं। बंटी ने रिरियाती आवाज़ में सलीम से कहा—

“सलीम यार, जब तू बहुत दूर जाएगा तो मुझे बताएगा ना कि बहुत दूर कितना दूर है?”

सलीम ने चलता हुआ ‘हाँ’ कहा और अपनी चङ्ढी झाड़ता हुआ उठ खड़ा हुआ।

“चलें?” सलीम ने कहा और वापिस गाँव की तरफ़ चलने लगा। बंटी धीरे से उठा और उसके पीछे हो लिया। बंटी, सलीम को मानो पहली बार देख रहा था। हर-कुछ देर में सलीम रुककर लोगों से बात करता, हाल-चाल पूछता... बंटी पीछे चलते हुए ये भी पहली बार देख रहा था। सलीम को पूरा गाँव जानता था जबकि उसने गौर किया कि उसे लोग सलीम के दोस्त के नाम से जानते थे। पीछे चलते हुए बंटी को सलीम का क्रद भी थोड़ा बड़ा लग रहा था। बंटी भागता हुआ सलीम की बग़ल में, उससे सटकर चलने लगा। उसने देखा उसका कंधा सलीम से थोड़ा ऊँचा था, पर पता नहीं क्यों सलीम अब उसे बड़ा दिखने लगा था।

बंटी, सलीम से रश्क करता रहा क्योंकि उसके पास सारे जवाब थे जिन्हें वो उसे कभी नहीं बताएगा। बंटी आपने सवालियों को लिए चुप रहता... और किसी भी बड़े से पूछने

पर वो हमेशा बच्चे ही रह जाएँगे का डर उनसे ये कभी नहीं करवा पाया था।

सलीम अपनी चाय की दुकान में दिन-ब-दिन व्यस्त होता गया था। बंटी को लगा कि शायद बड़े होने की यही निशानी है—व्यस्त रहना। वह बहुत कोशिशों के बाद भी व्यस्त नहीं हो पा रहा था और इस बात का गुस्सा उसके भीतर पलने लगा था। वह ज़्यादातर पढ़ाई करता या नए दोस्त बनाने की नाकाम कोशिश।

अब हवाई जहाज़ गाँव के ऊपर से नहीं गुज़रता था। इतनी बड़ी घटना का भी ज़िक्र बंटी ने किसी से नहीं किया था। उसने पतंग उड़ाना भी छोड़ दिया था क्योंकि पतंग उड़ाने में आसमान दिखता था... और आसमान के दिखने में हवाई जहाज़ के न दिखने का दुख छिपा था।

सलीम अपनी व्यस्तता के बीच जब एक बार उससे मिला था तो उसने पूछा था कि यार आजकल हाईजाज नहीं निकलता? तो उसने कहा था कि हमारा गाँव इस लायक नहीं है कि हाई जाज यहाँ से गुज़रे। बंटी की कड़वाहट ऐसे ही किसी कमज़ोर क्षण में साफ़ दिखने लगी थी।

जब कभी जीवन बंटी को बाज़ार में दिख जाता तो वो यहाँ-वहाँ छिप जाया करता था। जीवन से भागना उसने बहुत छोटे में सीख लिया था।

बहुत दूर असल में कितना दूर होता है? ये सवाल बहुत ऊपर कहीं हाशिये पर टिका हुआ धूल खाता रहा। फिर बंटी के जीवन में बस के सफ़र आए, फिर ट्रेन के... और एक दिन वह हवाई जहाज़ में भी बैठ गया था। वह इतनी धीरे-धीरे बड़ा हुआ था कि वो कभी भी उँगली रखकर नहीं बता सकता था कि ये वो जगह थी जहाँ से वह बच्चा नहीं रहा था। और जब उसे यह समझ आया कि वह बड़ा हो चुका है तब तक उसका गाँव बहुत दूर कहीं छूट चुका था।

बहुत दूर की कल्पना...

सामने चर्च की घंटी बजी और उसके लिखने का धागा टूट गया। बंटी फ़्रांस के एक छोटे गाँव में बैठा हुआ खुद के बड़े होने की तकलीफ़ें दर्ज कर रहा था। सामने पड़ी हुई कॉफ़ी ठंडी हो चुकी थी। बंटी के बाल सफ़ेद हो चुके थे। चहरे की झुर्रियों में बूढ़े होने की दस्तक सुनाई देती थी। उसने एक कॉफ़ी और ऑर्डर की और अभी तक के अपने लिखे को पढ़ने लगा। जीवन, सलीम, हवाई जहाज़, गाँव, ट्रेन—जाने कितनी सारी छूटी हुई चीज़ों का ज़िक्र था। पर वह सलीम के नाम के सामने बहुत देर रुका रहा। सलीम, जिस नाम से वह आज भी रश्क करता था। वह इस वक़्त बहुत दूर था, पर इस बहुत दूर में सलीम बहुत करीब आकर बैठा हुआ था। कहाँ होगा वह? क्या करता रहा होगा? उसने

फ़ोन उठाया और सलीम का नंबर खोजने लगा। सलीम से आखिरी बार कब बात हुई थी ये उसे याद भी नहीं था। उसे अंत में सलीम का नंबर मिला, उससे रहा नहीं गया और उसने सलीम को फ़ोन कर दिया।

“हेलो... कौन?”

दूसरी तरफ़ से सलीम की आवाज़ आई। बंटी उसकी आवाज़ सुनते ही पहचान गया।

“सलीम मैं बंटी बोल रहा हूँ।”

कुछ देर चुप्पी रही। बंटी भी चुप रहा।

“अबे, कहाँ है बे तू? इतने दिनों बाद?” सलीम की आवाज़ में ढेर सारा आश्चर्य था।

“कैसा है?” बंटी ने कहा

“एकदम सही हूँ। पर तेरी आबाज इतनी दूर से क्यों आ रही है?”

“क्योंकि मैं बहुत दूर हूँ सलीम। इस वक़्त फ़्रांस में हूँ।”

“अच्छा। वो तो सुना बहुत दूर है।”

“पता नहीं... बहुत दूर तो है पर...”

बंटी चुप हो गया। बहुत दूर के कितने क्रिस्से बचपन से जुड़े हुए थे। उसके बहुत दूर चले जाने के सारे सपने उसने सलीम के साथ बाँटे थे। फिर बंटी ने अपना गला साफ़ करते हुए पूछा—

“और बता जीवन कैसे हैं?”

“अरे बड़े लफड़े हुए इन्हा पर। जीते जी तो उने किसी ने पूछा तक नई... फिर मरने पर गाँव वाले लड़ पड़े कि उन्हें दफन करें या जला दें...” सलीम ने हँसते हुए कहा।

“अरे वो जीवन नहीं... तेरा जीवन कैसा चल रहा है?”

“अरे अपना तो बैसा ही है... काम-धंधा थोड़ा ठप्प है... बाकी सब सही।”

“अपना गाँव कैसा है? अपनी पुलिया? वहाँ जाता है तू?”

“पुलिया...? कौन-सी पुलिया?”

“जाने दे...”

बंटी को लगा कि उसने किसी ग़लत सलीम को फ़ोन लगा दिया है। दोनों तरफ़ संवाद मानो किसी आहट की बाट जोह रहे हों। फिर सलीम बोला—

“और बाकी सब कुसल-मंगल है?”

“हाँ सब ठीक है।”

“कभी गाँव की तरफ आओ तो याद करना।”

“ठीक है... जल्द ही आता हूँ।”

“ठीक है फिर... अच्छा लगा तुमने फ़ोन किया।”

और सलीम ने फ़ोन काट दिया।

वेटर दूसरी कॉफ़ी ले आया था। बंटी ने कॉफ़ी का घूँट पिया तो मुँह कड़वा हो गया। बहुत स्ट्रॉंग कॉफ़ी थी। उसने अपनी कॉफ़ी में तुरंत दूध और शक्कर घोली। अब स्वाद एकदम वैसा था जैसे स्वाद की उसने पहले घूँट में कल्पना की थी। बंटी वापिस अपना पुराना लिखा पढ़ने लगा... दूध और शक्कर... वरना कॉफ़ी बहुत कड़वी थी। उसे लगा कि

ये दूध और शक्कर असल में कल्पना हैं जिनके कारण उसे अपना लिखा स्वाद दे रहा है जबकि असल कॉफ़ी, यानी सलीम से बात करना कड़वाहट दे गया था। उसने कल्पना की कि वो अपने गाँव में है, और सलीम यहाँ फ़्रांस के गाँव में घूम रहा है। ये सोचते ही उसके चेहरे पर मुस्कुराहट आ गई। एक तरह से ये ठीक भी है क्योंकि असल में तो सलीम पहले बड़ा हो चुका था। बहुत दूर तो उसे आना चाहिए था। कॉफ़ी के कुछ घूँट के साथ बंटी सोचने लगा कि क्या होता अगर सलीम उसे फ़ोन करता और वह गाँव में होता?

“हैलो! कौन बोल रहा है?” बंटी गाँव में फ़ोन उठाते हुए कहता।

“अबे मैं बोल रिया हूँ सलीम। कैसा है बंटी?” सलीम कहता।

“अबे कहाँ से बोल रिया है?”

“बहुत दूर बे... बोला था ना जब बहुत दूर जाऊँगा तो बताऊँगा कि बहुत दूर, कितना दूर होता है!” सलीम बहुत प्रेम से कहता।

“अरे तो बता ना बहुत दूर कितना दूर होता है?” बंटी अपनी पूरी उत्सुकता में पूछता।

“देख पृथ्वी गोल है ना... तो अगर तू बहुत दूर चला जाएगा और जाता ही जाएगा तो दूसरी तरफ से तू पास आता जाएगा।” सलीम बंटी को पूरे आश्चर्य से ये रहस्य बताता।

“क्या!” पर बंटी की कुछ समझ नहीं आता।

“मतलब मैं बहुत दूर हूँ... और इसलिए बहुत पास भी हूँ।” सलीम फिर समझाता।

“तू है कहाँ?” बंटी बात काटता।

“मैं फ़्रांस के एक छोटे गाँव में हूँ।”

“सुना है वो तो सच में बहुत दूर है सलीम... मुझे पता था तू एक दिन बहुत दूर जाएगा।”

“हाँ... अभी इससे भी दूर जाया जा सकता है।”

“पर तू सबसे दूर मत जाना...”

इस बात पर दोनों चुप हो जाते। एक-दूसरे को वक्रफ़ा देते... फिर शायद सलीम पूछता—

“तू बता, गाँव कैसा है?”

“अरे बहुत सही है। यहाँ गाँव वालों ने पुलिया को और भी सुंदर कर दिया है... बहुत से बच्चे वहाँ जाकर बैठते हैं और एक नहीं कई पंजाब मेल को धड़धड़ाते हुए जाता देखते हैं। आजकल गाँव में आसमान दिखना बंद हो गया है। या तो हवाई जहाज निकलते हैं और या जीवन की पतंगें खूब ऊँची उड़ रही होती हैं।”

“जीवन कैसा है?”

“अरे जीवन मियाँ की मृत्यु हुई पर क्या जश्न का माहौल था! पूरे गाँव के सारे हिंदू-मुसलमान सड़कों पर आकर नाचे थे। उस दिन पता लगा कि जीवन असल में कितना बड़ा है... किसी भी धर्म से।”

“अरे वो जीवन नहीं... तेरा जीवन कैसा है?” सलीम जान-बूझकर बात पलटता।

“एकदम सही है, तू बता वहाँ मौसम कैसा है?”

“बिल्कुल अपने गाँव जैसा... मुझे तो लग रहा है कि बंटी मैं तेरे साथ इस वक़्त अपने कुएँ की मुँडेर पर बैठा हूँ और बस अभी हवाई जहाज निकलने वाला है।”

“वैसे हवाई जहाज निकलने का टाइम तो हो रहा है।” बंटी अपने घर की खिड़की से बाहर आसमान ताकते हुए कहता।

“तो तू कुएँ पर जा... मैं भी वहीं मिलता हूँ।” सलीम कहता।

“अरे पर तू तो बहुत दूर है।”

“अरे तू जा तो मैं पहुँच जाऊँगा।”

“पक्का?”

“पक्का।”

“सलीम, मुझे हवाई जहाज की आवाज आ रही है।”

“हाँ... आ रही है... चल वहीं मिलते हैं।”

और दोनों फोन काटकर भागना शुरू करते। बंटी भागते हुए कुएँ तक पहुँचता और उसे वहाँ सलीम बैठा हुआ दिखता। दोनों कूदकर कुएँ की मुँडेर पर बैठ जाते... और फिर बहुत तेज़ आवाज़ करता हुआ एक बहुत बड़ा हवाई जहाज़ उन दोनों के ऊपर से धड़धड़ाता हुआ निकल जाता। दोनों के बाल उड़ते... और सलीम कहता कि इक्कीस... और बंटी कहता कि बत्तीस खिड़की थी हवाई जहाज़ में... दोनों फिर एक-एक कचौड़ी की शर्त लगाते और बात भविष्य पर टल जाती।

बहुत दूर, कितना दूर होता है

कितनी दूर तक चले जाने पर बहुत दूर होता है? मैं बहुत दूर था खुद से, अपनों से, अपने छोटे-छोटे बनाए हुए व्यस्त ढर्रों से, पर फिर भी पता था कि ज़रा-सी दूरी पर वही पुराना सारा जिया हुआ आस लगाए खड़ा है। उसे बस एक छोटे कमज़ोर क्षण की ज़रूरत है और वह वापिस धर दबोचेगा मुझे... फिर किसी भी नए की उम्मीद निरर्थक होगी। एकदम नया और नए सिरे से जीना क्या संभव है? इस प्रश्न के लिखने में भी कितनी उदासी है! शायद यह उदासी पिछले दो दिनों की है, पिछले दो दिनों से लंदन में ओले और बारिश का क़हर आ-जा रहा था। हमारे ऊपर, मौसम का कितना गहरा असर होता है! सारे कुछ स्याह में जितना भी दूर देखूँ बस उदासी बिछी हुई दिखती है। मैं बार-बार खुद से कहता रहा कि मैं दूर हूँ... बहुत दूर, पर बहुत दूर कितना दूर होता है?

अगले दिन अचानक लंदन का मौसम बदल गया था। चारों तरफ़ धूप का सुनहरापन बिखरा हुआ था। मैं Gloucester Road के Paul Café में बैठा हुआ बीते हुए दिनों के स्याह को लिखना चाह रहा था। सुंदर धूप में बैठकर पुराने बीते स्याह दिनों के बारे में लिखना इस धूप को और भी सुनहरा कर रहा था। पर सारा स्याह लिखते ही जब मैं उसे इस धूप में पढ़ने बैठता तो लगता कि ये सब कितना झूठ है! मैं बार-बार कुछ वाक्य लिखता, पढ़ता और मिटा देता। उलझे पड़े धागे-सा, भीगा पड़ा मेरा जीवन मेरे सामने चित्त पड़ा था... मैं उस सारे उलझे हुए का एक छोर तलाश रहा था कि कहीं तो वो सिरा मिले जहाँ से सुलझना संभव दिखे।

मेरी कॉफ़ी ठंडी हो चुकी थी। मैं सोच ही रहा था कि एक गर्म कॉफ़ी ऑर्डर करूँ, तभी एक वेट्रेस मेरा पिछला कॉफ़ी कप उठाने आई। मैंने उससे अगली कॉफ़ी की गुज़ारिश की। उसने 'हाँ' कहकर मेरा कप उठाया और तभी उसकी निगाह मेरे लैपटॉप पर पड़ी... "व्हॉट द हेक इस दिस?" मुझे उसके इस सवाल पर हँसी आ गई। मैंने कहा— हिंदी... मैं हिंदी लेखक हूँ। वह बग़ल वाली कुर्सी पर बैठकर हिंदी के अक्षरों को ध्यान से देखने लगी।

फिर उसने मुझसे कुछ टाइप करने को कहा। मैंने उसका नाम पूछा। कैथरीन, मैंने टाइप किया और वह हँसने लगी। उसने अपना फ़ोन निकालकर अपने नाम की तस्वीर ली और मुझसे कहा कि एक कॉफ़ी मेरी तरफ़ से... मैंने धन्यवाद दिया और वह हँसती हुई भीतर चली गई। मैं देर तक 'कैथरीन' नाम को देखता रहा। अब उस नाम में उसकी हँसी मौजूद थी।

मैंने एक कहानी गढ़ना शुरू की। मैं एक लड़की को जानता था जिसका नाम कैथरीन था। यह लिखते ही मुझे अपने छिछलेपन पर घिन आने लगी। मैं बहुत समय से इस बात से जूझ रहा था कि कब मैं किसी काल्पनिक कहानी को गढ़ रहा हूँ और कब मैं असल में जी रहा हूँ? मतलब लिखना और जीना, इन दोनों में अंतर होना चाहिए, वरना मैं कभी कुछ रियल जी नहीं पाऊँगा। कुछ भी सुंदर घटते ही मैं तुरंत उसे किसी कहानी के रूप में देखने लगता हूँ। इसमें उसी वक्त का जीना कहाँ है? जैसे मैं अभी ठीक इस वक्त कहाँ हूँ? मैं लंदन में बैठा क्या कर रहा हूँ? अकेलेपन से घने अकेलेपन की तरफ़ क्यों भागना चाहता हूँ? ऐसे सवाल जब मुझे घेरने लगते हैं तो मुझे अपने लिखे से अजीब-सी चिढ़ होने लगती है। मैंने तुरंत 'कैथरीन' नाम को मिटाया और लैपटॉप बंद कर दिया।

कैथरीन कॉफ़ी लेकर आई। कॉफ़ी रखते ही उसने पूछा, "आर यू ओके?" चेहरे की शिकन सारी भाषाओं में एक जैसी होती है। मैंने मुस्कुरा दिया जिसका अर्थ 'हाँ' और 'नहीं' दोनों था। मैं दूर था वरना अपने देश में मैं तुरंत कहता कि अरे मैं बिल्कुल ठीक हूँ। वहाँ सब छुपाकर रखना होता है। वहाँ ठीक न होने की कमज़ोरी छुपाने में लगातार मेहनत करनी पड़ती है। पर यहाँ मुझे लगा कि जो है, जैसा है, वैसा का वैसा ही जीना चाहिए। उसने कॉफ़ी रखी और मुझे अकेला छोड़कर चली गई। कुछ ही देर में मुझे मेरे मुस्कुराने से उलझन होने लगी। मुझे यहाँ भी 'I am fine' कह देना था।

बहुत वक्त हुआ था मुझे सिगरेट छोड़े हुए। पर पिछले दो दिनों के स्याहपन में मैंने सिगरेट खरीद ली थी। मैं कितना कमज़ोर हूँ, मैं जानता हूँ। कॉफ़ी के दो सिप लेने के बाद मेरा हाथ सिगरेट पर गया और मैंने एक सिगरेट निकालकर सामने रख दी। लाइटर कुछ टटोलने के बाद मिला। कुछ देर मैंने सिगरेट को सूँघा फिर धीरे से मुँह में लिया। मैं इंतज़ार कर रहा था कि कोई मुझे रोक दे, कोई विचार, कोई फ़ोन, कोई मैसेज लेकिन किसी ने नहीं रोका। कुछ देर बाद मैं सिगरेट जला चुका था। पहला कश लेते ही शरीर में चढ़ा हुआ तनाव थोड़ा ढीला पड़ा। पर कुछ ही देर में मेरा सिर घूमने लगा। मैं पूरी सिगरेट नहीं पी पाया।

कैथरीन एक चॉकलेट केक लेकर आई और उसने मेरे सामने रख दिया। "This is from my boyfriend, He told me to give it to you." यह कहकर वह मुस्कुराने लगी। मैंने 'थैंक यू' कहा और लेने से इनकार कर दिया, पर कैथरीन कहने लगी कि उसके बॉयफ़्रेंड को बुरा लगेगा। कुछ देर की मनोव्वल के बाद मैंने केक ले लिया। सुबह से सिर्फ़ कॉफ़ी पी थी, सो भूख बहुत थी। कुछ ही देर में मैंने केक चट कर दिया। मुझे लगा

कैथरीन कैफ़े के भीतर चली गई है, पर वह कैफ़े के दरवाज़े पर खड़े होकर मुझे खाता देख रही थी। कैथरीन के बाल सुनहरे थे, बिल्कुल वैसे, जैसी धूप लंदन की बिल्डिंगों पर चमक रही थी। उसका क्रोध ऊँचा था। शरीर से वह बास्केटबॉल या हॉकी की खिलाड़ी लगती थी। उसके ऊपर इस तरह की सौम्य मुस्कान बड़ी बचकानी लग रही थी। मुझे निकलना था। मैंने अपने पर्स से पैसे निकालकर उसे इशारे से कहा कि प्लीज़ ले लो। पर वह मुझे देखती रही, न उसने मना किया न ही हाँ कहा, बस मुस्कुराकर देखती रही। मैं थोड़ा असहज हो रहा था। कुछ देर में वह मुस्कुराती हुई भीतर चली गई। यह मुस्कुराहट कुछ दूसरी थी। इस मुस्कुराहट में 'मैं तुम्हें जानती हूँ' वाला भाव था।

मैंने दो कॉफ़ी और केक के पैसे टेबिल पर रखे और चोरों की तरह वहाँ से चल दिया।

कैथरीन की कहानी गढ़ने में अजीब-सी सिहरन पीछे पीठ में मैंने महसूस की थी। बिना किसी को जाने उसे ज़बरदस्ती खींचकर अपनी काल्पनिक दुनिया में लाना और उसे अपने बहुत टुच्चे से अनुभव से चीरना-फाड़ना कितना घातक है! मैं जानता हूँ एक कलाकार कभी भी अपनी सृजनात्मकता में पवित्र नहीं रह सकता। पर यह तो बिल्कुल वैसा ही है कि एक दिन उपवास रखकर भूख के बारे में लिखना।

मैं एक साल पहले, पहली बार लंदन आया था। कभी सोचा नहीं था कि एक साल के अंदर दूसरी बार यहाँ आना होगा। वापिस से उन्हीं जगहों पर जाना अजीब-सा अपनापन देता है, पर एक निरर्थकता भी गहरे में आकर बैठ जाती है। पिछली बार बहुत नाटक देखे थे, इस बार मैंने उस तरफ़ रुख नहीं किया। पर वापिस Tate Modern और नैशनल गैलरी में देर तक वॉन गॉग, राथको, पिकासो, मतीज़ के सामने बैठा रहा। कुछ आकृतियाँ, समर्पण का एक रौशनदान खोल देती हैं। इन्हें फिर से देखना हर बार पहली बार देखने जैसा लगता है। पार्कों में उन पेड़ों के पास भी गया जिनकी छाया तले पिछली गर्मियों में मैं सोया था। भटकते हुए नैचुरल हिस्ट्री म्यूज़ियम गया। वहाँ वाइल्ड लाइफ़ फ़ोटोग्राफी की प्रदर्शनी लगी थी जिसे देखकर मन प्रसन्न हो गया। फिर स्टेनली क्यूब्रिक की प्रदर्शनी में हतप्रभ-सा खड़ा रहा। कितना श्रम जाता है एक खूबसूरत सिनेमा बनाने में... उनका विज़न, उनकी शिद्दत पुरानी स्क्रिप्ट पर लिखे उनके नोट्स पढ़कर पता चलती है। कुछ देर बाद बाहर आया तो सिर भारी था और पैर कोना तलाश रहे थे। सड़क के दूसरी तरफ़ एक छोटा कैफ़े दिखा। कैफ़े के दिखते ही मुझे कैथरीन का मना करता हुआ चेहरा नज़र आया। मैं कैफ़े में नहीं गया। सड़क के कोने-कोने चलता रहा। पैर खुद-ब-खुद एक बार में चले गए, मैंने बीयर ऑर्डर की और अपना जैकेट उतार दिया। अकेले चल रही यात्राओं की एक बुनियादी तकलीफ़ यह है कि सन्नाटे में कोई भी आहट होती है तो उसकी गूँज बहुत देर तक शरीर में बनी रहती है। दूर से देखने पर इस तरह की यायावरी बहुत आकर्षक लगती है, पर भीतर एक पूरा प्रदूषित शहर हरकत कर रहा होता है। भीड़ होती है बहुत, और उस भीड़ को छटने में बहुत वक्रत लगता है। पर एक ग़लत मोड़ पूरी यात्रा को किसी भूल-भुलैया में धकेल सकता है, जहाँ से वापसी असंभव है।

पूरा दिन हवा में तैरता-सा बीत गया। कब चलता रहा, कब रुका, कब एक पब में जाकर ढेर हो गया पता नहीं चला। एक अजीब-सा अजनबीपन बना रहता है हर जगह। मैं बंबई में रहता हूँ, पर वहाँ भी कुछ इस तरह मँडराता रहता हूँ कि यह तो एक पड़ाव-सा है। असल जगह जाना तो अभी बचा है। जिससे मिलता हूँ लगता है कि अभी तो समय कट रहा है, पर असल में मिलना तो अभी कहीं दूर है। एक कड़ी है, जिससे अभी और यहीं बँधा रहता है, वह गायब है। सब कुछ एक समय ढीला, बिखरा हुआ लगता है तो कभी एक खिंचाव, तनाव बना रहता है। और यह सारा कुछ कहीं इतने भीतर रेंग रहा होता है कि बाहर चेहरे पर इसके कोई चिह्न नज़र नहीं आते। जब कैथरीन ने मुझे कैफ़े के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा था तो लगा कि वह रियल नहीं है। वह काल्पनिक है या वह मेरे भीतर रेंग रहे कृत्रिम सूक्ष्म जीवों का प्रतिनिधित्व कर रही है। उसका मुझसे कोई लेना-देना नहीं है। इस बीच मैं कॉफ़ी लेने के बहाने पॉल कैफ़े गया और मुझे देखकर इतनी तसल्ली हुई कि वह वहाँ नहीं थी जबकि मेरी कॉफ़ी पीने की कोई इच्छा नहीं थी। मैं उसे ही देखने गया था।

देर रात मैंने अपना फ़ोन निकाला और पेरिस में चार दिन के लिए एयर बीएनबी के माध्यम से एक कमरा बुक कर दिया। फिर दो दिन बाद की लंदन से पेरिस यूरो ट्रेन की टिकिट भी बुक कर दी।

अगले दिन मैंने खुद को पॉल कैफ़े में पाया। कैथरीन ने मुझे देखकर ऐसे अनदेखा किया मानो वह मुझे जानती ही नहीं हो। मैं कॉफ़ी लेकर बाहर आ गया। एक सिगरेट जलाई और अपना लैपटॉप खोल लिया। देखा रात नशे में कुछ अल्लम-बल्लम लिखा हुआ था। उसके कुछ वाक्य पढ़े और हँसी आने लगी। सारा पुराना लिखा ख़त्म करके फिर से नई शुरुआत करने का फ़ैसला किया। कितना कमाल है ये मानो आप शतरंज खेल रहे हैं और आपका विरोधी आपका खुद का जीवन है जो बहुत अच्छा खेलता है। हर बार खेल के मध्य में आपको अपनी हार दिखने लगती है और आप पूरे खेल को बिगाड़कर अपने जीवन से कहते हैं कि चलो यार फिर से शुरू करते हैं। पुराना मैं मिटा चुका था, सामने कोरा पन्ना था। शतरंज का नया खेल बिछ गया था। मैंने सबसे पहला शब्द लिखा 'कैथरीन' और बहुत देर तक सब कुछ उस नाम के इर्द-गिर्द ही रुका रहा।

मैं और कैथरीन रात एक पब में मिले। वह लाल ड्रेस पहने हुए थी। वह जींस और टी-शर्ट में ज़्यादा अच्छी लगती है। उसके आते ही मैंने उसकी रेड ड्रेस की तारीफ़ की पर कुछ ही देर में मुझे मेरा झूठ खटकने लगा और मैंने कहा, "तुम जींस और टी-शर्ट में ज़्यादा आकर्षक लगती हो।" उसने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। हम दोनों ने बीयर ऑर्डर की। पब में बहुत भीड़ थी सो हम अपनी बीयर लेकर बाहर आ गए।

"मुझे लगता था कि मुझ पर लाल रंग बहुत अच्छा लगता है।" यह कहकर वह अचंभित हँसी हँसने लगी।

“शायद मैंने पहली बार तुम्हें जींस में देखा इसलिए।” मैं खिसिया गया।

“क्या लिख रहे हो आजकल?”

“तुम्हें।” वह मुझे देखती रही मैंने आगे जोड़ा, “मतलब कोशिश कर रहा हूँ।”

“मुझे? ...झूठ।”

“मैं झूठ नहीं बोलना चाहता हूँ, इसलिए जो है वह कह दे रहा हूँ।”

“कठिन है, झूठ नहीं बोलना।”

“लगातार सच बोलना मुझे ज़्यादा कठिन लगता है।”

“पर उस सच का फ़ायदा क्या जो सामने वाले की मुस्कुराहट छीन ले?”

“आई एम सॉरी!” मैंने कहा।

“अरे मैं अपनी बात नहीं कर रही थी। सिगरेट है न तुम्हारे पास!”

“हाँ!”

मैंने उसे सिगरेट दी। कुछ लोग होते हैं जो कुछ इस क़दर सिगरेट पीते हैं कि लगता है इससे रोमांटिक और कुछ नहीं है। कैथरीन ने पहला लंबा कश लिया और मेरे मुँह से आह निकल गई। मैंने तुरंत सिगरेट जला ली। उसके बाल हल्की हवा में उड़ रहे थे। लाल ड्रेस में उसे थोड़ी ठंड लग रही थी। उसकी बाँहों पर रोंगटे खड़े होते और ओझल हो जाते। हाई हील में उसका क़द मुझसे कहीं ज़्यादा था।

“पैसे क्यों दिए तुमने कॉफ़ी के?” उसने अचानक पूछ लिया।

“पता नहीं... बाद में मैं भी सोचता रहा कि क्यों किया मैंने ऐसा?”

“ये देखो मैंने अपने फ़ोन का स्क्रीन सेवर बनाया हुआ है हिंदी में मेरा नाम।”

मैं कैथरीन का फ़ोन देख रहा था तभी उसके बॉयफ़्रेंड का मैसेज आया, ‘वेयर आर यू?’ उसने फ़ोन मेरे सामने से हटा लिया।

इसके बाद का सारा कुछ किसी सुंदर सपने-सा था। हम दोनों बहुत पी चुके थे। लंदन की सड़कों पर बहुत देर तक हम उछलते-कूदते रहे। दीवार कूदकर एक पार्क में गए जहाँ पहली बार मैंने कैथरीन को चूमा। हम बहुत देर तक घास पर लेटकर तारों को देखते रहे। उसे बहुत ठंड लग रही थी। वह मेरे जैकेट से पूरे वक्रत चिपकी रही। इस बीच उसने अपनी माँ के बारे में बहुत देर तक बातें कीं। उसकी माँ अकेले रहती है। पिताजी ने कैथरीन के बचपन में ही एक जवान लड़की के चक्कर में उसकी माँ को छोड़ दिया था। बीच में इंटरनेट पर एक आदमी से प्रेम हुआ, पर अंत में उसने बहुत-से पैसे कैथरीन की माँ से ट्रांसफ़र करवाए और ग़ायब हो गया। जब ये बात कैथरीन को पता चली तो उसने एक साल उस एकाउंट को खोजा जो किसी अरब मुल्क का निकला। जहाँ असल में इतने पैसे ट्रांसफ़र करने में आपके ऊपर केस लग सकता है। कैथरीन को लगता है कि उसकी माँ बहुत कमज़ोर है, जिसके कारण वह हमेशा किसी-न-किसी समस्या में फँस जाती है। वह दो-तीन काम करती है, ताकि वह अपनी माँ को लगातार कुछ पैसे भेजती रहे।

अचानक एक ब्रिटिश खूबसूरत लड़की जो पहले किसी रोमांटिक उपन्यास का हिस्सा लग रही थी, एक आम लड़की में तब्दील होने लगी थी, जिसकी अपनी समस्याएँ हैं, जीवन है, संघर्ष है। मुझे लगा कि मैं इससे अब आराम से बात कर सकता हूँ। इसके ठीक पहले मुझे लग रहा था कि मैं किसी फ़िल्म का हिस्सा हूँ, जिसमें एक एक्स्ट्रा को फ़िल्म की नायिका से रोमांस करने का मौका मिला है। कैथरीन के बॉयफ्रेंड के लगातार बीच-बीच में मैसेज आ रहे थे जिन्हें वह देखकर फ़ोन पलट देती। हमने उसके बारे में कोई बात करना उचित नहीं समझा। कुछ देर बाद मैंने देखा कैथरीन ने अपना फ़ोन ऑफ़ कर दिया है। कुछ ही देर में हमारे पैर खुद-ब-खुद होटल की तरफ़ चलने लगे।

अगले दिन मैं आदतन जल्दी उठ चुका था। मैंने पुराने हिंदी गाने अपने मोबाइल पर लगाए हुए थे। अपनी कॉफ़ी लिए मैं कैथरीन को सुबह सोता हुआ देख रहा था। उसका आधे से ज़्यादा शरीर रज़ाई के बाहर था। प्रेम की कल्पना में मैंने कई बार उसे छुआ है... ठीक प्रेम को नहीं... उस प्रेम के रोओं को... त्वचा तक पहुँचने में अभी भी एक झिझक है। जैसे मृत्यु की इच्छा में हर बार मरने के लिए किसी ऊँचे पहाड़ पर पहुँच जाता हूँ... पर कूदने के ठीक पहले मृत्यु को लिखना शुरू कर देता हूँ। उसकी आँखें मुस्कुराते हुए खुलीं, मैं उसके लिए कॉफ़ी बनाने लगा। जैसे ही उसने अपना फ़ोन ऑन किया तो मैसेजों की बाढ़-सी आई और वह चौंककर खड़ी हो गई। मुझे चुप रहने का इशारा किया और फ़ोन पर फ्रेंच में किसी से बात करने लगी। कुछ ही देर में उसके संवाद बहस में बदल गए और उसने फ़ोन काट दिया। फिर वह मैसेज करती रही और अंत में वापिस फ़ोन ऑफ़ कर दिया। उसकी कॉफ़ी ठंडी हो चुकी थी सो मैंने उसके लिए दूसरी कॉफ़ी बनाई। उसकी आँखों में पानी था और माथे पर बल पड़ गए थे। मैंने सोचा, शायद उसकी कमज़ोर माँ कुछ इसी तरह दिखती होगी। “आई विल जस्ट टेक ए शॉवर” कहकर वह बाथरूम में चली गई। जब वह बाहर आई तो कल रात वाली कैथरीन थी—मुस्कुराती हुई। उसने मुझसे एक टी-शर्ट माँगी और मेरी बनाई हुई कॉफ़ी को नज़रअंदाज़ करके खुद अपनी कॉफ़ी बनाने लगी। मैं जैसे ही उसे टी-शर्ट पहनाने लगा, वह मेरे गले लग गई। हम दोनों ने एक-दूसरे को कसकर पकड़ा हुआ था। मुझे लगा कि हम एक-दूसरे को बचपन से जानते हैं... मैं इस वक़्त इतना ज़्यादा कैथरीन हूँ कि अगर कोई उसका नाम पुकारे तो मैं पलटूँगा। मैं उसे छोड़ना नहीं चाह रहा था और पकड़े रहने की हिंसा मेरा जिस्म खो चुका था।

“मानव का मतलब क्या होता है?” कैथरीन ने फुसफुसाते हुए पूछा। वो असल में इन सबका मतलब पूछना चाह रही थी।

“Human...” मैंने कहा।

“बस...”

उसकी निराशा पर मुझे हँसी आ गई। हम बिस्तर में पड़े हुए एक-दूसरे के चेहरे के उतार-चढ़ाव पढ़ रहे थे। मैंने उसके नाम का मतलब नहीं पूछा... मैं इस वक़्त कुछ भी जानना नहीं चाह रहा था। मैंने उससे कहा कि तुम कभी इंडिया आना। मैं तुम्हें पहाड़ों पर

ले जाऊँगा, गहरे जंगलों से होते हुए जब तुम पहली बार हिमालय देखोगी और उस वक़्त जैसा महसूस करोगी... मैं तुम्हें देखते हुए ठीक अभी वैसा महसूस कर रहा हूँ।

कितना अच्छा होता है
एक-दूसरे को बिना जाने
पास-पास होना
और उस संगीत को सुनना
जो धमनियों में बजता है,
उन रंगों में नहा जाना
जो बहुत गहरे चढ़ते-उतरते हैं।
-सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

पूरा दिन जहाँ-तहाँ लंदन में घूमते हुए मुझे लगा था कि मैं अपने कॉलेज के दिनों में पहुँच गया हूँ। हर कुछ देर में हम दौड़ने लगते, जो पब अच्छा दिखता उसमें घुस जाते, छोटी बातों पर बहुत देर तक हँसते रहते। उसका 'एवेंजर' फ़िल्म देखने का बड़ा मन था सो हम फ़ोर-डी में 'एवेंजर' देखने चल दिए। यह मेरा फ़ोर-डी का पहला अनुभव था सो मैं एक बच्चे-सा उछल रहा था।

रात बहुत हो चुकी थी। मैं लड़खड़ाते हुए कैथरीन को घर तक छोड़ने गया। रास्ते में मैंने उससे कहा कि मेरी कल सुबह पेरिस के लिए ट्रेन है, वह जहाँ थी वहीं रुक गई। उसने मुझे ऐसे देखा मानो मैंने उससे कोई बहुत बड़ा सच छुपाकर रखा था। मैं उसके क़रीब गया, उसका चेहरा छुआ और कहा, "ये बस यहीं तक था।" उसने मुस्कुराकर अपना चेहरा 'न' में हिला दिया।

हम दोनों वापिस मेरे होटल के कमरे में आ गए। रास्ते से हमने उसकी पसंदीदा वाइन उठा ली थी। अपनी पैकिंग के बाद हम सुबह तक वाइन पीते रहे। उसने पहली बार अपने बॉयफ़्रेंड के बारे में बात की। वह फ़्रेंच आदमी है जिसे वह छोड़ना चाहती है, पर उसे उसकी आदत पड़ी हुई है। उन्होंने कई बार अलग हो जाने का फ़ैसला किया पर हर कमज़ोर क्षण में कैथरीन वापिस उसके पास चली जाती है। कल जब उसने फ़ोन नहीं उठाया था तो उसके बॉयफ़्रेंड ने उसकी माँ को कई फ़ोन लगा दिए थे, इसलिए कैथरीन उस पर बिगड़ गई थी। सारा कुछ कह लेने के बाद हम कुछ देर तक चुप रहे, उसने कहा कि हिंदी गाने लगा दो, मैं उन गानों को फिर से सुनना चाहती हूँ... और मैं मुस्कुरा दिया।

मैं हमेशा से किसी भी यात्रा में भाग-दौड़ पसंद नहीं करता हूँ, इसलिए मैं वक़्त से पहले एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, बस स्टॉप पहुँच चुका होता हूँ। सुबह मेरी पेरिस की ट्रेन के लिए मैं लेट हो रहा था और कैथरीन अपना वक़्त ले रही थी। मैं उसके साथ और वक़्त भी बिताना चाहता था और अपने वक़्त पर स्टेशन भी पहुँचना चाहता था। इन दो बिंदुओं के

बीच में एक अजीब-सा नृत्य करता हुआ दिख रहा था। जब हम स्टेशन पहुँचे तो हम देर तक एक-दूसरे का हाथ पकड़े रहे। मैं बॉय कहने ही वाला था कि उसने मेरे मुँह पर हाथ रख दिया और कहा, “ये यहीं तक नहीं है और अगर ये यहीं तक है तो मुझे ये बात जाननी नहीं है।” वह पलटकर चल दी। मैं कुछ भी नहीं कह पाया। मैं देर तक उसे जाता हुआ देखता रहा, पर वह अंत तक पलटी नहीं। उसकी चाल में सख्ती थी और उसका सिर झुका हुआ था। वह मुझे ऐसी कविता लग रही थी जो आप हमेशा से लिखना चाह रहे थे। वह कई रात ठीक सोने से पहले आपके बहुत करीब भी आई थी, पर आप हमेशा उसका लिखना टालते रहे। फिर एक सुबह जब आप उसे लिखने बैठे तब तक वह जा चुकी थी।

अंत में मैं पेरिस की तरफ़ जाती हुई ट्रेन में बैठा था। Train to Paris... मुझे नहीं पता कि ये वाक्य मैंने कितनी बार सुना था, बहुत-सी फ़िल्मों में... किताबों में पढ़ा था... शायद यही कारण है कि मैं हमेशा पेरिस में ट्रेन से घुसना चाहता था। मेरी नींद पूरी नहीं हुई थी, आँखें जल रही थीं, पर पेरिस पहुँचने वाला हूँ इस बात की गुदगुदी मैं पूरे शरीर में महसूस कर सकता था। मेरी यात्रा असल में आज से शुरू हुई थी। मैंने लैपटॉप खोला और पहला वाक्य लिखा ‘कितनी दूर चले जाने पर बहुत दूर होता है?’

मैं एक क्षण भी ट्रेन में नहीं सोया। मैं लिखता रहा।

बेनुआ पेरिस में रहता है और ख़ूब थिएटर करता है। लिंकन सेंटर, न्यूयॉर्क में दो हज़ार ग्यारह में मैं और बेनुआ करीब एक महीना साथ रहे थे। हमारी दोस्ती बहुत गहरी हो गई थी। उन दिनों जितना भी पैसा मुझे मुआवज़े के तौर पर लिंकन सेंटर से मिलता था, मैं बचा लेता, क्योंकि वापिस आकर घर का किराया देना था। उन दिनों ग़रीबी का प्रेत साथ चिपककर रहता था। वह बेनुआ ही था जो कभी मुझे बीयर पिला दिया करता तो कभी किसी अच्छे रेस्त्रॉ में नाश्ता करवा देता। यहाँ तक कि उसने मेरे जूतों की हालत देखकर एक जोड़ी नए जूते भी दिलवाए थे। फ़ेसबुक के ज़रिए हुई हमारी दोस्ती की आँच अभी भी बरकरार थी। मैंने बेनुआ को मैसेज किया कि मैं पेरिस पहुँच रहा हूँ। उसने तपाक से जवाब दिया कि मैं इंतज़ार कर रहा हूँ।

मैं दोपहर में पेरिस पहुँचा। ट्रेन से उतरकर गूगल मैप हाथों में लिए मैं मेट्रो की तरफ़ बढ़ा। Pigalle स्टेशन की तरफ़ भागती मेट्रो में मैं लोगों के चेहरे देख रहा था जो बदल गए थे। सब तरफ़ फ़्रेंच सुनाई दे रही थी। कभी-कभी अचानक जर्मन भाषा के वाक्य भी कानों में पड़ जाते। अभी तक सारा कुछ अँधेरे में था—अंडरग्राउंड। ट्रेन Pigalle स्टेशन पर रुकी। व्यस्त भीड़ के बीच मैं अपना सामान घसीटता हुआ सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। भीतर की गुदगुदी अपने चरम पर थी। चलते-चलते मेरी दबी हुई हँसी की आवाज़ मैं खुद सुन सकता था। जब बाहर आया तो एक गहरी साँस ली। मैं पहली बार पेरिस में था।

मैंने अपना सामान रखा और अपनी बिल्डिंग के दरवाज़े के सामने खड़ा हो गया। दाएँ देखा जहाँ पेरिस फैला पड़ा था और बाईं तरफ़ एक छोटी गली ऊपर की तरफ़ जा

रही थी। मैं बाएँ मुड़ गया। छोटी गली से ऊपर की तरफ़ चलते हुए मुझे लगा कि असल में पेरिस के लिए मेरे भीतर उतना उत्साह नहीं है जितना उत्साह मुझे मेरी यात्रा शुरू होने का है, लिखने का है, बेनुआ से मिलने का है। मेरे पास पूरा एक महीना था। पेरिस में चार दिन रहने के बाद मैं कहाँ जाऊँगा मुझे नहीं पता था।

मैंने बेनुआ को Montmartre के एक कैफ़े में बुला लिया। आठ साल बाद उससे मिलूँगा। मैंने अपने लिए एक कॉफ़ी और Croissant ऑर्डर किया। मैं बेनुआ के बारे में ही लिख रहा था कि सड़क की उस तरफ़ मैंने उसे खड़ा देखा। वह सड़क के दूसरी तरफ़ हरी बत्ती के लाल होने का इंतज़ार कर रहा था। हम एक-दूसरे को देखकर हँस रहे थे। अंत में उससे रहा नहीं गया और वह हरी बत्ती में ही भागता हुआ इस तरफ़ आया और हम गले लग गए। एक-दूसरे को देखकर हम बहुत देर हँसते रहे। कुछ भावनाएँ होती हैं जिन्हें आप शब्द नहीं दे सकते। हमारे बीच भाषा की दिक्कत थी, इतने सालों का कोरापन था, पर आँखें एक-दूसरे को एक पुराने दोस्त की तरह देख रही थीं। मैंने कहा, “देखा, मैंने कहा था कि मैं एक दिन पेरिस आऊँगा तुमसे मिलने!” बेनुआ ने ‘हाँ’ कहा और फिर अपनी टूटी-फूटी अँग्रेज़ी में मुझसे इन बीते आठ सालों का हिसाब माँगने लगा। कुछ बातें उसे मैंने बताई, कुछ मैंने उससे पूछा। इन आठ सालों में कितना कुछ बदल गया था, हम कहाँ से शुरू करें, यह समझ नहीं पा रहे थे। न्यूयॉर्क की सड़कों पर देर रात नशे में हमने जाने कितनी बार अपने सपनों की बातें की थीं। हम दोनों को कितना कुछ करना था। मुझे अचानक वे सारी बातें याद हो आईं। मैं उत्साह में बेनुआ से उन सपनों के बारे में पूछने ही वाला था कि चुप हो गया। मुझे लगा कि यह सपनों का हिसाब जितना मुझे याद है, उतना उसे भी याद होगा ही! कई बार पुराने सपनों का ज़िक्र उदासी भर देता है।

बेनुआ एक स्कूल में एक्टिंग पढ़ाता है, जिससे हर महीने अच्छे-खासे पैसे आ जाते हैं। वह दो नाटक कर रहा है और एक नए नाटक पर काम करना उसने शुरू किया है। फिर उसने अपने कुछ स्याह दिनों की बात की। उसका तलाक़ हो चुका है। वह अपने एक बच्चे के साथ अलग रहता है। बीच-बीच में वह फ्रेंच बोलने लगता, फिर खुद को ठीक करके वापिस टूटी-फूटी अँग्रेज़ी पर उतर आता। हम दोनों को लगा कि हमें बीयर पीनी चाहिए, उससे शायद हम दोनों की अँग्रेज़ी ज़्यादा अच्छी तरह निकलेगी। हम कुछ बीयर पीकर पेरिस की सड़कों पर चलने लगे।

वह हर दूसरी बिल्डिंग को देखकर उसकी हिस्ट्री बताने लगता। मैं अपने पूरे आश्चर्य में उस बिल्डिंग को ताकता रहता, और मज़ेदार बात है कि वह जितने भी नाम लेता हमने उन नामों को अपने शहरों में पढ़ा है, फ़िल्मों में देखा है। कभी-कभी लगता कि मैं बहुत पहले यहाँ आ चुका था।

हम राइट बैंक से लेफ़्ट बैंक तक बहुत बड़ा हिस्सा पैदल नाप चुके थे। बेनुआ मुझे एक ट्रेडिशनल फ्रेंच रेस्त्राँ में ले गया। हमने लोकल वाइन मँगाई और प्याज़ का सूप। बेनुआ ने बताया कि असल में हम फ्रेंच लोगों ने दोस्तोव्स्की को अभी-अभी डिस्कवर किया है।

हमें लगता था कि दोस्तोव्स्की एक रोमांटिक लेखक है, क्योंकि यहाँ सबने उन्हें बहुत ही काव्यात्मक शैली में ट्रांसलेट किया था। फिर क़रीब बीस साल पहले आंद्रे मार्कोविच (Andre MarkoWich) ने दोस्तोव्स्की को जस का तस ट्रांसलेट किया और हमको सबको लगा कि ये क्या है? मुझे इस बात पर बहुत हँसी आई। मतलब फ्रेंच लोगों ने बीस साल पहले असल दोस्तोव्स्की पढ़ा है? मैंने इच्छा जताई कि मैं कुछ नए क्रिस्म के नाटक देखना चाहता हूँ। हमने दो नाटकों के प्लान बनाए। इस बीच मैंने फ़ोन देखा तो मेरे इंस्टाग्राम पर एक मैसेज था, जिसमें फ्रेंच में कुछ लिखा था। मैंने फ़ोन बेनुआ को पढ़ने दिया और पूछा कि क्या लिखा है? वह पढ़ते ही हँसने लगा। मैंने पूछा क्या हुआ? उसने हँसते-हँसते ट्रांसलेट किया, “तुम मेरी गर्लफ्रेंड से मिले होटल में, मैं जानता हूँ। क्या किया तुमने? तुम्हें पता है कि उसका एक बॉयफ्रेंड है? क्या इंडियन मीडिया यह जानता है कि तुम यूके आकर क्या करते हो? क्या यूके मीडिया जानता है? तुम्हारा नंबर क्या है?” बेनुआ हँस रहा था और मैं स्तब्ध था। मैंने तुरंत उस मैसेज का स्क्रीनशॉट लिया और कैथरीन को भेजा, और उस फ्रेंच आदमी को डर के मारे ब्लॉक कर दिया। मैंने बेनुआ को सारी बात बताई पर उसकी हँसी कम नहीं हुई। कुछ देर में कैथरीन का मैसेज आया, “सॉरी, आई विल हैंडिल दिस राइट नाऊ।” मैंने उसका मैसेज पढ़कर मिटा दिया। मैं कैथरीन को ऐसे याद नहीं रखना चाह रहा था। लड़खड़ाते क़दमों से बेनुआ ने मुझे मेरे रूम तक छोड़ा और हमने एक-दूसरे को अलविदा कहा। मेरा चित्त शांत नहीं था सो मैं अपने रूम नहीं गया। मैं अपनी गली के आगे बढ़ गया। देखा Moulin Rouge के बाहर बहुत भीड़ दिखी। मैंने पता किया कि शो पाँच मिनट में शुरू होने वाला है। बिना सोचे मैं भीतर घुस गया। शो देखते हुए मैं पूरी एक वाइन की बोतल गटक गया। बीच में कैथरीन को मैसेज किया, “मुझे तुम्हारे बॉयफ्रेंड की बात का बुरा नहीं लगा, अपना खयाल रखना।” उसका कोई मैसेज नहीं आया। Moulin Rouge बहुत खराब था, आधे घंटे के शो के बाद मुझसे वहाँ बैठते नहीं बना। मैं लड़खड़ाते हुए वापिस आया और अपने बिस्तर पर पसर गया।

सुबह आँख बहुत देर से खुली। कुछ वक़्त के बाद याद आया कि मैं पेरिस में हूँ। मैं सोचने लगा कि मैं कौन-सा पेरिस देखना चाहता हूँ? मैंने टाइप किया वॉन गॉग का पेरिस तो गूगल पर डाइरेक्शन आया कि वह कहाँ रहते थे। मैंने देखा वह पाँच मिनट की दूरी पर पीछे की तरफ़ रहते थे। मुझे आश्चर्य हुआ। फिर मैंने पिकासो टाइप किया, वह भी पाँच मिनट की दूरी पर पीछे की तरफ़ रहा करते थे। फिर मैंने कामू टाइप किया और मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि वह भी पाँच मिनट की दूरी पर पीछे की तरफ़ रहे थे। मैंने सोचा कि यह पीछे की तरफ़ है क्या? जिस जगह से मैं बाएँ मुड़ गया था पहले दिन, नक्शा मुझे उसी तरफ़ जाने को कह रहा था। उसी तंग गली से ऊपर की तरफ़ जाते हुए मैंने देखा कि मैं इन सारी जगहों से पहले दिन ही गुज़रा था। मेरी आँखें फटी रह गईं, जब मैं उस जगह खड़ा हुआ जहाँ पिकासो ने पहली बार Cubism Montmartre के एक घर में

डिस्कवर किया था। थोड़ी ही दूरी पर वॉन गॉग रहते थे, 54 नंबर बिल्डिंग में... बाहर उनके और थियो के संदर्भ में फ्रेंच में कुछ लिखा हुआ था। 54 नंबर बिल्डिंग के ठीक सामने ब्रेड की दुकान थी। तभी बारिश होने लगी और मैं भागता हुआ एक कैफ़े में चला गया। मन एकदम उदास हो गया। मैं उदास नहीं था, मुझे भोर याद आ रही थी, इमली के दो पेड़, विचित्र कहानियों से भरा हुआ कुआँ, घर की दीवार पर सुबह का रेंगते हुए आना, उसकी गोदी, उसके बालों की खुशबू, कैथरीन, अपना अधूरा लिखा हुआ और भूख... बहुत देर तक मुझे भूख याद आती रही। मैं खाना चाहता था—बहुत सारी ब्रेड, सूखी ब्रेड।

फिर उन्हीं जगहों में से एक जगह अल्बेयर कामू ने Stranger (आउटसाइडर), मेरी सबसे पसंदीदा किताब, पूरी की थी। मैंने उनकी डायरी भी पढ़ी थी। उन दिनों की उनकी मनःस्थिति बहुत अजीब थी।

कामू ने Stranger लिखने के दौरान अपनी डायरी में लिखा था :

“What does this sudden awakening mean, in this dark room, with the sounds of a city that has suddenly become strange? And everything is strange to me, everything, without a single person who belongs to me, with no place to heal this wound. What am I doing here, what is the point of these smiles and gestures? I am not from here-not from anywhere else either. And the world has become merely an unknown landscape where my heart can lean on nothing.”

फिर वह एक महत्वपूर्ण वाक्य लिखते हैं : “A stranger, who can know what this word means.”

लेखन कितना सघन काम है! कहीं भी छुपने की कोई जगह नहीं मिलती, पूरी यात्रा एक कमज़ोर क्षण से दूसरे कमज़ोर क्षण तक पहुँचने की एक अंधी छलांग है। हर बार पैर चूक जाते हैं। फिर देर तक बीच हवा में हम अपना आधा लिखा हुआ, अपनी अधूरी जिंदगी की रस्सी पर लटके हुए ताकते रहते हैं।

मैं बारिश में भीगते हुए उन्हीं गलियों में देर तक रेंगता रहा। वहाँ से जाकर भव्य पेरिस को देखने का मन ही नहीं किया। ठंड बढ़ गई थी। काँपते हुए एक कोने में खड़े होकर मैंने सिगरेट जला ली। मुझे लगा कि यह समय अलग है। मैं बहुत सालों पीछे की किसी गली में छुपा हुआ खड़ा हूँ। इन पत्थरों की सँकरी गलियों से अभी कामू, वॉन गॉग, या पिकासो निकलकर आएँगे। तभी बीच बारिश में धूप निकल आई और सारा कुछ सुनहरा हो गया। इस वक़्त सारा कुछ धुला हुआ-सा सामने तैर रहा था। यह था मेरा पेरिस।

अगले दो दिन पेरिस में बहुत व्यस्त बीते। बीच में कई बार लिखने की कोशिश की, पर कुछ वाक्यों के बाद मन भटक जाता। पेरिस बहुत ज़्यादा विचलित कर रहा था। सो

मैंने अपने लिखे को कुछ वक्त के लिए दूर रखा और सिर्फ पेरिस की गलियों में भटकता रहा। सार्त्र और सिमोन की क़ब्र पर गया। बहुत देर चुप शांत बैठा रहा। बैकेट की क़ब्र ढूँढ़ने में बहुत वक्त लगा। एकदम सादी क़ब्र थी उनकी, जिन्होंने उन्हें पढ़ा है खासकर उनके अंत के नाटकों को, उनके लिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। वहाँ मोपासाँ और मरिटे दुरास की भी क़ब्रें थीं। सिमोन और सार्त्र की क़ब्र को लोगों ने चुंबनों से भर रखा था और अपने मेट्रो के टिकट वहाँ छोड़ गए थे। दुरास की क़ब्र पर बहुत सारे पेन रखे हुए थे और लड़कियाँ अपने हेयर बैंड छोड़ गई थीं।

इसके बाद मैं उन सारे कैफ़ेज़ में गया जिनमें सारे लेखक और पेंटर्स बैठा करते थे। इस वजह से क़रीब दस से बारह कॉफ़ी मैं रोज़ पी जाता था। दो प्रायोगिक नाटक देखे बेनुआ के साथ और Comédie Française में चल रहे एक सफल प्रयोग को भी देखने का मौक़ा मिला—Les Damnés. भाषा के कारण मैं बहुत मुश्किल से चीज़ें समझ पा रहा था, पर पेरिस में प्रायोगिक और कमर्शियल दोनों किस्म के नाटकों को देखने का अनुभव मज़ेदार था।

बेनुआ के कहने पर मैं उसके स्कूल के बच्चों से मिलने गया। उनके पास भारतीय थिएटर और फ़िल्मों को लेकर बहुत सवाल थे। मैं जवाब देता रहा। अंत में एक लड़का, जो पूरे वक्त शांत था उसने पूछा कि अगर आप अपने बचपन से अभी मिलते तो उसे क्या सलाह देते? मैं कुछ देर चुप रहा, फिर जवाब दिया, “मैं उससे कहूँगा कि It dosen't matter!”

जितना भी वक्त बचता, वह सारा म्यूज़ियमों में बीतता। मैं अब पेरिस छोड़ना चाह रहा था, पर कहाँ जाऊँगा... यह अभी तक तय नहीं किया था। बेनुआ ज़िद पर अड़ा था कि एक दिन और रुक जाओ, पर मुझे पेरिस से थकान हो गई थी और मैं लिखना चाह रहा था। बेनुआ और हम डिनर पर इन बातों पर बहस कर ही रहे थे कि तभी उसकी गर्लफ़्रेंड आई। मैंने उसकी गर्लफ़्रेंड लूसी को अपनी सारी मुश्किलें बताईं। लूसी का खुद का थिएटर ग्रुप है जिसमें वे नए-नए प्रयोग करती है और उन प्रयोगों के लिए पैसे एकत्र करना उसे हर बार थका देता है। मैंने उससे कहा कि आप एकदम इस वक्त इंडियन साउंड कर रही हैं। लूसी ने तभी मुझे Chalon-sur-Saône जाने का सुझाव दिया। मैंने गूगल पर देखा कि एक छोटा-सा फ़्रेंच गाँव है। मुझे ठीक लगा। मैं डिनर से यह कहकर उठा कि एक दिन और पेरिस में रहूँगा, पर मुझे पता था कि यह मेरे लिए अब संभव नहीं है।

देर रात अपनी बीयर पर अकेले बैठे हुए मैंने Chalon-sur-Saône में रूम बुक किया और अगली सुबह का ट्रेन रिज़र्वेशन।

मैंने पेरिस लिखने के कारण छोड़ दिया, पर एक दूसरा कारण यह भी था कि मैं बड़े शहरों से उकता चुका था और असल में हम कितना कुछ देख सकते हैं! मुझे नहीं पता, एक वक्त के बाद म्यूज़ियम में सारी बड़ी पेंटिंग और स्कल्पचर का मेरे ऊपर कोई असर नहीं हो रहा था। पूरा पेरिस अपने-आपमें अतीत के अंधे प्रेत की तरह था, जितना उसे

जानो वह उतना ही बचा रह जाता था। मैं भीतर से भटकना चाहता था, गुम हो जाना चाहता था। किसी तरह उन जगहों पर चित्त पड़े रहना चाह रहा था, जहाँ से मैं खुद को न देख पाऊँ। जैसे ही Chalon-sur-Saône की तरफ़ ट्रेन खाना हुई, मैंने अपना लैपटॉप खोल लिया और अपने आधे लिखे को देर तक ताकता रहा।

ट्रेन में कैथरीन का मैसेज आया कि क्या मैं फ़्रांस आ जाऊँ तुम्हारे साथ ट्रैवल करने? मैं अपने फ़ोन को हाथों में लिए खिड़की के बाहर फ़्रांस कंट्रीसाइड को देखता रहा। मैं इसी बात से शायद बहुत डर रहा था। कैथरीन के साथ यात्रा बहुत सुंदर होगी जानता हूँ, पर वह पेरिस में रहने जैसा है। पेरिस बहुत सुंदर है, बहुत सारा है, पर मैं कहीं दूसरी जगह भटकना चाहता हूँ। अकेले यात्रा करते रहने के मेरे पास बहुत ज़्यादा कारण नहीं हैं। मैं बहुत बोरिंग यात्रा में रहता हूँ। मेरी यात्राएँ कभी भी बहुत घटनाओं वाली नहीं होती हैं। अगर ज़्यादा कुछ घटने लगता है तो मैं उकता जाता हूँ। मैं यात्राओं में जैसा का तैसा रहना चाहता हूँ, बिना कुछ दिखावे के और बोर होना चाहता हूँ। मैं नथिंगनेस, अगर ऐसी कोई चीज़ है तो, पर बने रहना चाहता हूँ। मेरे लिखे के सारे धागे उसी थका देने वाली गीली मिट्टी से निकलते हैं। कैथरीन ने लंदन में मेरा बहुत अलग रूप देखा है, पर मैं यहाँ उससे ईमानदार नहीं रह पाऊँगा। मैं शायद कायर हूँ और इसी कायरता के कारण मैंने उसे कोई जवाब नहीं दिया।

Chalon-sur-Saône के स्टेशन से मेरा रूम गूगल मैप में अठारह मिनट बता रहा था। पुराने शहर में जैसे ही मैं दाखिल हुआ, वहाँ संडे मार्केट की भीड़ लगी हुई थी। मैं उस भीड़ से होता हुआ 54 नंबर बिल्डिंग के सामने खड़ा हुआ। एक सुखद संयोग था, मुझे वॉन गॉग के पेरिस के घर की याद हो आई। मैं बिल्डिंग के सामने था, पर कोई फ़्लैट नंबर नहीं था। मुझे समझ नहीं आया क्या करूँ? तभी एक औरत ने मेरी दुविधा सूँघ ली और फ़्रेंच में मुझसे सवाल करने लगी। मैंने उनसे अँग्रेज़ी में बात करने को कहा तो वह हँसने लगीं। फिर मैंने उन्हें मैसेज दिखाया। मैसेज पढ़कर उन्होंने एक घर का बज़र दबा दिया। बिल्डिंग का मुख्य दरवाज़ा खुला और उन महिला ने मुझे अंदर धकेल दिया, पर किस फ़्लोर पर जाना है, यह पता नहीं था। जब ऊपर सीढ़ियाँ चढ़ रहा था तो, दूसरे माले पर एक औरत खुले हुए दरवाज़े के बाहर खड़ी थी। उनकी उम्र करीब पचास-पचपन होगी। उनके बाल बिखरे हुए थे और अजीब-से बेतरतीब कपड़े पहने हुए वह लगातार बात किए जा रही थीं। मैंने उनसे निवेदन किया कि आप क्या अँग्रेज़ी में बात करेंगी? पर शायद उन्होंने मेरा वह निवेदन भी नहीं सुना। कुछ देर में मैं अपने रूम में खड़ा हुआ उनकी बातें सुन रहा था। जब गूगल ट्रांसलेटर से ट्रांसलेट करके मैंने कुछ बुनियादी सवाल करने चाहे तो पता लगा वो पुर्तगाली भाषा बोल रही हैं। मैं करीब एक घंटे बाद उन्हें समझा पाया कि बाहर के दरवाज़े की चाबी आपने नहीं दी मुझे, दो दरवाज़े हैं और चाबी एक ही है। चाबी मिलते ही मैंने उन्हें 'थैंकयू' कहा, पर वह जाने का नाम न लें। अंत में मैंने बाथरूम में जाकर कपड़े बदले, उन्हें नमस्ते कहा और बाहर निकल आया। पूरे शहर में सन्नाटा था।

मार्केट खत्म हो चुका था, गिने-चुने इक्का-दुक्का लोग दिखाई दे रहे थे। मैं इस बार दाईं तरफ़ चलने लगा। एक गली से दूसरी कई गलियाँ फूटीं और वे एक चौक पर मिलीं जहाँ सुंदर गिरजा और उस गिरजे के चारों तरफ़ शांत कैफ़ेज़... मुझे पहली नज़र में Chalon-sur-Saône से प्रेम हो गया। नदी किनारे एक सुंदर फ्रेंच टाउन जो एक-दो घंटे चलने में खत्म हो जाता है। मैं नदी किनारे बहुत दूर तक चलता रहा। बार-बार मुझे भोपाल में बिताए अपने दिन याद आ रहे थे। बिना किसी राह के, अँधेरे में दीवारें टटोलते-टटोलते चलते रहने वाले दिन। कितना बदल चुका है सारा कुछ... पहले की शामें कितनी महत्वपूर्ण लगती थीं। हर शाम लगता कि कुछ घटने वाला है, कुछ ऐसा जिसके बाद सारा कुछ बदल जाएगा। नाटकों की रिहर्सल खत्म होने के बाद भूखे पेट घर में ढेर हो जाते। हर रात शाम की निराशा को लेकर बैठते पर फिर भी पूरी तरह निराश नहीं होते थे। सुबह होती और फिर एक नई शाम का इंतज़ार शुरू हो जाता।

बहुत दूर आने पर भी बहुत दूर आ गए हैं का एहसास नहीं होता है। अपना जिया हुआ अभी भी पूरे शरीर में, कल ही की बात है, जैसी हरकत कर रहा होता है। उदासी किस क़दर परछाई की तरह बिल्कुल साथ में सरक रही होती है! आज बदली छाई हुई है, ठंड है, पर फिर भी परछाई की उपस्थिति ठीक बग़ल में मैं महसूस कर सकता हूँ। ऐसे लंबे अकेलेपन में कहीं सिर टिका देने को जी चाहता है, पर अगले ही पल दूर से आता एक बूढ़ा आदमी दिखता है और मैं उसकी काल्पनिक कहानी में फँस जाता हूँ। क्या यह छलावा है? क्या मैं लगातार खुद को छल रहा हूँ? दूसरों की कहानियों में मैं कब तक छुपकर बैठ सकता हूँ? कभी-कभी मुझे लगता है कि मेरा सारा अपना एकदम खोखला है। मैं एक परजीवी पौधा हूँ। मुझे हमेशा दूसरों की ज़रूरत रहती है। वे दूसरे जिन्हें मैं जानता नहीं हूँ। तब असल में मैं जो कहता हूँ कि मैं अकेले यात्रा कर रहा हूँ, वह झूठ है।

Chalon-sur-Saône में मुझे बिल्कुल वैसा लग रहा है जैसा स्पेन के Córdoba शहर में लगा था। छोटा-सा शांत शहर। शाम होते-होते लगभग पूरा शहर नदारद था। मैं खाली सड़कों पर टहल रहा था जैसे कफ़्रू लगा हो। मुझे अपने पैरों की आवाज़ कुछ इस तरह आ रही थी मानो साथ में कोई और चल रहा हो। मैं रुकता और सारा कुछ चुप हो जाता। अगले मोड़ पर कुछ आवाज़ें आईं। देखा तो एक पुराना-सा पब था, जहाँ बहुत-से बूढ़े अपनी-अपनी वाइन और बियर पर बहस कर रहे थे। मैं उस पब में गया और एक बियर ऑर्डर की। अगर भाषा की समस्या नहीं होती तो मैं उनकी चर्चा में ज़रूर शामिल होता, पर उन्हें दूर से देखने का भी सुख है। एक बूढ़ा उस बहस से छिटककर मेरे बग़ल में आकर बैठ गया। मैं अपनी बियर पर चुप था। कुछ ही देर में वह मुझसे अपनी हारी हुई बहस के अंश दोहराने लगा। उसके हाव-भाव से कुछ यूँ लग रहा था कि वह बाक़ी सारे लोगों से बहुत नाराज़ है। मैंने उससे दो बार कहा कि अँग्रेज़ी, कृपया अँग्रेज़ी में बात करें। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है। पर वह शायद मेरे ज़रिए अपने दोस्तों को बताना चाहते थे कि यह मेरी बात समझ रहा है सो मैं चुप रहा और हर बात में हामी

भरता रहा। वहाँ से उसके दोस्त उसकी बात का जवाब देने लगे। कुछ ही देर में बहस मेरे इर्द-गिर्द हो रही थी और मैं बीच के बंदर-सा दोनों तरफ़ हामी भर रहा था। इस बीच मैं तीन बियर पी गया और मुझे लगने लगा कि मैं सच में उनकी कुछ बातें समझ रहा हूँ। बाद में उनमें आपस में शायद सुलह हो गई, सो जब वे हँसते मैं भी हँस देता, जब वे गंभीर होते तो मैं चुप उनकी आँखों में आँख डाले उन्हें ताकता रहता।

वापिस अपने कमरे में आया तो वही महिला मेरा इंतज़ार कर रही थीं। उन्होंने इशारे से मुझे किचेन में बुला लिया। मैंने देखा उन्होंने बहुत सारा सूप बनाया हुआ था। मैंने उनसे कहना चाहा कि एयर बीएनबी के हिसाब से आप सिर्फ़ मुझे नाश्ता देंगी, खाना नहीं। पर यह बात उन्हें समझाने से बेहतर था कि सूप पी लिया जाए। सो मैं उनके सामने सूप लेकर बैठ गया। उन्होंने बहुत मशक्कत से अपना नाम बताया—मर्सीया। मेरा नाम जानने के बाद वह बहुत देर तक उसे बुदबुदाती रहीं। मैंने इशारे से पूछा कि आप नहीं लेंगी सूप? उन्होंने कहा कि वह ले चुकी हैं, और बस मेरा इंतज़ार कर रही थीं। उन्होंने बाल सँवारे हुए थे और कपड़े भी बड़े तरतीब वाले पहने हुए थे। उन्होंने फ़ोन पर लिखकर पूछा, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? मैं मुस्कुरा दिया। इच्छा तो हुई उनसे कह दूँ कि एक तरह से भागकर खुद के पास आने की बड़ी इच्छा है। उसी का प्रयास कर रहा हूँ। मैंने उन्हें लिखा कि मैं लेखक हूँ, लिखने की कोशिश करने आया हूँ। उन्होंने पढ़कर एक लंबी आवाज़ निकाली हम्मम्मम्म...। फिर पूछा कि अकेले क्यों? जिन सवालियों से मैं खुद बचता फिरता हूँ, वे अचानक सामने आ जाएँ तो समझ नहीं आता कि क्या कहें? मैंने उनसे हिंदी में कहा कि इसका जवाब मेरे पास नहीं है। मैं भी कभी-कभी पछताता हूँ पर चूँकि उस पछतावे को मैं अकेले सह सकता हूँ, इसलिए अकेले। अगर किसी के साथ हूँ और वह पछताए तो उसका बोझ मैं सह नहीं सकता। मर्सीया हक्के-बक्के होकर मुझे देखती रहीं, फिर कुछ देर तक अपनी भाषा में बड़बड़ाती रहीं। मैंने टाइप किया, “कोई मेरे साथ आने को तैयार नहीं था और मैं पागल हूँ इसलिए।” वह हँसने लगीं और उन्होंने धत्त वाली एक चपत मेरे कंधे पर मारी। फिर वह अगला सवाल अपने फ़ोन पर टाइप करने लगीं और मुझे इन सबमें एक बहुत बड़ी त्रासदी दिखने लगी। उनके अकेलेपन में मैं खुद को बहुत अकेला नज़र आने लगा। मैं खुद को बहुत बूढ़ा महसूस करने लगा। उन्होंने पूछा, “तुम्हें डर नहीं लगता?” शायद वह बहुत देर से टाइप कर रही थीं, शायद वह बहुत कुछ और भी पूछना चाह रही थीं, पर उन्होंने सारा कुछ मिटाकर सिर्फ़ इतना ही पूछा। मैंने सिर हिलाकर मना कर दिया। इससे पहले वह फिर कुछ पूछें मैंने उन्हें ‘गुड नाइट’ कहा और अपने कमरे में आकर पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया।

अपने बिस्तर पर चित्त पड़ा मैं कमरे की अजीब-सी दीवारों को देख रहा था। ये सारे घर पुरानी लकड़ियों के बने थे। जब भी वह एक कमरे से दूसरे कमरे में जातीं, लकड़ी की चर्रमर्र इतने क़रीब सुनाई देती कि लगता कोई मेरे बिस्तर के नीचे चल रहा है। उनकी दुनिया का अकेलापन मैं दरवाज़े के इस तरफ़ से सुन सकता था। मैं उनसे कहना चाह रहा

था कि मैं बहुत डरपोक हूँ, शायद इसलिए भागता फिरता हूँ। मैं यह मानने को शायद तैयार नहीं हूँ कि ज़िंदगी बस इतनी ही है। मुझे हमेशा से ज़िंदगी से बड़ी अपेक्षाएँ रही हैं। बस यही नहीं है जीवन, जीवन अभी और भी है, इसके आश्चर्य अभी बचे हैं। जहाँ मुझे दिखाई देता है कि बस अब यही है मेरी ज़िंदगी... मैं भाग जाता हूँ। एक तरह से जो हमेशा से चाहिए था, उसका मिलना शाप है। इसलिए बेवजह, बेक्रायदा, बिखरा पड़ा जीवन बहुत आकर्षित करता है। मानो मैंने एक घर बनाया है, पर उसके खिड़की-दरवाज़े उखाड़ फेंके हैं। जो भी जीना मुझे दिया जाता है, मैं उसे छलका देता हूँ। तोड़ देता हूँ जो अपेक्षित है। मैं जब हारकर नीचे गर्त में पड़ा होता हूँ तो वहाँ से आसमान बहुत खूबसूरत दिखता है। वहाँ तारे नहीं होते, वहाँ बस संभावनाओं के चंद्रमा होते हैं। मैं पहले चाँद पर पैर रखता हूँ और एक असीम संभावनाओं की छलांग लगाता हूँ। अपनी जेब में हार की गर्त के पत्थर लिए।

लकड़ी के तिड़कने की आवाज़ आई, मुझे लगा वह मेरे दरवाज़े के दूसरी तरफ़ खड़ी है। मैंने रज़ाई से अपना सिर ढँक लिया। मुझे लगा कि अगर उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया तो मैं चिल्ला दूँगा। पर क्या उन्हें पता चलेगा कि मैं उनके कारण डरा हूँ, किसी बुरे सपने के कारण नहीं? रात मेरी थकान जीत गई। उस डर और असमंजस में, मैं कब सो गया मुझे पता ही नहीं चला।

सुबह मैंने ढूँढ़ा कि कहाँ साइकिल मिल सकती है किराए पर। यहाँ कुछ भी ज़्यादा दूर नहीं था। मैंने मर्सीया का नाश्ता छोड़ा और उन्हें पता चले इससे पहले चोरों की तरह बाहर आ गया। यहाँ साइकिल का पथ बहुत सुंदर है चारों तरफ़। नदी किनारे मैं दूर तक साइकिल पर निकल गया। यूँ अकेले चलते रहने पर कुछ क्षण आते हैं, जिनका कोई मुकाबला नहीं है। उस क्षण की खुशी में हम खुद को ही खुश होता देखते हैं। सामने से चिड़ियों का एक झुंड उड़कर चला आ रहा था। कुछ ही समय में वह झुंड इतना करीब से गुज़रा कि मुझे यक्रीन नहीं हुआ। मैं भीतर ही भीतर हँसने लगा। इस अवस्था को लिखा नहीं जा सकता। जीने में भी एक अजीब-सा संघर्ष है। शरीर इस सुख को बहुत जीना चाहता है पर भीतर इतने सुख को जीने की आदत का कमरा बहुत छोटा है।

“Travel isn’t always pretty. It isn’t always comfortable. Sometimes it hurts, it even breaks your heart. But that’s okay. The journey changes you; it should change you. It leaves marks on your memory, on your consciousness, on your heart, and on your body. You take something with you. Hopefully, you leave something good behind.”

-Anthony Bourdain

यूँ किसी भी जगह पड़े हुए मुझे अक्सर लगता है कि जो लिखता है, या फ़ोटोग्राफ़र, या पेंटर्स उनके लिए अकेले यात्रा एक तरीक़े का, अपने काम के साथ संवाद है। मुझे उन लोगों पर बहुत आश्चर्य होता है जो बस यात्रा करते हैं, बिना किसी आर्टिस्टिक संवाद के। वैसे मैं ऐसे किसी भी यात्री से (जिस किस्म की यात्रा मुझे पसंद है) अभी तक नहीं मिला हूँ। उनके लिए कितना थका देने वाला होगा अकेलापन। मैं बिल्कुल ऐसा ही व्यावसायिक (commercial) फ़िल्मों और नाटक करने वालों के लिए भी महसूस करता हूँ। अगर कोई आर्टिस्टिक संवाद नहीं है, नए प्रयोग नहीं हैं तो यह कितना मेहनत का काम है!

पूरा दिन साइकिल पर रहने के बाद मैं एक इंडियन रेस्त्रॉ में गया। वहाँ तारिक़ नाम का एक लड़का काम करता था जो अफ़ग़ानिस्तान से था। बहुत दिनों बाद हिंदी बोलने को मिली तो मैं देर तक उससे बातें करता रहा। तीन साल में उसने ये रेस्त्रॉ खड़ा किया है, लोगों को इंडियन खाना पसंद है तो पूरे रेस्त्रॉ में कृष्ण और राधा और गणपति की तस्वीरें लगी हुई थीं; जबकि काम करने वाले सारे अफ़ग़ानी और पाकिस्तानी थे। व्यवसाय सारा कुछ एक कर देता है। उसे इस साल अफ़ग़ानिस्तान की क्रिकेट टीम से बड़ी आशाएँ थीं, फिर बाद में जोड़ा कि सबसे हार जाए पर पाकिस्तान से नहीं। सबका एक कोई दुश्मन होता है। वह बस उससे नहीं हारना चाहता। उसने मेरे लिए स्पेशल दाल बनवाई और पुलाव दिया। मुझे खाता देख वह हँसने लगा। मैंने कहा कि हाँ मैं थोड़ा बेतरतीबी से खाता हूँ। वह बचपन में ही घर से भाग गया था। तुर्की रहा, ईरान रहा फिर लंदन होता हुआ अब इधर आ गया है। हर जगह काम किया पैसे जमा किए पर यहाँ आकर कसीनो (जुए) की लत लग गई और अपनी सारी जमा-पूँजी हार गया। कह रहा था कि मुझे पता है ये बहुत बुरी चीज़ है, पर मैं दिन-रात उसके बारे में ही सोचता हूँ। अभी रोज़े चल रहे हैं तो नहीं जा रहा हूँ।

तारिक़ जब आपबीती बताता तो लगता कि उसकी बातों में सारा कुछ सीधा था। एक ऐसी कहानी जो इसी तरीक़े से जी जा सकती है। अपने घर से भागकर वह जीवन की एक गली में घुसा था। उसे लंबी चौड़ी सड़क का इंतज़ार था, पर उस इंतज़ार की थकान उसके चेहरे पर नहीं थी। मैं उससे कहना चाह रहा था कि तुम कमाल हो बस जुए की आदत छोड़ दो। पर उस यात्रा का मतलब ही क्या जिसमें मैं किसी को बदलने की कोशिश करूँ? बदलाव की ज़रूरत मुझे मेरे भीतर है। बाहर सारा कुछ एकदम सही है।

उसने कहा कि मुझे सपने आज भी अफ़ग़ानिस्तान के ही आते हैं और आपको जहाँ के सपने आते हैं, आप असल में वहीं के हैं। वह यह बड़ी बात कहकर मेरी तरफ़ मुस्कुराकर देखने लगा। मैंने न तो हाँ कहा और न ही उसकी बात को नकारा। मैं जब वहाँ से जाने लगा तो उसने कहा कि कल आइएगा, मैं खुद खाना बनाऊँगा आपके लिए।

मैं वापिस अपने कमरे पर जाने के बजाय नीचे एक पब में बैठ गया। कुछ अकेले लोग अपने-अपने कोनों में अपनी ड्रिंक्स पर शांत बैठे थे। इनका अकेलापन पूरा लगता और वह अपने अकेलेपन में सहज। जबकि मैं विचलित-सा रहता। इतना अकेले रहने के

बाद भी मैं अभी तक इससे पूरी तरह सहज नहीं हो पाया था। मैं अकेलेपन में भी अकेला होना तलाशता। मर्सीया का मैसेज आया। उसमें एक तस्वीर थी खाने की। मैं समझ गया वह मुझे डिनर के लिए न्यौता दे रही है। मैंने एक बियर और ऑर्डर की।

मर्सीया ने पीले रंग की एक छोटी ड्रेस पहनी हुई थी, जिसमें छोटे सफ़ेद रंग के फूल बने हुए थे। जब मैं खाना लेने लगा तो देखा उन्होंने बहुत ज़्यादा चावल और फ़िश बनाई थी। वह अकेले रहती हैं, इतना सारा खाना कौन खाएगा? मैंने उनकी तरफ़ देखा तो उन्होंने इशारा किया ले लो। मैंने अपनी क्षमता से थोड़ा ज़्यादा खाना लेकर उनके सामने आकर बैठ गया। संवाद फिर गूगल ट्रांसलेटर से शुरू हुआ। उन्होंने पूछा कैसा लगा खाना? मैंने इशारे से कहा कि बहुत उम्दा है। वह शरमा गई। उन्होंने अपने फ़्रिज पर चिपकी तस्वीरें निकालकर मेरे सामने रख दी। उन तस्वीरों से पता चलता था कि उनकी एक लड़की है जिसके दो बच्चे हैं। वह डॉक्टर हैं कहीं। उन्होंने उस शहर का नाम बताया तो मैंने जल्दबाज़ी में हामी भर दी कि मुझे पता है वह जगह, जबकि मुझे कोई अंदाज़ नहीं था। फिर वह देर तक पुर्तगाली में कुछ बोलती रहीं और पीछे वाले कमरे की तरफ़ इशारा करती रहीं। मैं देर तक पीछे वाले कमरे के दरवाज़े को देखता रहा। मैंने उनसे टाइप करके पूछा कि यहाँ कोई और भी रहता है? उनका जवाब आया, “नाट रियली।” मैं खामोश हो गया।

कुछ देर की चुप्पी के बाद वह टाइप करने लगीं। मैं अपना खाना लगभग खत्म कर चुका था। उन्होंने मेरे सामने एक बियर रख दी और फिर धीमे-धीमे टाइप करने लगीं। मैंने थैंक्स कहकर बियर पीना शुरू किया। उन्होंने अपना फ़ोन दिखाया उसमें ट्रांसलेट करके लिखा था, “यू आर फ़्रॉम इंडिया, केन यू प्लीज़ ब्लेस दिस हाउस विथ युअर मंत्रा।” मैंने देखा उनकी आँखों में गीली आशा थी। मैंने ‘हाँ’ कहा और बियर का एक लंबा घूँट मारकर गाना शुरू किया, “लागा चुनरी में दाग़ छुपाऊँ कैसे? लागा चुनरी में दाग़ छुपाऊँ कैसे...” मैं उसके साथ उसका एक अंतरा भी गाया। उन्होंने अपनी आँखें बंद कर ली थीं। मैं क़तई बेसुरा गाता हूँ, इतना कि अपने खुद के म्यूजिकल प्लेज़ में मुझे गुनगुनाने तक से रोक दिया जाता है। पर यहाँ मेरा बेसुरापन काम कर रहा था। मैंने जैसे ही गाना खत्म किया एक चुप्पी थी पूरे घर में। उन्होंने कुछ देर बाद अपनी आँखें खोलीं और टाइप करके कहा— “ये घर ज़्यादा बेहतर महसूस कर रहा है।” वह धीरे से उठीं, उन्होंने मेरा माथा चूमा और धीरे-धीरे चलते हुए पीछे वाले कमरे के दरवाज़े के सामने खड़ी हो गईं। मुझे लगा वह अंदर जाएँगी, पर वह दरवाज़े के सामने खड़ी रहीं। मेरी घबराहट थोड़ी बढ़ती जा रही थी। मैं उनका नाम धीरे से पुकारा... मर्सीया... मर्सीया, पर वह मुड़ी नहीं... वह बुत बनकर उस दरवाज़े के सामने खड़ी रहीं। मैंने बियर की बोतल वाशबेसिन के पास रखी और उनके बग़ल से होता हुआ अपने कमरे में चला गया। कुछ इस तरह मानो मैंने उन्हें वहाँ खड़े हुए देखा ही नहीं।

रात मैं शायद बहुत नशे में था सो उतना डर नहीं लगा था। पर सुबह होते ही कल रात की बात को याद करके मैं ज़्यादा डर गया था। मैं जल्दी-जल्दी तैयार हुआ और ज्यों ही अपने कमरे का दरवाज़ा खोला किचेन से उनकी आवाज़ आई, “हैलो... हैलो...।” मैं खुद

को कोसने लगा कि मुझे थोड़ा और खुफ़िया तरीके से निकलना चाहिए था। मैं किचेन में गया तो वह नाच रही थीं। उन्होंने मेरे लिए कॉफी बना रखी थी। अपना फ़ोन निकालकर उन्होंने मुझे पढ़ाया, “मैं बहुत वक़्त के बाद कल रात बहुत गहरा सोई। बहुत धन्यवाद रात के मंत्र के लिए। पूरा घर बहुत खुश है। क्या तुम मुझे वह मंत्र सिखा दोगे?”

झूठ महज़ एक वाक्य नहीं होता है कि कह दिया और छुटकारा पा लिया, झूठ का एक पूरा संसार होता है। मैं उस संसार में था और दिक्कत भाषा की थी। मैं कम से कम बोलने में गाने बैठ गया था और अब फ़ैस चुका था। मैंने गूगल ट्रांसलेटर पर लिखा कि मैं सिखा दूँगा, पर एक भी शब्द आपने ग़लत गाया तो अंजाम बिल्कुल उल्टा होगा। इसलिए आज रात मैं दूसरा मंत्र कह दूँगा जिसके बाद इस घर को मंत्रों की कोई ज़रूरत नहीं होगी।

वह मेरा लिखा पढ़कर खुश हो गई। हम दोनों अपनी-अपनी नाश्ते की प्लेट लिए आमने-सामने बैठ गए। अचानक मुझे सारा कुछ बहुत घर जैसा लगने लगा। मेरी निगाह फ़्रिज पर लगी तस्वीरों पर गई, उसमें से एक पीली पड़ गई तस्वीर फटी हुई थी। मैंने उठकर देखा तो उसमें एक औरत थी जिसके बग़ल में एक लड़की खड़ी थी और सूट पहने पतला लंबा आदमी था जिसका मुँह तस्वीर के फट जाने की वजह से ग़ायब था। मैं उनकी कहानी के ज़्यादा भीतर घुसना नहीं चाह रहा था सो मैंने उनसे कुछ नहीं पूछा। मैं वापिस अपने कमरे में आया और Mâcon नाम के एक छोटे टाउन के लिए एक कमरा और ट्रेन टिकिट बुक कर दिया।

सुबह-सुबह साइकिल उठाई और उस तरफ़ चला गया, जहाँ थोड़ा भटका जा सके। कुछ रास्ते पार करके वीरान जंगल जैसे किसी इलाक़े में पहुँच गया। यहाँ हरा इतना ज़्यादा हरा था कि लगता था आँखों ने मानो पहली बार यह रंग देखा हो। बहुत देर तक साइकिल चलाने की वजह से कमर में दर्द होने लगा। पीठ पर लैपटॉप, बिस्कुट, पानी, चार्जर इत्यादि का बोझ भी था। जंगल और नदी के बीच अच्छी-सी जगह देखकर मैंने साइकिल पटक दी और चित्त लेट गया। दूर-दूर तक कोई आदमी नज़र नहीं आ रहा था। मैंने अपना लैपटॉप खोला और लिखने के लिए कहानी और यूरोप यात्रा दोनों खोल दिए। हमेशा बतौर लेखक लगता है कि हम एक ऐसी जगह पहुँच जाएँगे जहाँ बैठकर वे सारी बातें लिखना शुरू कर देंगे जो भीड़ में लिखना संभव नहीं है, पर हम यह कभी नहीं तय कर पाए कि वे बातें क्या होंगी? मैं इस चुप्पी में, जिसमें आवाज़ें या तो चिड़िया की हैं या हवा में डोलते पत्तों की, एक कोरे पन्ने के सामने इस आस में बैठा हूँ कि जो तय नहीं किया वह क्या है? जिसे इस अकेलेपन में लिखने की कल्पना की थी? कोरा पन्ना बहुत देर तक कोरा रहा फिर एक शब्द दिखा, फिर उससे जुड़े चित्र दिमाग़ में आए। मैं उस कोरे पन्ने के सामने वह सारा कुछ देखने लगा जो लिखना चाहता था। एक तरीक़े का केंद्र जिससे सब जुड़ा है। धरती का मध्य। नाभि के आस-पास का कुछ। मुझे सिगरेट की ज़रूरत है। मैंने टटोलकर अपने बैग से सिगरेट और लाइटर निकाला और दो लंबे कश लेकर लिखने बैठ गया। सारा कुछ एक प्रवाह में था। गहरी नींद में देखे किसी सपने-सा जिस पर हमारा कोई बस नहीं।

हम अगर नींद से उठना भी चाहें तो नींद से उठना भी सपने में शामिल हो जाता है। एक तरीके का चक्रव्यूह जिससे बाहर निकलने का जितना भी प्रयत्न करो, आप उतना ही उसकी गहराई में उलझते जाते हो। इस गहरे में मैं देख सकता था खुद को लिखते हुए। तभी एक आवाज़ आई कि तुमने कहा था कि तुम नहीं लिखोगे मुझे कभी! मैंने उस आवाज़ को भी लिख दिया। मैं रुका नहीं, फिर कुछ घटनाएँ और उन घटनाओं के ऐसे ब्यौरों में चला गया कि लगा सब कुछ बैंगनी... गाढ़ा बैंगनी हो गया है। आस-पास हवा चलना बंद हो चुकी है, चिड़िया अपने घोंसलों की तरफ़ वापिस चली गई है और मैं एक कमरे में हूँ जिसमें ब्रूस ली और प्रिंस (गायक) के पोस्टर लगे हुए हैं। कमरा हरा था पर सीलन की वजह से बैंगनी हो चुका है। बिस्तर पर एक जर्जर बूढ़ी औरत लेटी हुई है जिसके शरीर पर कीड़े लग चुके हैं। मैं उस औरत के पास गया। उसने मेरे हाथों को कसकर पकड़ लिया। किसी के कपड़े धोने की आवाज़ आई। कमरे के बाहर कोई कपड़े धो रहा था। मैंने उन्हें उठाना चाहा तो वह बीच से टूट गई और उनके भीतर से कीड़े निकले जिनका चेहरा मुझसे मेल खाता था। मैंने लैपटॉप बंद कर दिया। अभी भी सब तरफ़ सन्नाटा था। सारा हरा बैंगनीपन लिए हुए था। मैं साँस नहीं ले पा रहा था। मैं खड़ा हुआ, थोड़ा चला, थोड़ा कूदा... पर साँस ठीक से नहीं आ रही थी। मैंने लैपटॉप वापिस बैग में रखा और साइकिल उठाकर वहाँ से चल दिया।

सोचा बहुत दूर चला जाऊँगा। मैं बहुत तेज़ साइकिल चलाने लगा। बैंगनीपन अभी भी आँखों के किनारे की तरफ़ लटक रहा था। साँस अभी भी चढ़ी हुई थी। तेज़... और तेज़...। एक छोटा कॉफ़ी हाउस रास्ते में दिखा। मैंने साइकिल गेट के अंदर डाल दी। सीधा कोने वाली टेबल पर गया, बैग रखा और लैपटॉप निकालकर सारा लिखा मिटा दिया। वेटर मेरे पास भागते हुए आया। उसने फ्रेंच में अभिवादन किया। मैंने उससे कॉफ़ी लाने को कहा। “आर यू ओके?” उसने पूछा। “आई एम नाट...” मैंने कहा।

अपने लिखे में शायद कुछ चीज़ों को बिना छुए निकल जाना पड़ता है। वरना मन अजीब-सा व्यावसायिक लगने लगता है। जीवन के हर क्षण को अपने लिखे में भुना लेना अजीब-सा कमीनापन भर देता है और साँस लेना मुश्किल हो जाता है। मुझे बिल्कुल रस्कोलनिकोव-सा लग रहा था (दोस्तोव्स्की, क्राइम एंड पनिशमेंट) मानो मैंने किसी का खून कर दिया है और यह बात सिर्फ़ मुझे पता है—गिल्ट। कॉफ़ी पीते ही मुझे सारा कुछ वापिस हरा दिखने लगा। अभी कितना लिखना बाक़ी है और मैं अपने लिखे को ही काटे जा रहा हूँ।

इच्छा हुई कि तारिक़ से मिलता हूँ। मुझे उसकी सीधी-सी ज़िंदगी चाहिए थी। क्यों मेरे जीने में सारा कुछ वैसा नहीं है जिसे मैं तारिक़ की तरह हँसते हुए स्वीकारता-सा चलूँ? मुझे रश्क था तारिक़ की मुक्त मुस्कुराहट से। मैं साइकिल अपने हाथ में लिए Saône नदी के किनारे-किनारे चलने लगा। पूरा शरीर इतनी साइकिल चलाने के कारण टूटा पड़ा था। चलने में एक क्रिस्म की सादगी लग रही थी। विचारों के प्रवाह में कभी कैथरीन आती तो कभी अपना अभी-अभी मिटाया हुआ सारा कुछ। मैं जानता हूँ कि अगर इस वक़्त कैथरीन मेरे साथ होती तो मैं बहुत खुश होता, कूद रहा होता। जाने कितने क्रिस्से-कहानियाँ उसे

सुनाता, पर वह नहीं है। कितना ठीक है कि मैं उसके न होने के दुख से बहुत दुखी भी नहीं हो रहा हूँ!

यह सारा लिखा एक तरीके का निजी यात्रा-वृत्तांत-सा है, पर काल्पनिक है। जैसे यह नदी सत्य है, पर इसके भीतर जो भी आ रहा है, वह सारा कुछ काल्पनिक है।

तारिक ने उसी मुक्त मुस्कुराहट से स्वागत किया। चिकन, दाल, चावल और एक बटरवाली रोटी खाते हुए लगा कि मैं कितना भूखा था। वह बोले जा रहा था और मैं खाए जा रहा था। बहुत पेट भरने के बाद मैंने उससे पुछा कि तुम कब जाओगे अफ़ग़ानिस्तान वापिस? उसने अपने कंधे उचका दिए। उसने कहा, “मैं बहुत छोटा था जब भागा था। सोचा था जब कुछ बन जाऊँगा तो दिखा दूँगा अपने अब्बू को कि मैं भी कितना क़ाबिल हूँ। पर कुछ साल पहले अब्बू नहीं रहे। अभी वापिस जाने पर करूँगा क्या? अभी जो है इधर है। और फिर शायद अब्बू ही सही थे। मैं कुछ भी तो ज़्यादा कर नहीं पाया और ऊपर से जुआ अलग खेलने लगा।” तारिक के हिंदी बोलने में कश्मीरियत थी। पूरे वक़्त लगता कि मैं कश्मीर में किसी से बात कर रहा हूँ। उसने अंत में खाने के पैसे नहीं लिए, कहा कि पैसे के बदले फ़ेसबुक पर हम दोस्त हो जाएँगे। मैंने उसका यह प्रस्ताव स्वीकार किया और हम फ़ेसबुक पर दोस्त हो गए।

कमरे पर वापिस आया तो मर्सीया घर पर नहीं थी। मैं अपने साथ बियर के दो केन ले आया था। किचेन में जाकर देखा तो पास्ता बना हुआ था। मैंने गिलास में बियर उड़ेली और किचेन में बैठकर मर्सीया का इंतज़ार करने लगा। तभी निगाह पीछे वाले कमरे के दरवाज़े पर पड़ी, वह आधा खुला था और लाइट भी जली थी। मैंने आवाज़ लगाई, “हैलो? मर्सीया... मर्सीया...। पर कोई जवाब नहीं आया। एक बियर ख़त्म करके मैं दूसरी बीयर मग में डालकर अपने कमरे में गया। बैग रखा, शॉवर लिया, कपड़े बदले और वापिस किचेन में आ गया। मर्सीया अभी तक नहीं आई थी। तभी देखा पीछे वाले कमरे का दरवाज़ा बंद था। मैंने फिर आवाज़ लगाई, “मर्सीया... मर्सीया...” उठकर मैं दरवाज़े के पास गया। मैं बहुत ही ज़्यादा डरपोक हूँ, पर जब भी डर लगता है हमेशा जिम कार्बेट की कहानियों के बारे में सोचता हूँ। जिम कार्बेट का नाम जपते हुए मैंने धीरे से दरवाज़ा खोला। तभी बाहर का दरवाज़ा खुलने की आहट हुई। मैं भागकर वापिस किचेन में आ गया। मैंने पीछे वाले कमरे में भीतर झाँका तो था, पर डर इतना ज़्यादा हावी था कि हर जगह मुझे कोई आकृति खड़ी दिख रही थी। मर्सीया ताज़ा ब्रेड लेने गई थीं।

गर्म पास्ता और ताज़ा ब्रेड के साथ हम दोनों चुप अपना डिनर खा रहे थे। मैं अपनी दूसरी बियर ख़त्म कर चुका था। घर एकदम चुप था। बीच-बीच में हमारी आँखें मिलतीं तो मैं इशारे से खाने की तारीफ़ करता। मर्सीया शांत लग रही थीं। पहली बार मुझे लगा कि मर्सीया अपनी उम्र के हिसाब से बहुत ख़ूबसूरत हैं। खाने के बाद मर्सीया ने आग्रह किया कि अब मंत्र पढ़ दो। मैंने उनसे अपनी आँखें बंद करने को कहा। उन्होंने आँखें बंद कीं और

मैंने “वैष्णव जन तो तेने कहिये जो पीर पराई जाने रे...” गाना शुरू किया। बार-बार मेरी नज़र पीछे वाले कमरे के दरवाज़े पर चली जाती, वह अभी आधा खुला था, शायद मैंने उसे ढंग से बंद नहीं किया था। यह मेरा भ्रम ही होगा पर मुझे वहाँ कोई परछाईं हिलती हुई दिखी। मैंने गाना बीच में ही बंद कर दिया। उन्होंने आँखें खोल दीं। मैंने ‘ये रातें ये मौसम नदी का किनारा और ये चंचल हवा...’ गाना शुरू कर दिया। उन्होंने फिर अपनी आँखें बंद कर दीं। गाना खत्म होते ही मैं उठा और फ्रिज से दो बियर निकालकर अपने कमरे में चला गया। मर्सीया... मैं यह नाम बहुत देर तक बुदबुदाता रहा। मर्सीया नाम के हमारे यहाँ एकदम अलग मतलब हैं— मर्सिया (मृत आत्मा के लिए एक बड़ी त्रासदी या शोक)। मुझे नशा चाहिए था आज रात सोने के लिए। मैंने दो-तीन घूंट में दोनों बियर खत्म की और अपने बिस्तर में समाधि ले ली।

सुबह मैं Mâcon के लिए निकल चुका था। मर्सीया ने सैंडविच पैक कर किचेन की टेबल पर रख छोड़ा था। पीछे वाले कमरे के दरवाज़े पर ताला लगा हुआ था। ट्रेन में बैठ-बैठे मुझे बुरा लग रहा था। किस बात का उस पर मैं सीधे उँगली नहीं रख सकता हूँ, पर कुछ था जो चुभे जा रहा था। ट्रेन का रास्ता बहुत खूबसूरत था। जिन छोटे शहरों में ट्रेन रुकती वहीं उतर जाने का मन करता। इच्छा थी कि यह सारी खूबसूरती लिख डालूँ। जो जैसा है उसे वैसा का वैसा अपने लिखे में उतार दूँ। करीब दो पन्ने मैंने जैसे जो जैसा है उसे वैसा का वैसा लिखा और जब उसे पढ़ा तो यक़ीन मानिए अपना लिखा मुझे कभी इतना बोरिंग नहीं लगा था। मैंने फिर सारा कुछ त्याग कर नए सिरे से लिखना शुरू किया। वह नहीं जो दिख रहा था। वह जो इस दिखे के बाद महसूस हो रहा था। अचानक सारी बातों में एक सामंजस्य बनने लगा और मैं दिखे, लिखे और जिए के बीच गोते लगाने लगा।

Mâcon आते ही लगा कि ग़लत आ गया। इस शहर में क़दम रखते ही लगा कि ये मेरी धुन का शहर नहीं है। पर दो दिन की बुकिंग कर चुका था सो अब इसे जीना ही पड़ेगा। जो फ़्लैट बुक किया था वह शहर के बीचोबीच था, पर इतना पराया लग रहा था कि मैंने अपना सामान भी नहीं खोला। बाहर आते ही अजीब-सा ख़ालीपन लगने लगा। मैंने सोचा अच्छा है मेरा सुर इस शहर से नहीं बैठ रहा, तो सिर्फ़ यहाँ लिखूँगा। बहुत सारे कैफ़े छानने के बाद चर्च के पास वाला कैफ़े कुछ ठीक लगा सो वहाँ मैं अपनी चौपाल बिछाकर बैठ गया।

जो जगह आपके सुर की नहीं होती कभी-कभी उन जगहों पर टिक जाना चाहिए। कहीं जाने का कोई प्रलोभन नहीं था सो बहुत देर तक लिखता रहा। कहानी का जाल अपनी सघनता से सामने रखा था, पर इस चुप्पी में उस कहानी के नए दयार खुलते दिख रहे थे। मैं देर तक कहानी पर काम करता रहा। एक ब्रेक लिया ही था कि कैथरीन का मैसेज आया, “मैं Cannes आई हूँ, फ़िल्म फ़ेस्टिवल में शामिल होने, तुम किस शहर में हो? क्या यहाँ आने का कोई प्लान है?” Cannes यहाँ से करीब तीन घंटे की दूरी पर

था। मैं कैथरीन को लिखना चाह रहा था कि तुम बहुत खूबसूरत हो। मैं तुमसे एक बार नहीं बार-बार मिलना चाहता हूँ। काश तुम्हें पता होता कि तुम्हें लिखना इस वक़्त कितना सुख दे रहा है, इस बेसुरे शहर में। पर वह शायद इन बातों का मतलब न समझे। मैंने लिखा, “मैं Mâcon में हूँ और वहाँ आने का कोई प्लान नहीं है।” कुछ देर में उसका मैसेज आया, “ओके।” मैंने फ़ोन अपने से दूर रख दिया, मानो मेरे हाथों पर मेरा बस नहीं है। वापिस अपने लिखे पर आया तो कैथरीन की बातें दिमाग़ में घूमने लगीं। वह मुक्त जीवन जीना चाहती है, जिस तरह की लड़कियों का ज़िक्र लोग उपन्यासों में करते हैं। वह हमेशा घूमते रहना चाहती है। वह कहती थी, “उसे हमेशा लगता है कि बस इस साल इन सारी ज़िम्मेदारियों से मुक्त हो जाऊँ फिर सब ठीक हो जाएगा। हर बार जब सब सही होने लगता था तो कभी मैं सब बिगाड़ देती और कभी माँ। सब ठीक होते-होते, सब ठीक होना रह जाता हमेशा।”

बहुत प्रेम कर लेने के बाद बिस्तरों पर किए गए आलसी संवाद हमेशा याद रह जाते हैं। प्रेम हम भूल जाते हैं, पर वह गिरते-पड़ते संवादों के दौरान एक-दूसरे को छूना, चूमना हमेशा याद रह जाता है। कैथरीन की छाती पर जहाँ उसका लॉकेट लटक रहा होता है, वहाँ पर एक तिल था, जिसने छोटे से पान के पत्ते की आकृति ली हुई थी। उसने जब मुझे दिखाया तो मुझे यक़ीन नहीं हुआ कि ऐसा कुछ हो भी सकता है। मैंने बहुत पास से उसे देखा, फिर छुआ... वह सच में दिल के आकार का तिल था। मैंने उससे कहा कि तुम बहुत लकी हो। उसने कहा कि लकी का पता नहीं पर हाँ अलग हूँ, पर मुझे इस बात पर भी अब शक होने लगा है।

Mâcon की Saône नदी के किनारे-किनारे मैंने करीब दो घंटे की वॉक की, जब उस वॉकिंग पाथ के अंत में पहुँचा तो एक डेक बना हुआ था दो बेंचों के साथ। इन्हें बेंच रखना आता है। आप जहाँ सोच सकते हो कि यहाँ बैठने में कितना मज़ा आएगा, वे वहाँ बेंच रख चुके होते हैं। मैं उस बेंच पर बैठा। बैग में पड़ी चॉकलेट निकाली और उसे देर तक मुँह में घोलता रहा। पूरी वॉक के दौरान कश्मीर दिमाग़ में घूम रहा था। बार-बार यहाँ के आसमान पर निगाह जाती और लगता इतना ही साफ़ तो है अपने कश्मीर का आसमान। कश्मीर और मेरे पिता। उनका चेहरा भी छाया रहा आज की दोपहर में। कुछ देर को लगा कि वे क्या सोचते होंगे कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ? बिना किसी मक़सद के भटकना। देर तक बस चलते रहना। फिर बैठ जाना। कॉफ़ी पीते रहना। यदा-कदा लिखना। उनका जीवन बहुत ही ज़्यादा अलग था। हर वक़्त, विपरीत महौल में लगातार सरवाइव करते रहने की गहरी रेखाएँ उनके चेहरे पर उभर आई थीं, जिसने उन्हें बहुत जल्दी बूढ़ा बना दिया था।

वक़्त रहते सारा कुछ नहीं किया जा सकता। जीवन हमारे बनाए नियमों से नहीं चलता है। वह फिसल रहा होता है। जैसे मुझे लगता है कि मुझे इस तरह की यात्राएँ बहुत

पहले शुरू कर लेनी चाहिए थीं। अगर कर लेता तो यही शहर आज उतना पराया नहीं लगता। यात्राएँ क़तई आसान नहीं होती हैं। वे नोच लेती हैं—कितना कुछ भीतर से! हम कितना खाली हो जाते हैं! बहुत सारी चीज़ें, जिनका महत्व हमारे जीते हुए इतना बढ़ जाता है कि उनके बोझ तले हमारे कंधे झुकने लगते हैं... यहाँ यात्राओं में आते ही वे अपना महत्व एकदम से खो देती हैं। हम कंधे झटकते हैं और सारा व्यर्थ कचरा शरीर से झड़ जाता है, पर इस कचरे के झड़ने में भी बहुत सारा खाली वक़्त लगता है। संयम... संयम की परीक्षा चल रही होती है। अब जाकर मैं अपनी यात्रा की ऊहापोह में कुछ शांत हुआ हूँ। शायद यह इस शहर का कमाल है, जिससे मेरा सुर मेल नहीं खा रहा है।

आज सुबह वापिस Café des Négociants आ गया। इस सारे पराएपन में कहीं भी थोड़ा-सा अपनेपन का सुर दिखता है तो क़दम उस तरफ़ चले जाते हैं। इस कैफ़े के मालिक का अभिनंदन कुछ ऐसा था मानो वह मुझे पहले से जानता हो। आज देखा उसने अपनी दाढ़ी काट ली है। मुझे हँसी आई उसे देखकर। उसने इशारे से कहा कि जानता हूँ आप क्यों हँस रहे हैं। हँसी-हँसी में उसने पहली कॉफ़ी के पैसे नहीं लिए।

हर छोटे शहर में सुबह-सुबह आपको वहाँ के शहरवासी अपनी ब्रेड खरीदने और अपनी पहली कॉफ़ी पीने निकलते हुए दिखते हैं। यह कैफ़े लोकल लोगों का पसंदीदा कैफ़े लगता है। हर आदमी एक-दूसरे का ज़ोर-शोर से अभिनंदन करता है। इन सारे अभिनंदनों में वे कभी-कभी मुझे भी शामिल कर लेते थे। मैं कुछ देर में खिसियाता-सा वापिस अपने लैपटॉप में घुस जाता। उनके फ्रेंच शब्द मेरे कानों में पड़ रहे थे जो अब मुझे संगीत-से लगने लगे थे, और मैं उन लोगों के बीच एक पहाड़ी कहानी लिख रहा हूँ जो उत्तराखंड में स्थित है। बहुत लिखने के बाद जब भी नज़र ऊपर उठती है तो आश्चर्य होता है कि मैं अपने पहाड़ों पर नहीं हूँ। धूप बहुत तेज़ हो चुकी थी। मैं अपना लैपटॉप और बैग लेकर भीतर कैफ़े में चला गया। जैसे ही मैं बैठा सारे फ्रेंच लोग देखने लगे कि इतनी अच्छी धूप छोड़कर ये अंदर कैफ़े में क्यों चला गया। इनके लिए ये गर्मियाँ बहुत महत्व रखती हैं। इनके लिए ये तेज़ धूप बहुत उल्लास भर देती है, पर मुझ भारतीय के लिए तो यही धूप है जिससे बचने के लिए मैं यूरोप की यात्रा पर निकला हूँ।

पहाड़ी कहानी, जिसका अभी तक नाम नहीं रखा है, अपने अंत पर है। जब कहानी अपने अंत पर टहल रही होती है, तब लगता है कोई धक्का दे दे और ये कहानी पूरी हो जाए। मैं अभी-अभी कहानी से निकलकर यहाँ आया हूँ। अगर थोड़ी देर और वहीं बना रहता तो शायद कहानी पूरी हो जाती। पर थोड़ी लालसा है। लगता है कि कुछ और है जो अभी लिखा जा सकता है। कुछ और इक्वेशन बची है इस गणित में जिसे सुलझाना बाक़ी है। शायद कुछ न भी हो, पर अंत की रेखा पर टहलना और उसे पार न करना बड़ी गुदगुदी-सी देता है। अभी इस वक़्त यह लिखते हुए भी एक प्रसन्नता है कि कहानी अपने अंत पर है। करीब एक साल से इस कहानी से जूझ रहा था। अभी इसकी परिणति कितना सुख दे रही है।

किसी से बात किए बहुत वक़्त हो गया है। शरीर को इतना ज़्यादा चुप रहने की आदत नहीं है। जब किसी कैफ़े में कॉफ़ी ऑर्डर करता हूँ तो पहला शब्द खराश के साथ बाहर आता है। मुझे साफ़ बोलने में थोड़ा वक़्त लग जाता है। अगर भाषा की दिक्कत न होती तो मैं कई लोगों से बात करता फिरता। अब जबकि मैं बात नहीं कर पा रहा हूँ तो देख ज़्यादा रहा हूँ, सुन ज़्यादा रहा हूँ, काश लिख भी ज़्यादा पाता।

Museum Ursulines, Mâcon के कैफ़े में बैठे हुए मैंने अपनी कहानी 'रचना' (जिसका नाम भी अभी-अभी रखा है) पूरी की है। एक कॉफ़ी मँगाई और गहरी साँस लेकर लगा कि कितनी लंबी यात्रा खत्म हुई है। कुछ ही देर में मैंने सिगरेट जला ली। कहानी खत्म हो जाने पर लगा जैसे कुएँ में बचपन में गुमी हुई कोई गेंद मिल गई हो। ये छोटे सुख यात्रा को कितना उत्साह से भर देते हैं। आज की शाम भी बहुत सुंदर लग रही थी। चारों तरफ़ सूरज की रौशनी थी और उसके भीतर 'रचना' का संसार पेड़ों की छोटी-छोटी छाया के टुकड़ों में पूरा हो गया था।

किस क़दर कह देना ज़रूरी हो जाता है। कुछ भीतर खल रहा होता है। लगता है कि बस अगल-बग़ल ही तो है जो कह देना है। जब कहने बैठो तो एक तार से दूसरा कुछ इस क़दर जुड़ता जाता है कि लगता है यह तो पूरा संसार है। उस संसार में प्रवेश करते ही हमारे बस में कुछ नहीं होता। अब उस संसार के पात्र ही तय करते हैं कि एक्ज़िट कब होगी। एक कहानी खत्म करते ही लगता है कि सारे पात्र विदा कहने एक साथ चले आए हैं। वह भी जो कहानी में मर चुके थे। आपको सारे चेहरे अब उस जी हुई कहानी के अवशेष लगते हैं, उधड़े हुए, जैसे कैसे अपनी जगह खड़े हैं ताकि आपको अच्छे से विदा कर सकें। आप देर तक उन्हें धुंध में खोता हुआ ताकते रहते हैं। अब इनसे जब भी मुलाक़ात होगी लगेगा कि ये वे लोग हैं जिनके साथ मैं एक वक़्त में रहा था। मेरे बहुत निजी पर अब वे लोग मुझे पहचानेंगे भी नहीं।

Mâcon में आज आखिरी दिन है। पूरा दिन लगभग लिखने में गया। जिस शहर में आकर लगा था कि यह क़तई मेरे सुर का नहीं है, वहाँ सबसे ठीक लेखन हुआ। तो क्या एक लेखक को ऐसी जगह घूमना चाहिए जो जगह उसे बिल्कुल पसंद न आए? मैंने अभी तक Museum Ursulines नहीं देखा था। कहानी खत्म होते ही चाल में एक लचक आ गई थी। म्यूज़ियम में गया तो जिस पेंटिंग को देखता वह बेहतरीन लगती। भीतर की प्रसन्नता के अंश मैं अपने चारों तरफ़ देख सकता था।

यहाँ आस-पास खुदाई में मिले शिलाखंड और मूर्तियाँ थीं। कितनी अच्छी तरह सहेजकर रखते हैं ये सारी चीज़ें, कितनी ज़्यादा इज़ज़त देते हैं वे उन लोगों को जिन्होंने इनकी खोज की थी। एक-एक सामान को क़रीने से सजाकर रखा था और उसका पूरा विवरण था फ़्रेंच में। बस यही दिक्कत थी। मैंने एक लड़की से पूछा कि उसे अगर अँग्रेज़ी आती है तो वह मुझे समझा दे कि इसमें क्या लिखा है। लड़की ने कुछ देर मोटा-मोटा

समझाया, पर अंत में मैंने ही कहा कि ठीक है मैं समझ गया। बाक़ी म्यूज़ियम बहुत अच्छा लगा। सोचा जाते वक़्त एक कॉफ़ी और पिऊँगा वहाँ जहाँ कहानी ख़त्म की है।

चलते हुए एक छोटे-से म्यूज़ियम में M. Bonnard की पेंटिंग्स देखी। क़ाफ़ी अलग तरह का काम था। उनके स्ट्रक्चर बहुत भाव फेंक रहे थे। सारे स्ट्रोक्स और रंगों का इस्तेमाल भी बहुत सराहनीय था। कुछ पेंटिंग्स के सामने बहुत देर तक खड़ा रहा। एक आदमी मेरे पास आया, वह शायद उस गैलरी का मालिक था। उसने उस एक पेंटिंग के बारे में बोलना शुरू किया जिसके सामने मैं कुछ देर से खड़ा था। मैं थोड़ा थक गया था यह कहकर कि अँग्रेज़ी प्लीज़, सो मैं चुपचाप उसकी हाँ में हाँ मिलाता रहा। जब वह गया तो मैंने उसे फ्रेंच में धन्यवाद कहा और वापिस उस पेंटिंग पर आया। कोई क्यों पेंटिंग एक्सप्लेन करे? मैं यह समझता हूँ कि एक पेंटिंग के आपके ऊपर हुए प्रभाव के बारे में आप बोलें, वह ठीक है, पर उसे एक्सप्लेन करना मुझे ठीक नहीं लगता। पेंटिंग्स के रंग, स्ट्रोक्स और स्ट्रक्चर का सभी के ऊपर एकदम अलग प्रभाव पड़ता है और हर आदमी अपनी अलग ज़मीन पर खड़े रहकर उसे देखता है। उससे एक अलग संबंध बनाता है, जिससे वह पेंटिंग आपको अपने किसी कोने में ले जाती है और आप अपने ही जीवन का एक अंश उसमें देख लेते हैं। अगर मैं समझ पाता कि वह महाशय क्या कह रहे हैं तो शायद मेरा उस पेंटिंग से रिश्ता टूट जाता और मैं महज़ उसकी कलात्मकता की सराहना करता जो बहुत छोटी बात है।

मन प्रसन्न था क्योंकि कहानी के बाद धोखे से एक अच्छा पेंटर देख लिया था। उसकी कोई प्लानिंग नहीं थी। हमारे देश में भी इसी तरीक़े की छोटी गैलरीज़ की बहुत ज़रूरत है जो नए पेंटर्स को उभरने में मदद कर सकती हैं। बिल्कुल थिएटर की तरह, छोटे सभागृह, ब्लैक बॉक्स जैसी जगह बहुत महत्वपूर्ण हैं; प्रयोग के लगातार होने में। पेरिस में मैंने जो दो नाटकों के प्रयोग देखे थे, वह बहुत ही छोटी जगह थी। एक जगह लगभग सौ लोग बैठ सकते थे और दूसरी जगह अस्सी लोग। ऐसे में प्रयोग बहुत कमाल हो जाता है। पर त्रासदी यह है कि यह बात भी उनके हाथों में है, जिनके पास जगह है।

Mâcon की यह आखिरी शाम बहुत शांत और खूबसूरत लग रही थी। इस छोटे शहर में जहाँ पहला दिन काटे नहीं कट रहा था अब लगता है कि एक दिन और होता तो कितना मज़ा आता। मैंने बियर, कुछ सलामी और सॉसेज ऑर्डर किए। ये बियर के साथ मेरा पसंदीदा डिनर था यहाँ पर। आस-पास सारे लोग अपने दोस्तों और परिवार वालों के साथ बैठे थे। यहाँ आकर लगता सोशल लाइफ़ कितनी ज़्यादा ज़रूरी है और वह आपको कितना व्यस्त भी रखती है। मैं हर बार सोचता हूँ कि मुझे मेरी सोशल लाइफ़ पर काम करना चाहिए। मेरे बहुत कम दोस्त हैं और मैं बहुत कम लोगों से मिलता हूँ। पर कैसे करते हैं सोशल लाइफ़ पर काम? इस सवाल के साथ ही मुझे हँसी आने लगी। ये ऐसे क्षण हैं जहाँ मैं अपनी नई कहानी के बारे में किसी से बात करना चाहता हूँ। खासकर उस कहानी में आए उन चौराहों के बारे में जहाँ मैं बहुत देर तक रुका रहा था। एक कहानी के ख़त्म

होने की खाली जगह बड़ी उपजाऊ होती है। मेरे भीतर दूसरी कहानी का बीज हरकत कर रहा था। इसलिए शायद यह बहुत ज़रूरी है कि आप अकेले ही उस कहानी का सुख भोगें, वरना खाली ज़मीन के किनारे पड़े नई कहानी के छोटे-से बीज पर निगाह पड़ना मुश्किल है।

सुबह उठकर ट्रेन का टाइम देखा बारह दस। मेरे पास पूरे दो घंटे थे। मैं भागता हुआ अपने अड़्डे पर गया। कैफ़े के मालिक ने मुझसे बिना पूछे मेरे लिए मेरी कॉफ़ी ला दी और कुछ देर में उसने अँग्रेज़ी गाने लगा दिए। अब मैं उसे कैसे बताता कि इन गानों से बेहतर मुझे उसके फ्रेंच गाने पसंद हैं। मैंने उसे धन्यवाद कहा और वह मुस्कुरा दिया। मुझे ठीक इस वक़्त यह शहर Mâcon एकदम अपना लगने लगा था। कैफ़े में तुरंत लैपटॉप खोला। नई कहानी का छोटा-सा बीज अब तिड़क चुका था। मैं उस तिड़कन को शब्द देने लगा।

जो लिखा था अब तक वह कुछ नोट्स की तरह सुनाई दे रहा था। कहानी बहुत बिखरी हुई है। उसको समेटने में बहुत वक़्त लगेगा। पर कितना कुछ तो समेटा है। यह भी लगता है हो ही जाएगा। मेहनत है, पर कहानी में मज़ा बहुत है।

अपना सामान लिए मैं रेलवे स्टेशन जा रहा था तो देखा अभी मेरे पास पंद्रह मिनट और हैं। स्टेशन के पास ही एक इंडियन-पाकिस्तानी कैफ़े दिखा। मैंने तुरंत एक कॉफ़ी ऑर्डर कर दी। उसका मालिक शब्बीर था जो पाकिस्तान से था। वह मेरे अगल-बगल ही सफ़ाई कर रहा था। मैंने ऐश-ट्रे माँगी। उसने हिंदी में जवाब दिया देखने के लिए कि मैं हिंदी समझता हूँ या नहीं। मैंने शुक्रिया कहा तो वह मेरे करीब आ गया। कुछ औपचारिक संवादों के बाद हमारी बातें छिड़ गईं। वह बाईस साल से है यहाँ। कह रहा था पीछे की तरफ़ बहुत तुर्क रहते हैं। उनकी अपनी एक मस्जिद भी है। वहाँ वह नहीं जाता है। फिर वह हिंदू-मुसलमान पर आ गया। वह पूछने लगा कि क्या हो रहा है हमारे देशों में? देखिए आप और मैं कितने एक जैसे हैं। मैंने कहा कि आप ग़लत हैं, आप और मैं ही नहीं वे तुर्की और ये फ्रेंच, हम सब एक ही हैं। उसने कहा कि उसके पर दादा राजस्थान और पंजाब से थे। अगर हम सच में ढूँढ़ने जाएँ तो आप और मैं शायद भाई-भाई भी निकल सकते हैं। आप देखिए असल में दिक्कत भीड़ की है। आप इस वक़्त अकेले हैं और मैं अकेला। हम एक-दूसरे को कितना प्रेम दे रहे हैं, पर जब भीड़ में, बस भरकर इंडियंस खाने आते हैं... आपको पता नहीं कितनी बेइज़्ज़ती होती है हमारी... अरे दही पर लड़ जाते हैं। समस्या भीड़ की है। मैं उसकी बातों पर हँसे जा रहा था। वह पूरी तरह पंजाबी था। उसका लहजा भी एकदम खड़ा पंजाबी था। अंत में उसने मुझसे कॉफ़ी के पैसे नहीं लिए। उसने कहा कि आप बहुत लंबी यात्रा पर हैं। ये एक-एक यूरो बहुत काम आएँगे। मैंने उसे बहुत शुक्रिया कहा और विदा लिया।

मेरा कम्पार्टमेंट नंबर सात था पर ट्रेन की बोगी के बाहर कम्पार्टमेंट नहीं लिखा हुआ था। जो दरवाज़ा सामने आया मैं उसमें घुस गया। सात नंबर कम्पार्टमेंट बहुत मुश्किलों से मिला फिर सीट नंबर एक सौ बारह तक पहुँचते-पहुँचते मैं हाँफने लगा। देखा मेरी सीट पर

एक लड़की बैठी है। मैंने उसे कहा कि मेरा सीट नंबर एक सौ बारह है। उसने अपनी टूटी-फूटी अँग्रेजी में कहा कि मेरा सीट नंबर एक सौ ग्यारह है। अब इसे यह समझाना कि वह खिड़की वाली जगह मैंने बुक की थी और वह एक सौ बारह है, नामुमकिन लगा सो मैं एक सौ ग्यारह पर पसर गया। बैठते ही मैंने अपना टिकट देखा। यात्रा कुल मिलाकर अड़तीस मिनट की थी और जैसे ही मैंने Lyon पढ़ा मुझे भीतर अजीब-सा आश्चर्य हुआ। मैंने उस लड़की से कहा, “मुझे आज से तीन दिन पहले तक नहीं पता था कि इस धरती पर Lyon नाम का शहर है।”

“अच्छा? कहाँ से हैं आप?” उसे अँग्रेजी ठीक-ठाक आती थी। इच्छा तो हुई कि उससे कहूँ कि सुनो वो सीट मेरी है। पर इस वक़्त मेरे लिए किसी से बात करना बहुत ज़रूरी था। यह मेरे शरीर की माँग थी।

“मैं भारत से हूँ, मुंबई।”

“ओ!”

“बहुत दूर है। आपको इंडिया के बारे में कुछ पता है।”

“नहीं।”

“बहुत रंगीन है। कभी आइएगा आपको अच्छा लगेगा।”

उसने हम्म कहा और एक किताब खोल ली। अब मैं असमंजस में था कि बात करूँ या नहीं। पर वह मेरी सीट पर बैठी थी उसे इतना मुआवज़ा तो देना ही पड़ेगा। मैंने कहा, “कौन-सी किताब है ये?”

“एक फ्रेंच यंग राइटर है। अच्छा लिखता है।”

मैंने सोचा काश मुझे इस राइटर के बारे में कुछ पता होता।

“आपने कामू को पढ़ा है—अल्बेयर कामू?” मैंने फ्रेंच तरीक़े से कामू का नाम कहा तो वह समझ गई।

“नहीं... मेरे पास है उनकी किताब, पर पढ़ी नहीं है।”

इसके बाद मेरे पास ज़्यादा कुछ नहीं था कहने को सो मैं चुप हो गया। अचानक उसने पूछा, “आप अकेले हैं?”

“हाँ... भटक रहा हूँ।”

“बाप रे...”

“बाप रे क्यों?”

“मैं कभी सोच नहीं सकती ऐसे बिना प्लानिंग के घूमना।”

“कभी करना, अच्छा है तो नहीं कहूँगा, पर अलग है।”

“आपके घरवाले कुछ नहीं बोलते?”

“उन्हें लगता है मेरा माथा खराब है।”

“मैं बस दोस्तों के साथ न्यूयॉर्क गई हूँ। आपको फ्रेंच आती है?”

“तीन शब्द बस... हैलो, थैंकयू और कॉफी।”

“तो कैसे मैनेज करते हैं?”

“यह कितना अद्भुत है असल में कि भाषा, खाना, लोग और जगह सब कुछ न समझ में आने वाला जैसा है, और मैं उसमें से गुज़र रहा हूँ।”

वह हँसने लगी, पर उस हँसी में उसे आखिरी बात थोड़ी कम समझ में आई। मैंने देखा वह बहुत खूबसूरत है। उसके सुनहरे बाल हैं। उसने बेतरतीब से कपड़े पहने हैं। कलाईयों पर हार्टबीट वाला टैटू बना हुआ है और उसने बच्चों वाले जूते पहने हैं, गुलाबी रंग के।

“मेरा नाम लूसी है।”

“मेरा नाम मानव। इसका मतलब ह्यूमन होता है। असल में बोरिंग अर्थ है।”

“लूसी का मतलब फ्रेंच में रौशनी होता है।”

“आप क्या करती हैं?”

“लॉ पास किया है अभी-अभी। अब नौकरी ढूँढ़ रही हूँ। और आप?”

“मैं लेखक हूँ।”

कितना ज़्यादा रोमांस है ये कहने में कि मैं लेखक हूँ। अपने देश में मैं कभी भी इतने आत्मविश्वास से यह नहीं कह पाया। कमी मुझमें ही है। हमेशा उन छिछले सवालियों से बचता फिरता हूँ जो लेखक कहने के बाद सुनने को मिलते हैं। तो क्या लिखते हैं? कहानियाँ किस बारे में हैं? नाटकों से गुज़ारा हो जाता है? कितना कमा लेते हैं? मैं कभी आपको अपनी कुछ कविताएँ सुनाऊँगा वगैरह-वगैरह।

“आप करना क्या चाहती हैं। मैं ये दावे से कह सकता हूँ कि आप वकील नहीं बनना चाहती हैं।”

“मैं नहीं जानती। अभी जॉब ढूँढ़ रही हूँ। पर पता नहीं।”

“अभी जो सबसे पहले आपके दिमाग में आए, वह क्या है जो आप करना चाहती हैं?”

“एक्टिंग... थिएटर पर कैसे... और क्यों? नहीं पता।”

“आपको एक बार आजमा के देखना चाहिए... बहुत सुंदर है थिएटर।”

मेरी इच्छा तो थी कि कह दूँ कि आप बला की खूबसूरत हैं और आपको तो हर चीज़ आजमा के देखनी चाहिए। पर मुझे लगा वह शायद इसका ग़लत मतलब निकाल सकती है, सो मैं सीधी बात कहकर चुप हो गया।

“आप कितने दिन हैं लियोन में?” उसने पूछा।

“बस दो दिन।”

“मैं भी बस दो दिन ही हूँ।”

एक अजीब असमंजस-सा माहौल बन गया। इसके बाद क्या कहना चाहिए कि चलो दो दिन साथ घूमते हैं? या यह ज़्यादा हो जाएगा। मैंने कहा, “आपको चॉकलेट पसंद है?”

“हाँ... बहुत।”

एक बहुत सुंदर दुकान से मैंने कुछ लोकल चॉकलेट ली थीं। मैंने उसे आधी दी और आधी खुद खाई। लियोन बस आने ही वाला था। ट्रेन में लोग अपना सामान लेकर गेट की तरफ़ जा रहे थे। “मैं कभी इंडिया आऊँगी... मतलब कोशिश करूँगी।”

“बिल्कुल।”

उसने भी अपना सामान समेटा। हम दोनों साथ-साथ चलते हुए गेट तक पहुँचे। जब प्लेटफ़ॉर्म पर उतरे तो वह मेरे पास आई।

“इट्स बीन लवली ट्रैवलिंग विथ यू।”

“सेम हियर।”

उसके बाद न उसे पता था और न मुझे पता था कि क्या करना है।

“आप बड़ी अभिनेत्री बन जाएँगी तो मैं लोगों को कहूँगा कि लूसी के साथ मैंने एक छोटी-सी यात्रा की है।”

वह हँसने लगी। हमने अनकहा-सा बॉय कहा और हम दोनों अपनी-अपनी भीड़ में खो गए। नया कमरा... नया बेड... नया पता। सारा कुछ नोट करके मैं लियोन के पुराने शहर की तरफ़ पैदल रवाना हुआ। जैसा कि सब लोग कह रहे थे, लियोन सच में बहुत सुंदर शहर है। कल ही लियोन में आतंकी हमला हुआ है। एक आदमी का चित्र भी सामने आया है, वह साइकिल पर है, उसने अपना चेहरा ढँका हुआ है। पूरे शहर में घूमते हुए मैं उस आतंकी हमले का एक चिह्न भी किसी के चेहरे पर नहीं खोज पाया। हर आदमी शांत, बेपरवाह। बस कुछ आर्मी के लोग गन लिए इक्का-दुक्का जगह दिखे। मैं पुल पर था और नए शहर से पुराने शहर की तरफ़ जा रहा था, तभी मैंने आँखें बंद की और एक मूक प्रार्थना की कि हिंसा बंद हो... कैसी भी... किसी भी तरफ़ से।

मुझे कभी-कभी लगता है कि मेरा घूमना बिल्कुल किसी बच्चे के घूमने जैसा है। मैं पूरे शहर को पैदल नापता हूँ और फटी हुई आँखों से पूरे शहर को और उसके दैनिक जीवन को निहार रहा होता हूँ। मैं कोशिश करता हूँ कि सुबह उठकर वहाँ के निवासियों के निजी अड्डों को खोजूँ, जहाँ वे अपनी पहली कॉफ़ी पीना पसंद करते हैं। जहाँ वे नाश्ता करना पसंद करते हैं। लगभग हर छोटे शहर में यह करना आसान होता है पर लियोन बहुत टूरिस्टिक शहर है। यहाँ सारे कैफ़े आपके मुँह पर हैं। मैं लियोन के उन हिस्सों में घूमा और घुसा जहाँ कम टूरिस्ट जाते हैं। सादी-सी कुर्सी-टेबलों के बीच आपको सबसे बेहतर कॉफ़ी मिलती है।

बच्चे जैसा और नास्तिक होने के कारण मैं कभी भी रिलिजन समझ नहीं पाया। सारे धर्म लगभग ग़रीबों और बीमार लोगों को मदद और प्रेम देने की बात करते हैं। उनकी सहायता की कहानियों से वे सब भरे पड़े हैं फिर मैं जिस चर्च में जाता हूँ, मंदिरों में, बाक़ी धार्मिक जगहों पर जाता हूँ तो कितना ज़्यादा पैसा है इनके पास। कितना ज़्यादा भव्य बनाकर रखते हैं हर एक चीज़ को। उसमें ग़रीब को कितना और कैसे प्रेम मिलेगा ये नहीं पता। मैंने इतने चर्च देखे हैं कि अब मैं थोड़ा थक चुका हूँ। अंदर जाता हूँ और लगता है कि बाहर आ जाऊँ तुरंत। इसी तरह म्यूज़ियम में भी जहाँ अमीरों की अमीरी का प्रदर्शन होता है, मैं बाहर निकल जाता हूँ। यह वैसा ही है कि मैंने अभी नदी में एक पाँच सितारा होटलनुमा क़ूज़ देखा जिसका नाम था वॉन गॉग।

अभी मैं अपने ट्रिप के मध्य में हूँ। जितने दिन बचे हैं उनका अभी भी तय नहीं किया है कि क्या करूँगा। बहुत चलने की वजह से मेरे पैर का अँगूठा दर्द कर रहा है और गर्दन

थोड़ी अकड़ी हुई है। आज सोचा थोड़ा देर से घर से निकलते हैं।

देर से बाहर आया तो यहाँ के एक खूबसूरत पार्क से होता हुआ निकला। मैंने देखा है कि मैं शहरों के पार्कों में चला जाता हूँ, शायद इसका बड़ा कारण निर्मल वर्मा हैं। उनके लिखे में इतना पार्क पढ़ा है कि कदम खुद-ब-खुद उस तरफ़ चल देते हैं, हमेशा किसी पार्क में आकर उनकी कहानी की कोई बेंच पड़ी दिख जाती है। लियोन के इस पार्क के भीतर ज़ू भी है। मुझे इंसानों की यह मानसिकता इतनी बीमार लगती है कि कैसे वह एक खूबसूरत जानवर को पिंजरे में बंद करके उसकी नुमाइश और हम अपने बच्चों को उन्हें देखने के लिए ले जाते हैं! कैसे? क्यों? मुझे अपना खुद का वहाँ से गुज़रना बहुत ज़्यादा तकलीफ़देह लगा।

उसके बाद मैं लियोन म्यूज़ियम ऑफ़ आर्ट गया। बहुत देर चित्त शांत नहीं था, फिर मैं म्यूज़ियम के इजिप्शियन आर्ट वाले हिस्से में पहुँचा। इजिप्शियन अवशेष देखने में बड़ी तसल्ली मिली। बाक़ी बहुत भव्य पेंटिंग्स और स्कल्पचर देखे। आँखें उनकी खूबसूरती को ज़ब करने में हमेशा नाकाम रह जाती हैं। क्या आँखें एक वक़्त के बाद रजिस्टर कर पाती हैं कि ये सामान्य नहीं बहुत खूबसूरत आर्ट है? मैं एक घंटे पूरी तरह वहाँ रहता हूँ फिर शरीर जवाब दे जाता है। मैं एक ब्रेक लेता हूँ। आर्ट गैलरी के कैफ़े में कॉफ़ी ऑर्डर करके लोगों को ताकता रहता हूँ। कौन है? किसके साथ आया है? वे क्या बात कर रहे होंगे? उसमें जितने अकेले लोग होते हैं उन्हें देखकर लगता है कि मैं भी ऐसा ही दिख रहा होऊँगा सबको। फिर वापिस घुसकर आर्ट के जंगल में विचरने लगता हूँ।

लगातार अकेले घूमने में आप कुछ दिनों बाद खुद को छोड़ देते हो। एक किस्म का उत्साह जो हर शहर को पहली बार देखने में होता है, वह अपनी स्थिरता पा जाता है। आप विचर रहे होते हैं। कुछ ही वक़्त में आप उस शहर का हिस्सा हो जाते हैं और आपको इसकी भनक भी नहीं लगती। कल Annecy के लिए खाना होना है। आज लियोन में मेरा आखिरी दिन था।

घर से देर से निकला और किसी अच्छे कैफ़े की तलाश में दो किलोमीटर चल लिया। रास्ते में खुद से ज़ोर-ज़ोर से बात करता चल रहा था। हँसी भी आ रही थी कि यह क्या कर रहा हूँ, पर यहाँ मुझे कौन जानता है? अकेला रहना आपसे जो न करवाए वो कम, पर मैं भीतर से बहुत खुश था। कल रात कहानी पर थोड़ा काम किया उसका नाम 'स्मगलर' रखा है। कहानी ने कुछ बड़े ही दिलचस्प मोड़ लिए। कैसे खुद के ही लिखे की गलियों में घूमते हुए लगता है कि कुछ नया दिख रहा है। जैसे ही कुछ नया दिखता है, मेरा पूरा शरीर उस ओर भागने के लिए उतावला हो जाता है। इतनी दूर कैफ़े की तलाश भी इसलिए थी कि कहीं बैठकर वापिस उस कहानी पर काम करने का मन था। अब वह कहानी इस शहर से ज़्यादा सुंदर हो चली थी।

चलते हुए अचानक निगाह पॉल कैफ़े पर पड़ी। पेरिस के बाद पॉल कैफ़े पहली बार दिखा मुझे। मेरे क़दम खुद-ब-खुद उस कैफ़े में चले गए। इच्छा हुई कि कैथरीन को मैसेज किया जाए कि मैं लियोन के पॉल कैफ़े में हूँ। मुझे पता है कि मैं यह कभी नहीं करूँगा। वह शायद अभी भी Cannes में है। शायद मेरी तरह उसने भी कई बार अपना फ़ोन निकाला होगा और कुछ शब्द टाइप किए होंगे। कभी-कभी सोचता हूँ कि अगर वह यहाँ आ गई तो मेरे अकेलेपन की बंजर ज़मीन पर कितनी सुंदर बारिश होगी। पॉल कैफ़े में कॉफ़ी पीते हुए कैथरीन के बारे में सोचना कितना सुखद है। उसके सुनहरे बाल, दिल वाला तिल, उसकी हँसी, आँखें...।

बहुत छोटे में नदी किनारे अपने दोस्तों के साथ बैठकर क़वायद करते हुए एक चीज़ भीतर घर कर गई थी कि अलग जीना है। अब सोचता हूँ कि अलग जीना क्या होता है? वह जो अभी तक देखा सुना है उससे अलग या अपने जीते रहने की परिपाटी से अलग? होशंगाबाद में जब तक तैराक रहा था, लगता था कि मैं अलग हूँ, पर फिर जब भोपाल आया और नैशनल खेलने लगा तो लगा कि ये तो सभी कर रहे हैं... मैंने तैराकी छोड़ दी। जब अचानक भोपाल में एक छोटा कमरा लेकर बत्ती वाले स्टोव में दाल बनाना सीख रहा था, तब लगा शायद यह अलग जीना है... पर अलग जीना यह भी नहीं है, क्योंकि बत्ती वाले स्टोव तो लगातार बिक ही रहे थे। मतलब और भी लोग थे जो इस स्टोव का इस्तेमाल करके इस तरह जी रहे थे। मुझे अपने पहले के भोलेपन पर अभी हँसी आती है, पर फिर भी अलग जीने की क़वायद कभी ख़त्म नहीं हुई। जब मुंबई आया था तो टी. वी. और फ़िल्मों में काम करने पर पता नहीं पृथ्वी थिएटर ने कब अपनी गिरफ़्त में ले लिया। सत्यदेव दुबे जी के साथ नाटक करते वक़्त लगा कि यह मैं अलग कर रहा हूँ। पर वह भी अलग जैसा नहीं था। तो क्या किया जा सकता है जिसे मैं पूरे मन से कह सकूँ कि ये है जो मैं एकदम अलग कर रहा हूँ। नाटक छोड़े, फ़िल्मों और टी.वी. में काम करना छोड़ा; क्योंकि कुछ भी अलग नहीं हो रहा था।

जब एक दिन अपने घर में अकेले बैठा था तो वापिस नदी पर अपने दोस्तों से किए संवाद याद आए। मुझे याद है कि वह संडे की दोपहर थी, मेरे घर में काम करने वाली ताई झाड़ू लगा रही थीं। मैं एक कोरे पन्ने के सामने सुबह से बैठा हुआ था और मैंने पहले कुछ वाक्य लिखे, "मैं लड़ रहा हूँ। मुझे लड़ना अच्छा लगता है। अकेले लड़ने का अपना मज़ा है।" ये शक्कर के पाँच दाने की शुरुआत थी। उसके बाद मैं फिर नाटक लिखता रहा। अगल-बग़ल वाले कहने लगे कि यह तुम एकदम अलग कर रहे हो। मुझे भी लगा कि हाँ यह तो अलग है ही शायद। फिर नाटक ही करता गया। पर कुछ ही देर में थक गया, अपने ही लिखे और किए में लगा कि मैं तो वही सब बार-बार कर रहा हूँ। फिर समझ आया कि अलग करना जो देखा-सुना है उससे अलग नहीं है। वो जो करते रह रहे हो उससे अलग करना है। फिर मैंने कुछ एकदम अलग फ़िस्म के नाटक किए तो मन को एक तसल्ली मिली कि हाँ ये वही नहीं है। ये वहीं रहकर कुछ अलग है। अलग करने की परिभाषा भीतर

कुछ बदली थी। पर ये तो काम हुआ, जीना तो वैसा का वैसा ही चल रहा था। सोचा जीना ज़्यादा ज़रूरी है। वह अलग है तो सारा कुछ अलग ही निकलेगा। एक महीने के लिए मेक्लॉडगंज चला गया। उस वक़्त पैसे भी बहुत कम होते थे। सौ रुपये वाले कमरे में पूरे एक महीने बहुत मुश्किलों से कटे पर पढ़ने का सिलसिला बहुत अच्छा शुरू हुआ। उस अलग जीने का लिखे पर असर बहुत कम हो रहा था। लिखे के असर बहुत देर बाद दिखते हैं। अलग जीने में खुद का बदलना मैं देख पा रहा था। लगा मुझे लगातार अकेले जीना होगा, तब कहीं जाकर अलग किस्म के वाक्य भीतर से निकलेंगे।

इस अलग जीने में एक दिन कविता साथ छोड़कर चली गई। अब कविता लिखना बेमानी लगने लगा। मैंने उसे जाने दिया। उसके बदले लंबे किस्से भीतर से झाँकने लगे। जब उन्हें दर्ज करना शुरू किया तो वे नाटक नहीं कहानियों की शक्ल में बाहर आए। मैं महीने भर मंडी के ऊपर एक गाँव में चला गया। फिर बेंगलुरु, कोरिया, न्यूयॉर्क। अपनी इस अलग जीने की ललक में फिर लगने लगा कि असल में आश्चर्य बहुत ज़रूरी है। बच्चों-सी आँखें फटी रह जाना कितना ज़रूरी है। कुछ अलग हो तो ऐसा कि वह पहले आश्चर्य का स्वाद दे। मैंने अपना सामान बाँधा और स्पेन चला गया। वहाँ भाषा, खाना, लोग सब अलग थे। उसमें कंधे पर बैग टाँगे लगातार चलता रहा। यह पहली बार जैसे आश्चर्य के बहुत करीब था। वहीं, रुके पड़े एक नाटक को पूरा किया और वह अपनी सारी कठिनाइयों के बावजूद पूरा हुआ अपनी पूरी सरलता में। एक आदर की भावना भीतर जमा होने लगी, इस दुनिया के प्रति और इसकी सादगी के प्रति। लगा ये दुनिया बहुत बड़ी और बहुत सुंदर है। इसमें विचरण करते रहने के अलावा कोई भी दूसरा आश्चर्य या मक़सद नहीं है। अब सिर्फ़ एक बहाना भर ही चाहिए होता है और मैं अपना बैग बाँध लेता हूँ। आज भी, कुछ अलग जीने की तलाश, जो नदी किनारे अपने दोस्तों से क़वायद करने में शुरू हुई थी, वैसी की वैसी ही बनी हुई है। अभी भी बार-बार लगता है कि यह एकदम अलग है और अगले ही पल लगता है कि यह तो बिल्कुल वैसा का वैसा ही है, जैसा जीते आ रहे थे। पर इस बहसबाज़ी में अलग जीने की खोज के असर अपने ऊपर, अपने काम के ऊपर मैं लगातार देखता रहता हूँ। हर यात्रा ख़त्म होती है तो उसके छिले के निशान शरीर पर किसी टैटू की तरह सदा के लिए जम जाते हैं। किसी अकेले क्षण में उस टैटू को सहलाने में बहुत आनंद आता है। चाहे इन यात्राओं का इतना ही फल हो, लेकिन यह फल बेहद महत्वपूर्ण है।

आज लियोन में अचानक ठंड हो गई। बादल, हवा और सिहरन और इन सबके साथ मुझे हमेशा पुराने काँपते हुए दिन याद आते। कितनी ही जगहों में कितनी ही बार यूँ काँपते हुए मैंने कोने तलाशे थे। कुछ देर सुस्ताने की इच्छा भीतर लिए हुए।

मेरा दाहिने पैर का अँगूठा बहुत वक़्त से दर्द कर रहा था। तभी नए लियोन शहर से पुराने लियोन शहर में पुल पार करते हुए एक ठोकर में बाएँ पैर के अँगूठे पर भी चोट लग गई। अब दोनों बराबरी से दर्द करने लगे। मेरे दिमाग़ में भी हमेशा यात्रा वृत्तांत और कहानी दोनों कुछ इसी तरह साथ चलती हैं। दोनों अँगूठे के दर्द के समान। आज शायद चलना कम होगा तो आशा करता हूँ कि लिखना ज़्यादा होगा। एक अच्छे यात्री के पास इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है कि वह अपनी हर मुश्किल में कोई अच्छाई ढूँढ़ ले।

दिन भर पुराने लियोन शहर को निहारकर मैं एक पार्क में आकर बैठ गया। पीछे एक कैफ़े से पियानो का मधुर स्वर आ रहा था। आगे लगभग पूरी बिल्डिंग एक आर्टवर्क से ढँकी हुई थी। मैं बहुत देर तक उस स्ट्रीट आर्ट की बारीकी को देखता रहा। बग़ल में कुछ अमेरिकन लड़के-लड़कियाँ हँसते हुए एक दूसरे को मज़ाक़िया क्रिस्से सुना रहे थे। सामने कुछ कबूतर इधर-उधर भागते हुए अपना खाना तलाश रहे थे। उनकी तलाश मुझे अपने से सबसे ज़्यादा क़रीब लग रही थी। बहुत देर बैठे हुए मैं उनकी तलाश देखता रहा। मैंने अपने बैग से निकालकर एक ब्रेड का टुकड़ा उनकी तरफ़ फेंका। तीन कबूतरों को ब्रेड के होने की भनक लगी और वे उस तरफ़ आए। पर उस ब्रेड के टुकड़े के अगल-बग़ल घूमते रहने के बावजूद उन्हें वह ब्रेड का टुकड़ा नहीं दिखा। वह जितना ज़्यादा खोजते उतना उससे दूर होते जाते। मुझे लगा कि यह कितना ज़्यादा मेरे जैसे हैं। ब्रेड का टुकड़ा मेरी लिखाई है और मैं ठीक उसके अगल-बग़ल में रहकर भी ठीक उसे पकड़ने में असमर्थ रह जाता हूँ। कुछ देर में एक कबूतर जो उस ब्रेड के टुकड़े को तलाश नहीं रहा था। अचानक उसे वह मिल गया। मुझे हँसी आने लगी।

तभी देखा मेरे बग़ल में एक लाल बालोंवाली लड़की लियोन का मैप खोलकर कुछ बड़बड़ा रही है। मैंने उसकी तरफ़ देखा, उसने अपनी बड़बड़ाहट में मुझे भी शामिल कर लिया। वह शायद स्पैनिश बोल रही थी। मैं उसके सारे गुस्से में हॉ-हॉ करता रहा। मैं उसे निराश नहीं करना चाहता था। वह नक्रशे में कुछ ढूँढ़ रही थी। मैंने नक्रशे में झाँककर देखा और कंधे उचका दिए कि हॉ वह सही कह रही है, नक्रशा बहुत अजीब है वाली शक्ल बनाकर उसे देखने लगा। तभी उसे कुछ मिला। उसने मुझे नक्रशे में उँगली से कुछ दिखाया। मैं भी उस तरफ़ देखकर खुश हो गया और कंधे उचकाकर ऐसा चेहरा बनाया जिससे पता लगे कि सब तो वहीं है, बस हम ही नहीं देख पा रहे हैं। वह लाल बालोंवाली लड़की मेरे चेहरे से सहमत हुई। उसने अपना नक्रशा वापिस बैग में रखा और पानी की बोतल निकालकर पानी पिया। अब मैं थोड़ा बैचेन होने लगा क्योंकि अगर वह अब मुझसे बात करने लगे तो मैं बुरी तरह पकड़ा जाऊँगा और वह मुझ पर इल्ज़ाम भी लगा सकती है कि तुम इतनी देर तक मुझे मूर्ख बना रहे थे। सो मैंने अपने ईयर पॉड निकाले और अपने कानों में लगा लिए। वह मेरी तरफ़ मुखातिब हुई, पर उसने देखा कि मैं अपने संगीत में मग्न हूँ तो इशारे से धन्यवाद दिया और चली गई। मैंने ठंडी साँस ली। उसके जाते ही मैंने ईयर पॉड कानों से निकालकर एक सिगरेट जला ली और सोचा अब जो भी आएगा साफ़ कह दूँगा गुरु या तो अँग्रेज़ी में बात करो या नमस्ते। मुझे इन टुच्चे झूठों से पूरी तरह छुटकारा चाहिए।

यूरोप में घूमना और यूरोप में लिखना। किस बात में ज़्यादा मज़ा आता है कहना मुश्किल है। लेकिन जब कुछ अच्छा लिखकर चाल में एक उछाल आती है, उस वक़्त घूमने में और मज़ा आता है। चाहे वे फिर दो ईमानदार वाक्य ही क्यों न हों! कभी-कभी वे भी एक अच्छी फ्रेंच कॉफ़ी की तरह भीतर तक तृप्त कर देते हैं।

लियोन छोड़ते समय वापिस अपने पसंदीदा कॉफ़ी हाउस में गया, जहाँ बहुत वक़्त तक लिखने की उलझनों से जूझता रहा था। यह मेरा एक तरीक़ा है धन्यवाद कहने का उन

जगहों को जिनकी ज़मीन ने कहानियों और यात्रा-वृत्तांत की उड़ान के लिए एक खुला आसमान दिया। अभी यात्रा के मध्य में हूँ और कुल जमा भारीपन बटोर लेता हूँ किसी भी शहर को अलविदा कहने में। फिर पता नहीं कब मुलाकात हो या न भी हो। ऐसे में जब चलते हुए मैं अपने कमरे की तरफ़ आ रहा था तो एक टीस-सी थी कि क्या इन रास्तों पर फिर कभी नहीं चलना होगा? सारे जवाब भविष्य में हैं और मैं कभी भविष्य के बारे में सोचना पसंद नहीं करता हूँ। मैंने अपने तरीके से अपने कुछ पसंद के पेड़ों और दीवारों को चूमकर अलविदा कहा।

घर में आते ही Annecy को लेकर एक गुदगुदी-सी थी। पता नहीं क्यों मुझे शुरू से लग रहा था कि Annecy बहुत खूबसूरत होगा। देखते हैं।

“On the whole I have received better treatment in life than the average man and more loving kindness than I perhaps deserved.” - Grank Harris

सुबह आज बहुत सुबह ही हो गई। बाहर बादल छाए हुए थे। खिड़की से बाहर झाँका तो पाया रात बारिश हुई थी। सड़कें अभी तक गीली थीं। मोबाइल पर संगीत लगाया और कॉफ़ी बनानी शुरू की। अपने सूटकेस को बिखरा हुआ देखकर लगा कि कैसे यह सारा सामान इसमें वापिस समा जाएगा। अपनी पैकिंग खत्म करके मैं कॉफ़ी लेकर अपने बिस्तर पर आ गया। इस खूबसूरत सुबह में कॉफ़ी के साथ Anthony Bourdain का साथ था।

जिन शहरों को आप अपनी आँखें फाड़कर आश्चर्य से देखते और उनका गुणगान करते नहीं थकते, और तभी आप वहाँ के लोकल लोगों को देखते हैं जो अपनी दिनचर्या में व्यस्त हैं और उस शहर को भाव तक नहीं देते। तब आपको जलन होती है। मूर्खता यह है कि आप उन्हें समझाने जाते हैं कि आपका शहर कितना कमाल है।

ट्रेन में बैठा ही था कि बारिश शुरू हो गई थी। फ़्रांस के पहाड़ बहुत खूबसूरत हैं। ट्रेन में बैठे हुए कभी कुछ पढ़ रहा था, कभी बाहर देख रहा था। ट्रेन से Aix-les-Bains में उतरा। बारिश कुछ थमी थी। एक पहाड़ी छोटा शहर, वहाँ से बस थी Annecy के लिए। बस में बैठते ही बारिश बहुत ज़ोरों से शुरू हो गई। आज सुबह बहुत जल्दी उठ गया था तो पूरे सफ़र में ऊँघता रहा। आधे घंटे में Annecy आ चुका था। हवा, बारिश और थोड़ी ठंड बढ़ गई थी। पता नहीं क्यों पहाड़ों में बारिश को देखकर मुझे हमेशा ‘कच्चे और काला पानी’ कहानी याद आती है। मैप में देखा कमरा सोलह मिनट की दूरी पर था। सोलह मिनट इस बारिश में मुश्किल होगी। बस ही दूसरा तरीका रह गया था। बहुत इधर-उधर भटकने पर सही बस तक पहुँचा। दो स्टॉप बाद उतरा और बारिश में भीगता हुआ तेरह नंबर बिल्डिंग में पहुँचा। कभी ठीक से समझ नहीं पाया कि एयरबीएनबी वाले फ़्लैट नंबर

क्यों नहीं लिखते। इंस्ट्रक्शन में लिखा था कि लॉक बॉक्स में चॉबी होगी पर लॉक बॉक्स कहाँ है ये नहीं लिखा था। जिसका घर था उसका नाम एलेक्स था—ऑस्ट्रेलियन। उसे बारिश में नीचे खड़े होकर मैसेज किए। करीब एक घंटे बाद उसका जवाब आया। जब तक वह भागता हुआ आया तब तक मैं बुरी तरह भीग और त्रस्त हो चुका था। अब यहाँ से मुझे पता था कि सारा कुछ एकदम कमाल होने वाला है क्योंकि मैंने देखा है जब किसी भी यात्रा की शुरुआत खराब होती है तो पूरी-की-पूरी यात्रा में नया सुंदर आश्चर्य और प्रसन्नता बनी रहती है। मैंने एलेक्स से सामान्य-सी बातचीत की। अपना सामान रूम में रखा और सीधा ओल्ड टाउन Annecy की तरफ़ रवाना हुआ। जैसे ही पुराना शहर शुरू होता है आपको लगता है कि यह शहर किसी कलाकार ने तराशकर बनाया है। ठीक बीच शहर से एक नहर हरे पानी की चलती है। छोटे-छोटे ब्रिज बने हैं और आस-पास बहुत सारे कैफ़े। एक तरफ़ बड़ा-सा तलाब है और उसके ऊपर पहाड़ जो इस वक़्त बादलों से ढँके हुए हैं। इतने सबके बीच भी मैं बहुत देर से यहाँ-वहाँ चलते हुए उस एक कैफ़े की तलाश में था जहाँ आराम से बैठकर लिखा जाए। पर्यटकों की अफ़रा-तफ़री से थोड़ा अलग। दो कैफ़े में अलग-अलग बैठकर देख चुका था पर कहीं भी वह स्थिरता नहीं मिली। फिर बीच शहर में नहर के किनारे एक छोटा-सा कैफ़े दिखा—Café des Arts, भीतर दीवारों पर पेंटिंग्स लगी हुई थीं। माहौल पुराने ज़माने के किसी कैफ़े का था। जैसा कि पुरानी फ़्रेंच फ़िल्मों में देखने को मिलता था। मैंने भीतर जाकर हॉट चॉकलेट ऑर्डर की। पिछले कुछ दिनों से हॉट चॉकलेट पसंद आने लगी थी। हॉट चॉकलेट होंठों से छूकर 'स्मगलर' कहानी पर काम करना शुरू किया।

कहानियों का एक चक्रव्यूह होता है, जब आप उसे लिख रहे होते हैं। बहुत देर तक आपको लगता है कि आप चक्रव्यूह के दायरे तराश रहे होते हैं, पर कुछ ही वक़्त बाद चक्रव्यूह आपको अपने भीतर खींच लेता है। आप गोल-गोल भटक रहे होते हैं अपने ही बनाए चक्रव्यूह के जाल में। अब कौन किसे लिख रहा है, यह जानना बहुत कठिन है। जब नहीं लिख रहे होते हैं, तब वह चक्रव्यूह ज़्यादा हरकत कर रहा होता है आपके भीतर। हर किसी अकेले क्षण में जब मुस्कुराहट चेहरा छूती है तो इसका मतलब है कि चक्रव्यूह का एक हिस्सा आपको मिल गया जिससे उसको भेदा जा सकता है। पिछले कुछ दिनों से या तो मैं साइकिल चला रहा था या इस कहानी के चक्रव्यूह में फँसा हुआ था। आज सुबह इसके बाहर आकर इसे देखा तो इतनी संतुष्टि मिली कि मैं बयाँ नहीं कर सकता। स्मगलर कहानी आज सुबह पूरी हुई। मैंने अपने लिए एक चाय बनाई और अपने पब्लिशर (शैलेश भारतवासी) को कहानी भेजने के पहले उसे एक अंतिम बार देखा। अंतिम बार कहानी के संग बिल्कुल ऐसा ही लगता है, जब मैं आखिरी बार किसी शहर में अपनी अंतिम कॉफी पीता हूँ। उस शहर में बिताए दिनों को कुछ इस तरह पढ़ता हूँ कि मानो सरसरी तौर पर आखिरी बार कहानी जी रहा हूँ। इन यात्राओं में इन खुशियों का कोई मोल नहीं है।

साइकिल किराए पर लेकर Annecy के तालाब किनारे करीब डेढ़ घंटे तक साइकिल चलाता हुआ मैं वहाँ पहुँचा, जहाँ पैराग्लाइडिंग होती है। यह मेरा पहला अनुभव होगा पैराग्लाइडिंग का। हम कुछ लोग मैदान में जमा थे ऊपर पहाड़ों पर जाने के लिए। मैं इंतज़ार के दौरान, उत्साह में, एक बियर पीने लगा। एक बूढ़ी औरत भी हमारे साथ थी। मैंने पता किया तो पता चला उनकी उम्र नब्बे बरस है और आज उनका जन्मदिन है, इसलिए उनके बेटे ने उनको पैराग्लाइडिंग बतौर गिफ़्ट दिया है। उसके बाद मैं बस उनका चेहरा ही देखता रहा। कितनी प्रसन्न थीं वह अपनी पहली पैराग्लाइडिंग फ़्लाइट के लिए! मैं अपना उत्साह भूलकर उनके उत्साह में शामिल हो गया। हम जब ऊपर पहुँचे तो हम सबने मिलकर उन्हें तैयार करवाया। वह एकदम शांत थीं। गाइड बार-बार पूछ रहा था कि आप ठीक हैं? आपको कैसा लग रहा है? वह कुछ फ्रेंच में जवाब देतीं उससे सब हँस देते। जब वह उड़ान के लिए एकदम तैयार थीं तो मैं उनके बेटे को देख रहा था जो अपनी माँ को इतने स्नेह से देख रहा था कि मानो वह एक छोटी बच्ची हों। वात्सल्य उल्टा बह रहा था। ज्यों ही उन्होंने उड़ान भरी हम सबने ज़ोरदार ताली बजाई। मुझे लगा कि अब मेरे उड़ने में शायद मुझे उतना मज़ा न आए जितना उन्हें उड़ता देखने में आया। और यह हुआ भी। मैं अपनी उड़ान में बहुत ज़्यादा उत्साह में नहीं था। हम कूदे और ऊपर उड़ना चालू किया। मेरा गाइड मुझे ऊपर से Annecy की सारी जगहों को बता रहा था। कुछ देर के बाद मैंने उससे कहा कि वह चुप हो जाए और मेरी तस्वीर भी न खींचे, मुझे चुप रहना है। उसे लगा कि मेरी तबियत ठीक नहीं है या कुछ ग़लत है। मैंने अपना चेहरा ऊपर उठाकर उसे दिखाया कि देखो मैं मुस्कुरा रहा हूँ और सब ठीक है। फिर मैंने उसको कहा कि चलो ग्लेशियर के करीब चलते हैं। हम बिल्कुल शांति, बिना किसी आवाज़ के पहाड़ों और बर्फ़ के ऊपर से गुज़र रहे थे।

कभी-कभी ऐसा होता है कि जिन क्षणों में आपने सोचा होता है कि आपको बहुत ज़्यादा मज़ा आएगा, और आपने कल्पना भी की होती है कि आप उस मज़े में ये करेंगे... आप क़तई वैसा कुछ नहीं करते हुए खुद को दिखते हैं तो लगता है कि इस वक़्त मैं क्या महसूस कर रहा हूँ? शायद यह इतने विशाल पहाड़ों का असर है कि मैं चुप हो गया हूँ। इन्हें ऐसी चुप्पी में देखना कितना सुखद है। ये जैसे हैं, इनके सामने कैसे इससे ज़्यादा हरकत की जा सकती है। मेरा बस चले तो मैं हिलूँ भी न, बस इन्हें इनकी स्थिरता में निहारता रहूँ। मैंने भीतर से उस नब्बे साल की महिला को धन्यवाद दिया कि उनके कारण मेरा बेकार का उत्साह उड़ने के पहले ही ख़त्म हो गया था और अब मैं इसे एक धीमे संगीत की तरह क़तरा-क़तरा जी रहा था। क्या चील को इतनी ऊपर से ऐसा ही लगता होगा? हम गोल-गोल घूमते हुए Annecy के बड़े से तालाब के ऊपर उड़ने लगे। मुझे ठीक इस वक़्त पता था कि एक दिन मैं इसे सपने में देखूँगा, मतलब खुद को उड़ते हुए। यह पहली बार हुआ था कि मुझे पता था कि मुझे इसका सपना आएगा और पता है कि सपने में नीचे तालाब नहीं होगा। नीचे मेरा गाँव होगा, ख़्वाजाबाग़ होगा, कश्मीर होगा, वह होगी, उसका भागना होगा, मेरा खोया बचपन होगा, दोपहरें होंगी, पिता का चेहरा होगा,

नींद होगी, थकान होगी और होंगी वे सारी चीज़ें जिन्हें सपनों में जगह नहीं मिलती हैं—टूटी हुई, बिखरी हुई।

जब हम नीचे आए मेरा उत्साह सातवें आसमान पर था। मेरे पायलट को अजीब लगा। उसने कहा कि आप पहले आदमी हैं जो ऊपर आसमान में चुप थे और नीचे ज़मीन पर आकर हँस रहे हैं। मैंने उससे कहा कि बड़े पहाड़ों के जितने करीब मैं खुद को पाता हूँ, उतना चुप हो जाता हूँ, मेरे बस में नहीं है, वे चुप कर देते हैं। उसने कंधे उचका दिए। जवाब में मैंने भी वही किया। उड़ने के बाद मैं तालाब के किनारे देर तक बैठा रहा। इस अंजान शहर के आसमान को मैं निहारता रहा जहाँ अभी कुछ वक़्त पहले मैं था। आनंद की ज़मीन थी जिस पर मैं लेट गया था।

वापिस आते वक़्त, साइकिल से, उस एक घंटे के रास्ते को मैंने करीब तीन घंटे में तय किया। इतना ज़्यादा ख़ूबसूरत रास्ता था। अगल-बग़ल गुज़रते सुंदर घर, खेती, छोटे गाँव और फूल... इतने ज़्यादा अलग-अलग रंगों के फूल कि हर बार मैं रुक जाता। धीमी गति से साइकिल चलाते हुए मेरी आँखें सड़क के अलावा चारों तरफ़ मँडरा रही थीं। गहरे हरे पेड़ों से दोनों तरफ़ भरा रास्ता, एक तरफ़ पहाड़, दूसरी तरफ़ तालाब और बीच-बीच में आते कुछ कैफ़े। मेरे कानों में संगीत बज रहा था और मुझे लगा मैं साइकिल पर नहीं हूँ। मैं ज़मीन से डेढ़ इंच ऊपर उड़ रहा हूँ।

एक कैफ़े में बैठे हुए मेरी दोस्त राखी का मैसेज आया। वह मेरी यूरोप और श्रीलंका आदि यात्राओं की साथी थी। हम अक्सर यात्राओं के दौरान बात करते थे कि यात्राएँ भीतर कितना महीन, बारीक-सा बदलाव करती हैं। बहुत वक़्त बाद वे बदलाव हमें दिखते हैं और हम कहते हैं कि हाँ उस यात्रा में कितना छोटा बदला था ये, पर आज उसका कितना बड़ा फ़र्क़ देखने को मिल रहा है। उसने पूछा कैसा चल रहा है यूरोप प्रवास? मैंने कहा कि अब मैं अकेले की जाने वाली यात्राओं में थोड़ा बहुत सहज हो रहा हूँ, हाँ कभी-कभी बहुत अकेलापन लगता है, पर लिखना उसमें सबसे बड़ा साथी है। वह खुश हुई यह सुनकर। फिर उसने पूछा अगर तुम्हें इतना पसंद है तो क्या तुम सोचते हो कि कभी तुम हमेशा के लिए ऐसी किसी जगह में रह सकोगे? मैंने साफ़ मना कर दिया। मेरे लिए यह बहुत ज़्यादा व्यवस्थित है। मतलब प्लास्टिक दिखने की हद तक। मुझे मेरे देश के पहाड़ ज़्यादा पसंद हैं। वह हँसने लगी और कहने लगी मैं जानती थी। फिर उसने पूछा तो अभी तक यात्रा में क्या सीखा? मैंने कहा पहले-पहले एक हड़बड़ी मची रहती थी कि कहीं कुछ छूट न जाए, मैंने सब देख लिया कि नहीं... सारी पसंद वाली, नापसंद वाली जगहों पर कूद-कूदकर जाता था। उसमें से आधी चीज़ें याद भी नहीं रहती थीं। आधी क्या लगभग चीज़ें याद नहीं रहती थीं। अब थोड़ा calm हो गया हूँ। अब लगता है कि मैं बस इन सबमें से गुज़र रहा हूँ। ये सब पहले भी था और आगे भी रहेगा। अब मैं सिर्फ़ उन्हीं जगहों पर जाता हूँ, जहाँ बहुत मन होता है और वहीं बैठकर लिखता हूँ, जहाँ मेरा लेखन मुझसे बैठकर बातें करता है। अचानक मुझे लगा कि मैं कुछ ज़्यादा ही बोल रहा हूँ, पर वह भी यात्री है। वह मेरा

अकेलापन समझती है। उसने कहा कि मैं तुम्हें ये सब कहते हुए सुन सकती हूँ। मैंने भी खुद को ये सब कहते हुए सुना। फिर लगा कि ये मैं नहीं असल में वह मुझे कह रही है। एक तरह की सांत्वना इस अकेलेपन में वह मुझे दे रही हैं। किसी से बातचीत में वह रेखा पता नहीं लगती कि कब हम उससे बात कर रहे होते हैं और कब हम खुद से कुछ कहते पाए जाते हैं।

यहाँ Annecy के बीच चौक में एक कैफ़े में बैठा Anthony Bourdain की किताब पढ़ रहा था, तभी एक बच्चा दिखा जो अपने अगल-बगल की पुरानी ऊँची इमारतों को देखता हुआ जा रहा था। जब वह एकदम ऊपर देखने की कोशिश करता उसकी टोपी गिर जाती, वह टोपी उठाता और फिर ऊपर देखता। वह टोपी फिर गिर जाती। धीरे-धीरे यह उसका खेल बनता जा रहा था। किस क्रूर मुझे लगा कि इन शहरों में अगर कोई मुझे चलता हुआ देखे तो मैं भी इस बच्चे जैसा ही दिखता होऊँगा। वह टोपी के खेल में उलझा है और मैं कहानियों के, पर हम दोनों के आश्चर्य बहुत एक जैसे हैं।

बहुत पहले मैं सोचता था कि कुछ लोगों ने मिलकर षड्यंत्र रचा है हम सारे मनुष्यों के खिलाफ़। हमें लगातार व्यस्त रखने का षड्यंत्र। कुछ इस तरीके का सामाजिक तंत्र का निर्माण किया है कि आप पैदा होने से लेकर अपनी मृत्यु तक व्यस्त रहते हैं। उस व्यस्तता में कुछ प्रलोभन हैं जिनके कारण लगता है कि आप स्वयं अपने जीवन के कर्ता-धर्ता हैं, परंतु ये प्रलोभन भी किसी और के दिए हुए हैं। सफल और खुश रहने के चित्र इस क्रूर आपको बचपन से दिखाए जाते हैं कि आप बस उन चित्रों को पूरा करने में ही खुशी ढूँढ़ने लगते हैं। अपना एक जीवन-साथी होना चाहिए, फिर एक परिवार, फिर उसका एक चक्र और फिर उस चक्र से अंतिम साँस तक आज़ादी नहीं है। इस बीच आपका सारा श्रम किसी अमीर आदमी को और अमीर आदमी बनाने में लगातार इस्तेमाल में लिया जाता है। कितना ही दूर जाकर देख लें, वह दूर जाकर देखने का भी एक सामाजिक ढाँचा है। इस बनाए षड्यंत्र से बचाव नामुमकिन है। अभी यहाँ Annecy के चौक पर बैठे हुए इसलिए यह खयाल आया क्योंकि मुझे लगा था कि मैं फ़्रांस के छोटे शहरों में घूमूँगा, जहाँ कम लोग होंगे, सुंदर तालाब, पहाड़... पर इतनी दूर आकर भी मैं असल में एक पर्यटक ही हूँ। जिन चीज़ों को देखकर मैं तस्वीर लेना चाहता हूँ, जब पीछे पलटता हूँ तो पूरा बाज़ार खड़ा देखता है, उन चीज़ों की तस्वीर लेने के लिए। हर आदमी परिवार के साथ या अपनी प्रेमिका, पत्नी के साथ यहाँ दिखता है और हर आदमी बिल्कुल दूसरे आदमी जैसा लग रहा होता है। मानो एक जोड़ा अभी-अभी निकले दूसरे जोड़े की फ़ोटो कॉपी है। एक परिवार अपनी बच्ची के साथ जिस तरह अभी निकला, दूसरा परिवार उसकी नक़ल करता हुआ बिल्कुल वैसे ही निकले। मैं अपने आपको झंझोड़ता हूँ और वहाँ से दूर निकल जाता हूँ।

एक बोट क्लब जैसा है तालाब के किनारे। बहुत-सी बोट खड़ी हैं और सबके अपने दाम हैं। मैंने सोचा चलो एक बोट लेकर तालाब के भीतर चला जाए। मैंने पता किया तो उनके पास एक भी बोट एक आदमी के लिए नहीं थी। टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में उस बोट कंपनी के मालिक ने कहा, “नो, टू पीपल आर मोर... नो सिंगल।” यह समाज अकेले आदमी की कल्पना ही नहीं करता है। आपको इसका ज़्यादा अंदाज़ तब होता है, जब आप किसी टूरिस्ट जैसी जगह पर फँस जाते हैं। किसी अच्छे बड़े रेस्त्राँ में भी जाओ तो वेटर एक बार आकर ज़रूर पूछता है कि “Is someone joining you sir?” आपके मना करते ही उसका चेहरा उतर जाता है। इसलिए मैं हमेशा कोशिश करता हूँ कि सड़क पर खाना खाऊँ या छोटे होटलों में जाऊँ ताकि उनको मेरे अकेले आने पर ज़्यादा पछतावा न हो।

जब मैंने यूरोप-यात्रा प्रारंभ की थी तो सोचता था कि ये लोग कॉफ़ी के साथ रोज़ सुबह Croissant क्यों खाते हैं? एक दो दिन मैंने भी खाने की कोशिश की फिर क्रसम खाई कि नहीं खाऊँगा। पर मैं सुबह हमेशा जल्दी घर से निकल जाता हूँ और छोटे शहरों में Croissant के अलावा नाश्ते में कुछ नहीं मिलता है। कुछ दिनों तक मैं खाता रहा, पर हर बार सोचा कि कल से ये नहीं खाऊँगा। आज पंद्रह दिनों बाद हालत यह है कि मैं रोज़ सुबह एक अच्छा Croissant कॉफ़ी के साथ तलाश रहा होता हूँ।

कल दोपहर तबियत थोड़ी नासाज़ रही तो वापिस अपने कमरे में चला गया। शायद तेज़ धूप और ठंडी हवा दोनों ने शरीर को तोड़ दिया था। करीब दस किलोमीटर चलने के बाद शरीर जवाब दे गया सो वापिस अपने कमरे पर आ गया। एलेक्स (जिसका ये घर है) हॉल में बैठा काम कर रहा था। मेरी उससे बात नहीं हुई थी (यूँ भी किसी से भी बात किए बहुत वक़्त हो गया था)। सो मैंने अपने लिए एक चाय बनाई और उसके साथ आकर बैठ गया। वह ऑस्ट्रेलियन है, अपनी यूरोपियन गर्लफ्रेंड के चक्कर में, कुछ साल पहले यहाँ आ गया। करीब एक साल पहले ब्रेक-अप हुआ पर Annecy शहर उसे इतना भाया कि यहीं सेटल हो गया। ब्रेक-अप का दुख उसके भीतर अभी भी है। लड़की को लेकर बहुत कड़वाहट है। पर बहुत जवाँ दिल लड़का है। बहुत सारी कंपनियों के लिए घर बैठकर काम करता है। उसने मेरी अब तक की हुई यात्रा के बारे में पूछा तो लगा कहाँ से शुरू करूँ। एक थकी हुई हँसी के बाद कहा कि भटक रहा हूँ और अब भटकने में भी एक तरीक़े का पैटर्न बन गया है जिससे दिक्कत हो रही है। उसने इस उत्तर की अपेक्षा नहीं की थी सो उसने अपना चेहरा आश्चर्य वाला बनाया और हँस दिया।

मैं जानता हूँ यहाँ ऊपरी बात करनी चाहिए कि बहुत मज़ा आ रहा है, यात्राएँ बहुत अच्छी होती हैं... वग़ैरह-वग़ैरह। पर इन ऊपरी बातों से थककर ही तो हम कुछ इस तरह की यात्राओं में खुद को पाते हैं। मैंने सोचा, जो महसूस किया वही कहना चाहिए। मैं ठीक इस वक़्त कुछ इस तरह का ही फ़ील कर रहा हूँ। एलेक्स ने कहा कि मैं प्लान कर रहा हूँ कि वीक एंड पर कहीं पहाड़ों पर जाकर एक रात गुज़ारी जाए। तुम आना चाहोगे। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने उससे कहा कि कृपया जल्दी प्लान बनाइए, जो भी खर्चा होगा मैं उठाने को तैयार हूँ। उसे मेरे इतने उत्साह की उम्मीद नहीं थी। उसने कहा कि मैं बस सोच रहा हूँ, अगर प्लान बना तो मैं तुमको मैसेज करूँगा। वह अपने काम में लग गया

और मैंने अपना लैपटॉप खोल लिया। बाद में उसने वह प्लान कैंसिल कर दिया जिसका मुझे बड़ा दुख हुआ। कुछ काम में व्यस्त रहने के बाद वह मुझसे बोला, “नहीं इस तरह की यात्रा आदमी तभी करता है, जब उसका दिल टूटा हो। कोई ब्रेक-अप कोई गर्लफ्रेंड का चक्कर है? जहाँ तक मुझे लगता है।”

मैं थोड़ी देर सोचता रहा कि काश मेरे पास कोई इस तरीके का ठोस कारण होता तो मैं भी अपनी इस यात्रा में कितनी सारी पीड़ा का आनंद ले रहा होता, पर फिर एक लेखक ने अपने छिछलेपन में एक कहानी इसके अंदर ढूँढ़ ली। सो अभी सारे संवाद मेरे बस में नहीं थे। ये बात एलेक्स को भी नहीं पता थी कि अब उससे एक लेखक बात कर रहा है, जो एक तरह की नाटकीयता का भूखा है।

“तुमने सही कहा, एक बहुत ही बुरा ब्रेक-अप हुआ है। मुझे लगा था कि बस यही है वह जिसके साथ अब मैं अपनी पूरी ज़िंदगी बिता सकता हूँ और मैं अपनी तरफ़ से पूरी तरह समर्पित भी हो चुका था जो अमूमन मैं क़तई नहीं होता हूँ। पर... (बात बीच में छोड़ना लेखक को ज़्यादा बड़ा लगता है) अब तुम समझ सकते हो कि यह कितना कठिन है।”

यह सुनते ही एलेक्स ने अपना लैपटॉप बंद किया और मेरी तरफ़ मुखातिब हुआ।

“क्या हुआ था?”

“हम दोनों लिव-इन में थे और उसे लगने लगा था कि मैं किसी और को पसंद करने लगा हूँ। जबकि वह मेरी बहुत ही अच्छी दोस्त थी। बस एक बार शक आ जाए तो उसका कोई इलाज तो है नहीं।”

“पर सच बताओ क्या तुम्हारा और तुम्हारी दोस्त का कुछ था?”

“अगर होता तो वह मेरी दोस्त इस वक़्त मेरे साथ ट्रेवल नहीं कर रही होती।”

“मेरे साथ तो एकदम उल्टा हुआ।” अब एलेक्स ने अपनी बात बताई।

“मैं कैनेडा में एक जॉब पर था, जब उससे मुलाक़ात हुई। कुछ महीने की दोस्ती के बाद हम दोनों साथ रहने लगे। वह वापिस फ़्रांस आना चाहती थी, क्योंकि उसका सारा काम यहीं था। मैंने भी सोचा मेरे लिए मेरे काम से ज़्यादा ज़रूरी है ये। हम दोनों पहले तो लियोन शिफ़्ट हुए, फिर अचानक उसे Annecy में अच्छा काम मिल गया। मैंने भी अपना जमा-जमाया लियोन का काम छोड़कर उसके साथ Annecy आ गया। फिर एक शाम मैं beach पर अकेला टहल रहा था और मैंने देखा वह एक लड़के को चूम रही थी। मुझे विश्वास नहीं हुआ। मैं उसके पास गया। जब मुझे पूरा विश्वास हो गया कि ये वही है तो मैं सीधा घर आ गया। मैं और दो महीने तक उसके साथ रहा। उससे अलग-अलग तरीके से पूछता रहा कि कहीं तुम्हारा किसी दूसरे से कोई संबंध तो नहीं है? वह हर बार साफ़-साफ़ मना करती रही। फिर एक दिन मुझसे रहा नहीं गया और मैंने कह दिया। तुम विश्वास नहीं करोगे उसने क्या जवाब दिया। उसने कहा कि kiss करने से क्या होता है?” बस वह हमारे संबंध का आखिरी दिन था।”

“फिर तुम वापिस ऑस्ट्रेलिया क्यों नहीं गए?”

“कैसे जाता? मेरे पैरेंट्स उससे मिलने आने वाले थे अगले हफ़्ते।”

“फिर।”

“फिर मेरे पैरेंट्स मेरी चिंता में यहाँ एक महीना रहे, और मुझे उनके साथ घूमते हुए सच में Annecy पसंद आने लगा।”

“वह कहाँ है आजकल?”

“वह शायद लियोन में रहती है। कुछ वक़्त तक मैंने उसे सोशल मीडिया पर स्टाक किया, पर तुम तो जानते हो... धीरे-धीरे आदमी सब भूल जाता है।”

“तुम्हारे भीतर थोड़ा गुस्सा है।”

“मेरे पिता को कभी वह पसंद नहीं थी। वह कहते रहते थे कि सही नहीं है ये। पर मैं सारा कुछ छोड़कर उसके पीछे घूमता रहा। गुस्सा इस बात का है कि इतने सालों में मैं कैसे नहीं देख पाया? तुम्हें पता है परसों के दिन उसने अपनी फ़ेसबुक पर क्या लिखा था?”

“क्या?” मैंने पूछा।

“तीन बजे रात में उसने लिखा कि I am feeling very lonely and cold... I need a warm hug.”

कैसे एक वक़्त की हम सबकी कहानी एकदम एक जैसी होती है! वैसी ही छोटी-छोटी तकलीफ़ों भरी बोरिंग और एक जैसी। और आश्चर्य है कि देश-प्रांत कुछ भी बदल जाए हमारी प्रतिक्रियाएँ एकदम एक जैसी हैं। इस बात को लेकर मुझे हँसी भी आ रही थी और आश्चर्य भी हो रहा था। एलेक्स उठा और अपने कमरे में चला गया। कुछ देर में बाहर आया तो उसने शार्ट्स और टी-शर्ट पहनी थी। उसने कहा, “आज दिन अच्छा है। मैं बाहर झील तक होकर आता हूँ।”

मैं क्या करूँ कुछ समझ नहीं आ रहा था। कहानी ख़त्म होने के बाद लगा कि एक बहुत ही करीबी दोस्त बीच यात्रा में साथ छोड़कर चला गया है। लैपटॉप खोलते ही भीतर एकदम ख़ालीपन भर गया। इन यात्राओं में अच्छे दोस्तों की कितनी ज़रूरत होती है। मैं अपने कमरे में गया और चित्त लेटा हुआ अगली कहानी के बारे में सोचने लगा। हर दरवाज़े के पीछे एक पूरा संसार खुलता है, जिस दरवाज़े पर दस्तक दो लगता है कि कितने सारे चेहरे इंतज़ार में बूढ़े हो रहे हैं। किसी एक वक़्त जो किसी कहानी के मुख्य पात्र बनते-बनते रह गए थे। फिर एक दरवाज़े को बिना दस्तक दिए खोला, वहाँ कोई नहीं था। मैं उसे बंद ही करने वाला था कि एक बूढ़ी औरत दिखी। वह थोड़ी झुकी हुई खड़ी थी, उसके कूबड़ था। मैंने उसके आस-पास देखा। उसके पास कोई कहानी नहीं थी। उस दरवाज़े के उस तरफ़ सब ख़ाली था और बस वह खड़ी थी—अकेली, झुकी हुई। मैंने दरवाज़ा बंद कर दिया। दूसरे दरवाज़े पर मैं दस्तक देने ही वाला था कि उस बुढ़िया का दरवाज़ा फिर खुल गया। मैंने वापिस बंद करने की कोशिश की, पर उस दरवाज़े का लॉक टूटा हुआ था और वह बंद नहीं हो रहा था। वह बुढ़िया चुपचाप बस देखे जा रही थी। मैंने उस दरवाज़े को वैसे ही छोड़ दिया। बुढ़िया धीमे क़दमों से चलती हुए मेरे पास आकर बैठ गई। मैंने एक कोरा पन्ना खोला और लिखा, “वह नदी किनारे पैदा हुई थी। वह बहुत सारी बूढ़ी होती

औरतों की तरह बूढ़ी हो चुकी एक बुढ़िया थी जिसके पास उसकी कोई कहानी नहीं थी।” यह लिखते ही मैंने उसकी तरफ़ देखा और वह मुस्कुरा दी। उसने कहा कि कहानी का नाम ‘घोड़ा’ रखना। मैं आश्चर्य से उसकी तरफ़ देखता रहा। ‘घोड़ा’ कैसे हो सकता है कहानी का नाम जबकि कहानी नदी से शुरू हुई है?

ज़िंदा बने रहने की निरर्थकता में बहुत से प्रलोभन जैसे सहारे चाहिए होते हैं, जो हमें इस बात से दूर रखें कि अंत में किसी का भी कोई मतलब नहीं है। इस जीवन का भी कोई मतलब नहीं है। हम कैसे भी सारे प्रयत्न करते हुए मतलब की रस्सी पकड़े रहना चाहते हैं। उस मतलब की रस्सी के दोनों सिरे कहाँ बँधे हैं, हमें नहीं पता... और ज्यों ही हम पता करने जाते हैं तो पता चलता है कि इसका कोई सिरा नहीं है। हम हवा में मतलब की रस्सी से लटके हुए बेमतलब दुनिया में उस बात के मानी तलाश रहे हैं, जिसका अंत में कोई मतलब नहीं है।

पीछे लिखा हुआ कुछ पढ़ रहा था, जब यात्रा की शुरुआत की थी। जो जैसा है वैसा का वैसा लिख दिया, इसमें एक मुक्तता तो है ही साथ ही यात्रा के भीतर हो रहे बारीक बदलाव भी नज़र आ रहे हैं। एक अजीब-सी बात जो ठीक अभी बैठे-बैठे महसूस की, जब नई कहानी पर काम शुरू किया, वह यह कि क्या मैं इस यात्रा से भी कुछ फ़ायदा उठाना चाहता हूँ? एक रिरियाती-सी इच्छा कि कुछ कहानियाँ लिख दूँ, कुछ कविताएँ... ताकि इस यात्रा का फ़ायदा दिखा सकूँ। पर किसे? क्यों? इस बात पर बहुत देर तक मैं कुछ लिख नहीं पाया। हर चीज़ में किसी भी किस्म के फ़ायदे की उम्मीद से मुझे शुरू से नफ़रत रही है। मैं जानता हूँ कि यह विचार आज दिन भर मुझे परेशान करेगा।

बहुत सोचने के बाद एक जवाब भीतर कौंधा था, जिसके कारण करीब तीन घंटे बाद मैंने वापिस अपना लैपटॉप खोला। यह यात्रा-वृत्तांत मेरा साथी है इस यात्रा में। हमेशा खाली चलती हुई इस यात्रा में बातचीत का एक तारतम्य बना हुआ है जो कहानियों से कहीं ज़्यादा पुख्ता है। यह है तो यात्रा में एक संवाद बना हुआ है जो मेरे खाली बीत रहे दिनों को हर बार रोमांच से भर देता है। शायद मैं अगर अपनी किसी काल्पनिक प्रेमिका के साथ यह यात्रा कर रहा होता तो ठीक ये सारे संवाद मैं उससे करना पसंद करता जो मैं अभी यहाँ दर्ज कर रहा हूँ। इसका सुख है। कहानियाँ साथ छोड़ देती हैं, पर यह यात्रा-वृत्तांत इस यात्रा के अंत तक मेरा साथ देगा। मैं जानता हूँ, और हर दिन के बीतने पर हमारा संबंध और भी गहरा होता जा रहा है। अभी मुझे पूरी बात कहने की ज़रूरत नहीं पड़ती। मैं थोड़ा कहता हूँ और यह मेरा यात्रा-वृत्तांत पूरा समझ जाता है।

शाम हो रही थी और मैं अपने डिनर का प्लान बनाने में व्यस्त था और साथ-ही-साथ कहानी पर भी थोड़ा बहुत काम चल रहा था। एलेक्स भागता हुआ आया और कहा कि चलो हाइकिंग पर चलते हैं, ऊपर पहाड़ से सूर्य को अस्त होते देखेंगे और वहीं खाना बनाकर खाएँगे। मैंने कहा कि हमारे पास टाइम है इतना? एलेक्स बोला कि अगर हम देर न लगाएँ और पहाड़ थोड़ा जल्दी चढ़ें। कुछ ज़रूरी चीज़ें, जो लगभग एलेक्स के पास थीं,

हमने दो बैगों में बराबर-बराबर बाँटी और पहाड़ की तरफ़ चल दिए। बीच में सुपर मार्केट से सॉसेज, सलामी और कुछ बियर उठा ली। यहाँ पहाड़ों में सफ़र करना बहुत आसान है। साफ़ रोड जो आपको बर्फ़ीले पहाड़ों के गर्भ तक पहुँचा देती है। मुझे याद है कि जब मैं ऑस्ट्रिया के एक छोटे से गाँव जेम्स में रुका हुआ था; वहाँ से साइकिल, कार, बाइक से एक साफ़ रास्ते से सीधा ग्लेशियर तक जाया जा सकता था और ऊपर, ठीक ग्लेशियर के सामने आपको एक रेस्त्राँ मिलेगा जिसमें सेंट्रल हीटिंग होगी और आप वहाँ से अपने गर्मी के कपड़ों में बैठकर, एक बियर हाथ में लेकर ग्लेशियर को निहार सकते हैं, उसकी गोद में बैठे हुए।

एलेक्स ने एक पहाड़ (Mont Veyrier, Veyrier-Du-Lac) चुना, जहाँ से सबसे अच्छा सूर्यास्त दिख सकता था। कार के रुकने के बाद हमें करीब एक घंटे की सीधी चढ़ाई चढ़नी थी। दोनों ने सामान अपने-अपने कंधे पर रखा। मैंने एलेक्स को एक चॉकलेट का टुकड़ा दिया जो कैथरीन ने मुझे लंदन में गिफ़्ट दिया था। चॉकलेट मुँह में दबाए हम दोनों बातें करते-करते कुछ ही देर में घने जंगल में पहुँच गए।

एलेक्स को यहाँ रिफ़्यूजी स्टेटस मिला हुआ था। एलेक्स ने बताया कि फ़्रांस में जो बेरोज़गारी भत्ता मिलता है, वो आपको आपकी आखिरी पगार का पचास प्रतिशत लगभग तीन साल तक मिलता रहता है। मतलब आपको काम करने की ज़रूरत नहीं है और पचास प्रतिशत पगार घर बैठे। मैंने उसे बताया कि मैं तो दंग रह गया जब मेरे एक जर्मन दोस्त को एक नाटक बनाने के बाद जर्मन सरकार की तरफ़ से दो साल का इंटेलेक्चुअल रिकवरी का भत्ता मिला। मतलब पिछले काम से इमोशनली बाहर आने के लिए दो साल तक आपको हर महीने पैसा मिलेगा। हम थर्ड वर्ल्ड वालों के लिए तो कल्पना के भी बाहर की बात है ये। हम दोनों बतियाते जा रहे थे, पर जब भी हँसी आती हमें हाँफ़ने के कारण रुकना पड़ता था। चढ़ाई खड़ी थी और हमें सूर्यास्त को देखने के लिए थोड़ा जल्दी पहुँचना था।

कुछ ही देर में हमें Alps का जो नज़ारा दिखा, मैं वहीं रुक गया। घने पहाड़ी जंगल से आप माउंट ब्लॉक को देख रहे हैं।

एलेक्स की परवरिश ऑस्ट्रेलिया में हुई है। एक मध्यवर्गीय परिवार में, उनके लिए गर्मी में हाइकिंग पर जाना, गर्मियों के एडवेंचर स्पोर्ट्स में हिस्सा लेना, अलग-अलग देशों में साइकिलिंग ट्रिप करना बहुत ही आम बात थी। मेरी बहुत इच्छा हुई कि मैं उसे बताऊँ हमारे यहाँ एक मध्यवर्गीय परिवार में ये सब सोचने की भी जगह नहीं है। जब हम उस पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए तो चारों तरफ़ का नज़ारा देखने लायक था। एक तरफ़ Annecy की पूरी झील और शहर दिख रहे थे तो दूसरी तरफ़ Alps के सुंदर बर्फ़ीले पहाड़। एलेक्स Annecy के शहर की तरफ़ खड़े होकर सूर्य को अस्त होते देखने लगा और मैं Alps की बर्फ़ीली चोटियों की तरफ़। मुझे उत्तराखंड में बिताए अपने दिन याद आ

गए। कहीं के भी पहाड़ हों आपके दिमाग में फ़र्क करना कितना मुश्किल हो जाता है! जब हम पहाड़ चढ़ रहे थे तो मैंने एलेक्स को बताया कि कैसे मैंने और जंग-हे (कोरियन कंपोज़र, जिससे मैं कोरियन रेसिडेंसी के एक महीने के प्रवास में मिला था और वह Basel, Switzerland में रहती है, आशा है कि इस ट्रिप में, आठ साल बाद उससे फिर मुलाक़ात होगी) ने कोरिया के दूसरे सबसे ऊँचे पहाड़ पर हाइक किया था। और अभी जब यहाँ खड़ा हूँ, तो उत्तराखंड का मुंशियारी याद आ रहा है। और जब हम देर रात वापिस पहाड़ उतर रहे थे तो वो बारिश की रात याद आई जिसमें हम चार लोग खलिया टॉप, मुंशियारी के भालू वाले जंगल में फँस गए थे। दो छाते और लाइटर वाली दो छोटी टॉर्च के सहारे भीगते हुए, ठंड में नीचे उतरे थे। वापिस उतरते वक़्त एलेक्स इस क्रिस्से पर बहुत हँसा था।

हमने खाने की तैयारी की, सॉसेज, सलामी और खुसखुस... पर सबसे पहले हम दोनों ने बियर खोली और चियर्स किया। हल्की ठंडी हवा चल रही थी। आसमान साफ़ था और हमारे अलावा चोटी पर एक छोटा परिवार कोने में टेंट लगाए था। एक पिता अपने दो बच्चों के साथ। वह आग जलाने की तैयारी में जंगल से लकड़ियाँ बीनकर ला रहे थे। एलेक्स और मैंने तय किया कि रात में तारों भरा आसमान देखकर वापिस चलेंगे। एलेक्स के पास सारे कमाल के Mountain Gear थे। हमने छोटा-सा स्टोव जलाया और सॉसेज फ़्राई करने लगे। ठंड थोड़ी बढ़ गई थी, उस ठंड में बियर का नशा और सॉसेज के जलने की खुशबू ने भूख और बढ़ा दी। मैंने एलेक्स को बताया कि मैंने पहले ऐसा कुछ भी नहीं किया है तो वह अचंभित हो गया। उसने कहा कि इसलिए तुम इतना बच्चों की तरह खिलखिला रहे हो। मैंने उसे बहुत धन्यवाद कहा। मैं जानता था कि उसके सारे दोस्त झील के किनारे आज रात पिकनिक कर रहे हैं। वह उनको छोड़कर मेरे साथ यहाँ आया है।

खाना खाने के बाद हम अपनी-अपनी बियर लेकर अपने एकांत में चले गए। क़रीब रात के दस बज रहे थे। आसमान के एक किनारे में थोड़ी-सी रौशनी अभी भी रह गई थी। मैं पहाड़ की चोटी के एक कोने में, गहरी रात में हल्के दिख रहे Alps के बर्फ़ीले पहाड़ों को देख रहा था। कुछ ऐसा वक़्त आता है, जब आप कुछ भी सोच नहीं रहे होते। प्रकृति अपनी सारी खूबसूरती में आपको सन्न कर देती है। आप महज़ चीज़ें देख सकते हैं। इस विशाल चित्र को अनुभव करने का माददा अभी भीतर नहीं है। मैंने बहुत वक़्त बाद अपने दिमाग़ को भी एकदम चुप पाया। कहीं कोई संवाद नहीं था। किसी तरह की कोई खुशी, न कोई पीड़ा। एक अजीब-सी चुप स्थिति जिसमें मैं खुद को इस अँधेरे में खड़ा हुआ देख सकता था।

आसमान में कोने की आखिरी रौशनी जब नदारद हो गई तो एक चादर तारों की उभर आई। क़दम खुद-ब-खुद आग की तरफ़ बढ़ गए। निकोलस एक पिता है जो अपने दो बच्चों को लेकर इस पहाड़ की चोटी पर रात बिताने आया है। कुछ लोगों के चेहरे होते हैं, जिन्हें देखते ही लगता है कि यह एक मूरत है अच्छे पिता की। पास ही के गाँव में रहने वाला निकोलस हमेशा इस तरह के कैप करता है, अपने बच्चों के साथ। लड़की की उम्र क़रीब तेरह साल होगी और लड़का दस के क़रीब। लड़की थोड़ी अँग्रेज़ी जानती थी और

एलेक्स टूटी-फूटी फ्रेंच। ठंडी हवा में आग बहुत आनंद दे रही थी। हम सब उसके इर्द-गिर्द खड़े थे। मैंने उस लड़की से कहा कि तुम्हें पता नहीं कि तुम कितनी भाग्यशाली हो, इतने कमाल पिता हैं तुम्हारे पास। तुम इस अनुभव को पूरी ज़िंदगी याद रखोगी। मुझे पता था यह बात मैं खुद से कह रहा था। मेरे पिता की झलक मैं निकोलस में देख सकता था। उस लड़की ने बहुत गर्व से कहा कि मुझे पता है। निकोलस ने अपनी बेटी से पूछा कि क्या कहा इन्होंने? बेटी ने कहा कि तारीफ़ कर रहे हैं आपकी। निकोलस शरमा गया। उसके चेहरे पर पड़ी झुर्रियाँ बिल्कुल मेरे पिता से मेल खाती थीं। मैं निकोलस को बहुत देर तक निहारता रहा। तभी उस लड़की ने मुझे Marshmello दिया भूनने को। मैं समझा नहीं। तब एलेक्स ने बताया कि ये ही सबसे कमाल चीज़ है। पूरा बचपन मुझे याद है कि हमने यही किया है। यह हमारे बचपन का हिस्सा है और तुमने कभी नहीं किया? उसे बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने Marshmello लिया। एक लकड़ी में फँसाकर उसे हल्का भूना। लड़की ने कहा कि हो गया अब आप इसे खा सकते हैं। उस Marshmello को खाते ही मुझे लगा कि मैं उनके बचपन का हिस्सा हो गया हूँ।

मेरी इतनी ज़्यादा इच्छा थी कि इस अलाव के किनारे बैठकर दोनों बच्चों को अपने बचपन के क्रिस्से सुनाऊँ। उनसे उनके सपनों के बारे में बात करूँ। निकोलस को बताऊँ कि मेरे पिता कितने सुंदर थे... पर भाषा! भाषा की चुप्पी में हम एक-दूसरे के चेहरों पर खुशियाँ पढ़ते रहे। हर किसी बच्चे-सा मैं Marshmello को लिए हँसते हुए नाचता रहा। मुझे कुछ अनुभव बड़े अलग तरीके से अच्छे लगते हैं, मानो जो बचपन मैं नहीं जी पाया उन सारी चीज़ों को मैं चालाकी से अपने चालीसवें साल में जी रहा हूँ। मैं प्रसन्न था और एलेक्स ने कहा कि अब तुम्हें देखकर मुझे बहुत बुरा लग रहा है कि हम टेंट क्यों नहीं लेकर आए। आज रात हमें यहीं बितानी चाहिए थी। मैंने कहा ये भी किसी तरह कम नहीं। तुम्हें कोई अंदाज़ ही नहीं है कि मैं कितना खुश हूँ। एलेक्स अपनी फ्रेंच सीखने की प्रैक्टिस में बच्चों से देर तक बात करता रहा और मैं और निकोलस आग से दूर Annecy शहर की रात की चमक देख रहे थे। तभी मुझे एक टूटता हुआ तारा दिखा। निकोलस शहर की तरफ़ देख रहा था, मैंने उससे जब तक कहा कि अपनी बाएँ तरफ़ देखो तब तक तारे की रौशनी मर चुकी थी। उसने मुझसे पूछा कि क्या हुआ? मैंने जाने दिया क्योंकि मुझे पता था मैं उसे कभी नहीं समझा पाऊँगा। हम दोनों चुप अपने-अपने एकांत में खड़े रहे। बीच-बीच में वह अपने बच्चों की तरफ़ देख लेता कि वे ठीक हैं कि नहीं। रात बहुत हो चुकी थी। एलेक्स और मैंने सामान पैक करना शुरू किया। हम दोनों ने बैग कंधे पर टाँगे और आग की तरफ़ आए, निकोलस और उसके परिवार को अलविदा कहने के लिए।

जब हम घने अंधेरे जंगल से नीचे की तरफ़ जा रहे थे तो मैं बार-बार ऊपर चोटी की तरफ़ देख रहा था। वहाँ वे अभी भी हैं—मेरे पिता जैसा दिखने वाले पिता और उनके दो खूबसूरत बच्चे। मुझे लगा उस पहाड़ की चोटी पर मेरा बचपन मैं छोड़ आया हूँ। एक बार इच्छा हुई कि एलेक्स से कह दूँ कि क्या हम एक बार वापिस ऊपर जा सकते हैं, मुझे लगता है कि मैं कुछ छोड़ आया हूँ। पर हम आगे चलते रहे। कुछ दूर तक अंधेरे में रास्ता भटक गए, पर एलेक्स ने कहा कि कितना भी भटक लें सारे रास्ते मुख्य सड़क की तरफ़

ही जाते हैं। मुझे इस वाक्य में इतनी त्रासदी दिखी कि मैं मायूस हो गया। बहुत इच्छा हुई कि मैं अभी एलेक्स से अपने पिता के बारे में बातें करूँ। उनके चेहरे पर गहरी छुरियों के निशानों की कुछ कहानियाँ बनाकर उसे सुनाऊँ। उससे कहूँ कि वह सत्रह की उम्र में घर से भाग गए थे। उन्होंने भी पूरी दुनिया घूमी है कि वह एक बहुत अच्छे पिता थे। मैंने एलेक्स से पूछा कि तुम्हारे पिताजी क्या करते थे? इस पर उसने बहुत शुरू से कहानी शुरू की। मैं उसकी कहानी में अपने रास्तों के अँधेरे पार कर रहा था। और फिर वही त्रासदी हुई कि हम भटके नहीं। हम मुख्य सड़क पर आ चुके थे।

पहले दिन जब मैं झील के आस-पास खड़े बाक़ी पर्यटकों को देखकर मुँह बना रहा था और एक खाली-सी जगह इन पर्यटकों से दूर कहीं तलाश रहा था कि सकून से लिख सकूँ, तब मुझे क़तई इस बात का इल्म नहीं था कि मेरा एक दिन बिल्कुल उन्हीं पर्यटकों के जैसा बीतने वाला था। एलेक्स को पता नहीं हमारे संवाद के बाद क्या हुआ था, उसे लगा कि ये उसकी ज़िम्मेदारी है कि वह मुझे मेरे ब्रेक-अप ट्रेवल में उदासी से दूर रखे। बतौर लेखक एक कहानी की तलाश कभी-कभी आपके लिखने के ही आड़े आ जाती है। पूरा दिन मैंने एलेक्स और उसकी एक दोस्त के साथ Lake-Annecy में पैडल बोर्डिंग करते हुए बिताया। मुझे हमेशा से लगता है कि पानी और पहाड़ से मेरा एक निजी रिश्ता है, सो पैडल बोर्डिंग मैं बिल्कुल आराम से कर लूँगा। बाहर तेज़ धूप चमक रही थी और पानी एकदम ठंडा था। पहले एलेक्स बहुत मस्ती से अपने पैडल बोर्ड पर चढ़ा और तालाब के भीतर की तरफ़ निकल गया और फिर उसकी दोस्त। उनकी देखा-देखी मैंने भी बिल्कुल उसी उत्साह से पैडल बोर्ड पर क़दम रखा और मैं पानी में था। इसके बाद मैंने गिनती छोड़ दी कि कितनी बार मैं पानी में गिरा होऊँगा। अंत में ठंडे पानी से जब बहुत तकलीफ़ होने लगी तो मैं अपने घुटनों पर बैठ गया और फिर आराम से पैडल बोर्डिंग का मज़ा लेने लगा। असल में आनंद तब आया जब बीच झील में हमने वाइन और सलामी के साथ वहाँ की लोकल ब्रेड खाई। वाइन, चीज़ और ब्रेड मैं लाया था; मुझे एलेक्स की फ़्रेंच दोस्त के सामने ये सब निकालने में थोड़ी-सी झिझक महसूस हो रही थी। फ़्रेंच लोग अपनी ब्रेड, चीज़ और वाइन को लेकर बहुत चूज़ी होते हैं। चीज़ उसे ठीक लगा, पर वाइन और ब्रेड पर वह फ़िदा हो गई। उसी ने बताया कि ये वाइन और ब्रेड Annecy के आस-पास के गाँव में बनती है, जो एलेक्स और उसकी दोस्त, दोनों की प्रिय थी। मैंने ठंडी साँस ली। जिस ब्रेड और वाइन को मैं बिना देखे ले आया था, वह उन्हें पसंद आई। झील के बीच में हम तीनों दो वाइन की बोतल गटक गए। ख़ूब बातें कीं। मैं पानी में पैर डाले था। नीचे ठंडा पानी, ऊपर पहाड़ी तेज़ धूप और शरीर के भीतर ख़ूब सारी वाइन। मुझे उन टूरिस्टों से रश्क होने लगा जिन्हें कल तक मैं मुँह बनाकर देख रहा था।

एलेक्स हर कुछ देर में मुझे देखे और पूछ ले कि मैं ठीक हूँ कि नहीं। इस नशे में भी मुझे अपनी झूठी कहानी को बरकरार रखना था। मैंने एलेक्स को कहा कि तकलीफ़ तो है अभी भी बहुत उस ब्रेक-अप की, पर लगता है इस यात्रा में मैं उससे बाहर आ जाऊँगा।

एलेक्स ने यह सुनते ही पहले मेरे कंधे पर हाथ रखा फिर गले लग गया। झूठ पर अगर मकान खड़ा करना है तो उसकी नींव पर बहुत काम करते रहना पड़ता है। इस भीतर के लेखक के कारण मुझे यह झेलना पड़ रहा है, वरना मैं क़तई झूठ बोलना पसंद नहीं करता। पर लेखक झूठ बोले बिना रह ही नहीं सकता। लेखक भूखा है, मैं जानता हूँ, पर मैं उसकी भूख अपनी लिखी जा रही कहानियों में पूरी करना चाहता हूँ; इस तरह मेरे निजी जीवन से खिलवाड़ करके नहीं।

फिर सोचता हूँ कि असल में सत्य क्या है? और फ़िक्शन क्या है? क्या है वह जो एक जगह आकर झूठ कहलाता है और वही किसी कहानी को कमाल बनाता है? अगर इस झूठ का एलेक्स को कभी पता न लगे तो मेरा जीवन उसके लिए वह कहानी होगा जिसकी उसे बहुत वक़्त से तलाश थी। मैं अगर उससे सच बोल देता तो ये जो संबंध में निजता आई है, वह कभी नहीं आती। वैसे तो मेरे हिसाब से हर कही हुई बात फ़िक्शन ही है। आपका कोई भी सत्य जीने के बाद अगर आप फिर से दोहराते हैं, बातों में, लिखे में या किसी भी कला में तो वो फ़िक्शन हो जाता है। जैसे इस वक़्त मैं Alps के बर्फीले पहाड़ों को देख रहा हूँ और मुझे एक पक्षी उड़ता हुआ दिखता है। मेरे ठीक बग़ल में खड़े मेरे साथी को भी वही दृश्य दिख रहा है। पर ठीक उस पक्षी को देखने की हम दोनों के पास एकदम अलग कहानी है। सत्य यही है कि Alps में पक्षी उड़ रहा है। पर उसका क्रिस्सा अलग है। अगर उस पक्षी ने उड़ते हुए अचानक कूदकर आत्महत्या कर ली तो जो भी देखेगा उस वक़्त तो वह सत्य होगा पर जैसे ही वह उसे कहना शुरू करेगा, वह कल्पनिक हो जाएगा। ठीक वैसे ही जैसे मेरा यह यात्रा-वृत्तांत ठीक जिए में सत्य है, पर लिखे में काल्पनिक है।

बहुत वाइन के बाद मैं ज़िद पर आ गया कि मैं एलेक्स की तरह कम-से-कम एक मिनट पैडल बोट पर खड़ा होऊँगा। ज़िद थी, पर मुझे उस एक मिनट को पकड़ने में डेढ़ घंटे लग गए। बहुत गिरने के बाद हम सबको एकदम भूख लग आई थी। किनारे पहुँचने में भी हमें आधा घंटा लगा। एलेक्स की दोस्त ने पेड़ के नीचे एक जगह सुरक्षित की और हम दोनों पिज़्ज़ा और बियर लेने चल दिए। जब वापिस आए तो करीब आधा दर्जन लोग एलेक्स की दोस्त के साथ बैठे थे। पता लगा कि शनिवार की शाम को सारे Expat जमा होते हैं। ये Annecy में रह रहे विदेशियों का एक फ़ेसबुक ग्रुप है। जब तक हमने बियर पीना शुरू किया, तब तक बहुत लोग आ चुके थे। हर लड़का और लड़की किसी अलग देश से यहाँ काम करने आए थे और अपने जैसे लोगों की तलाश में थे। पहले तो मेरा उत्साह बहुत बढ़ा, इतने सारे अलग तरीक़े के लोगों को देखकर, पर जब बात करना शुरू की तो अजीब-सी थकान से भर गया, लगभग सबकी एक ही जैसी कहानी थी। सारे लोग युवा थे और शनिवार को पीना और पार्टी करना चाहते थे। वे सारे यह प्लान बनाने में ज़्यादा व्यस्त थे कि कैसे और किस-किस तरह का नशा कहाँ-कहाँ मिलेगा। मुझे बार-बार इच्छा हो रही थी कि मैं एलेक्स से कहूँ कि घर चलते हैं। मैं लिखना चाहता हूँ, पर वह अपने सारे दोस्तों के बीच घिरा हुआ था। जब तक हम घर पहुँचे तब तक देर रात हो चुकी थी। मैं नशे और थकान में इतना टूट चुका था कि पैकिंग करना भी भूल गया। एलेक्स

अपनी निजी बातें मुझसे इस तरह कर रहा था, मानो हम दोनों एक ही नाव में सवार हों। मैं इस थकान में अपनी झूठी बातों के कपड़े उतार चुका था। मैं वहाँ नहीं था। मैंने बस एलेक्स से कहा कि मैं ठीक महसूस नहीं कर रहा हूँ। उसने कहा मैं समझता हूँ और उसने मुझे अकेला छोड़ दिया।

रविवार को सुबह देर से उठा। पूरा कमरा बिखरा पड़ा था। मैंने सारा कुछ एक चाय के साथ समेटा और तुरंत बाहर आ गया। आज Annecy छोड़ना है। ग्यारह तीस की बस है— Chamonix के लिए। मुझे शुरू से पता था कि मुझे यह शहर बहुत पसंद आएगा और यह मेरी अपेक्षा से कहीं ज़्यादा कमाल निकला, उसका बहुत श्रेय एलेक्स को जाता है। Annecy शहर अगर एक छोटी कहानी है तो मैं उसके अंत में टहल रहा हूँ। उसके अंत की इससे अच्छी सेटिंग नहीं हो सकती थी। चुप ठंडक भरी सुबह जिसमें आवाज़ें सिर्फ़ चिड़ियाँ की हैं। रविवार की सुबह मैं Annecy के अंत में ऐसे घूम रहा था, मानो पूरा शहर मैंने अपने आखिरी वाक्यों को लिखने के लिए खाली करवाया हो। सारे कॉफ़ी हाउस बंद थे, पर पुराने Annecy में एक आदमी मुझे अपने कॉफ़ी हाउस के बाहर कुर्सियाँ जमाता दिखा। मैंने उससे पूछा कॉफ़ी मिलेगी? उसने अच्छी अँग्रेज़ी में मुझे अंदर आमंत्रित किया।

“क्या लेंगे?” उसने पूछा।

“बड़ी कॉफ़ी, दूध बग़ल में।”

“बिल्कुल, मैंने आपको पीछे की तरफ़ अकेले टहलते हुए देखा था अभी।”

अच्छा हुआ उसने यह नहीं कहा कि मैंने आपको पीछे अकेले बड़बड़ाते हुए देखा था।

“हाँ मैं अकेले ही ट्रेवल कर रहा हूँ।”

“कहाँ-कहाँ घूम लिए?”

“छोटे शहरों में।”

“कहाँ से हो?”

“भारत।”

“ओ! बहुत दूर से आए हो।”

मैं अपनी कॉफ़ी लेकर बाहर आ गया। कुछ देर में एक चिड़िया सामने की कुर्सी के डंडे पर आकर बैठ गई, मानो उसने भी मुझे अकेले घूमते हुए देखा और दया खाकर पहली कॉफ़ी पर साथ देने आ गई। हम दोनों ने अपनी चहचहाहट में कॉफ़ी पी। मैं पैसे देने भीतर गया, “कितना हुआ?”

“Three fifty euro. चुकाना तो पड़ेगा।” उसने कहा।

“क्या चुकाना पड़ेगा?”

“जो भी हम कर रहे हैं, हर चीज़ का क़र्ज़ है, उसे चुकाना तो पड़ेगा ही। आज नहीं तो कल।”

मैं कुछ देर उसे देखता रहा। कभी-कभी कुछ संवाद होते हैं और आपको लगता है कि ये तो कोई कहानी का पात्र है जो अचानक बात करने लगा। मैंने संवाद थोड़ा आगे

बढ़ाया।

“अगर अच्छा काम करो तब भी?”

“क्लर्क हर काम का है। अच्छाई का क्लर्क लगातार अच्छा ही करते रहने में चुकाते रहना पड़ता है। वह भी एक क्लैद ही है।”

मुझे पता था कि अगर मैं बात करता रहा तो संवाद खत्म ही नहीं होगा और Chamonix की मेरी बस छूट जाएगी।

मैंने उसे, Annecy और एलेक्स सबको अलविदा कहा और वहाँ से निकल गया।

बस में बैठे हुए जब Annecy छूट रहा था तो लगा अभी तो लोगों को शहर को जानना शुरू किया था। अभी तो अपनापन महसूस होने लगा था। एलेक्स ने जाते हुए कहा भी कि कुछ दिन और रुक जाते तो बहुत आनंद आता। किस क़दर हम इंसानों के अंदर बस जाने की सरवाइवल इंस्टिंक्ट काम करती है। सामान्य तौर पर किसी भी अजनबी से हम दूर भागते हैं। हमें अपनी के बीच ही एक क्रिस्म की आत्मीयता का एहसास होता है जो हमें लगातार उनके साथ बस जाने की तरफ़ खींच रहा होता है। एलेक्स के घर पर एक पोस्टर लगा था, ‘Into The Wild’ किताब पर जो फ़िल्म बनी थी उसका। उस पर लिखा था, “Happiness is only real when shared.” पहले मुझे लगता था कि यह कितना सच है! पर अब लगता है कि एक कलाकार के लिए सुख को अकेले जीना और उसे किसी से बाँटने की प्रबल इच्छा को अपने पास सँजोकर रखना एक पूँजी है। दिन-पर-दिन इन यात्राओं में मेरा इस बात पर विश्वास बढ़ता जा रहा है कि अपने सारे सुखों और पीड़ाओं को शेयर करके खर्च करना बहुत छोटी बात है। उसे अपने पास रखना आपको विनम्रता देता है। मैं अपनी खुशी में लगातार इस प्रकृति का ऋणी हूँ।

बस में बैठते ही पता चला कि शरीर पूरी तरह टूट रहा है। बस लगातार Alps की पहाड़ियों की तरफ़ ले जा रही थी। मैंने Airpod लगाए और आँखें बंद कर लीं। पूरे रास्ते मैं सोता रहा, जब आँखें खुलीं तो देखा हम Chamonix में हैं—बर्फ़ीली पहाड़ियों से घिरे हुए।

Chamonix एक घाटी है जो Auvergne-Rhône-Alpes क्षेत्र के दक्षिण पूर्व फ़्रांस में है। Mont Blanc (सफ़ेद पहाड़) Alps की सबसे ऊँची चोटी है। Chamonix से एक केबल कार के सहारे आप उसके एकदम करीब पहुँच सकते हैं। इस पहाड़ के एक तरफ़ इटली है और दूसरी तरफ़ स्विट्ज़रलैंड। Chamonix में उतरते ही बर्फ़ के पहाड़ों से आती हवा चेहरे पर लगी और एकदम अपनापन महसूस हुआ। पहाड़ फ़र्क़ नहीं करते, ये सीधे तने हुए स्थिर खड़े असीम, विशाल, सफ़ेद सूफ़ी नज़र आते हैं। आप जो हैं जैसे हैं, उनके लिए सब एक बराबर है, उनकी शरण में सबके लिए बहुत जगह है। अभी टूरिस्ट सीजन शुरू नहीं हुआ था तो बहुत कम लोग थे। मेरे चेहरे पर मुस्कुराहट थी जब मैं अपने कमरे की खोज में Chamonix की सड़कों पर चल रहा था। पहली नज़र का प्यार था इस शहर से। जहाँ मैं रह रहा था उसके ठीक सामने केबल कार ऊपर की तरफ़ ले जाती थी। मैं यह प्रलोभन छोड़ नहीं पाया। अपने कमरे में सामान रखकर सबसे पहले मैंने केबल कार का टिकट लिया और सीधा Alps के पर्वतों की गोद में पहुँच

गया। बहुत देर तक सारा कुछ surreal लग रहा था। उन्हें देखते ही मैं खाली हो गया, क्या करूँ बहुत देर तक समझ नहीं आया। सब कुछ एकदम चुप था। चारों तरफ सफ़ेद पहाड़। मैं पहले लोगों के साथ चलता रहा। हर जगह जाकर तस्वीरें भी खींचीं, पर एक भी तस्वीर ऐसी नहीं थी जो इस खूबसूरती को अपने भीतर कैद कर सके। बहुत इधर-उधर भागने के बाद मैं एक जगह स्थिर हो गया। बहुत देर तक उन ऊँचाइयों को देखता रहा। वक्रत का कोई अंदाज़ नहीं रहा। फिर मैं बर्फ़ में आगे चला गया। लोगों से एकदम दूर और उन सफ़ेद पहाड़ों के एकदम नीचे एक पत्थर पर बैठ गया। मैंने देखा कि मैं रो रहा हूँ। इसकी वजह मुझे नहीं पता कि क्यों इन बड़े ऊँचे पहाड़ों को देखकर मुझे रोना आ गया। मुझे लगा मैं शायद भाव-विभोर हो गया हूँ यह देखकर... पर जब रोना रुका नहीं तो अजीब-सी शर्म आने लगी। मैं रोते हुए खुद से बात करने लगा। क्यों रो रहा हूँ? क्या हुआ? मुझे कोई अंदाज़ नहीं था। मैं चालीस पार कर चुका हूँ, अब इस उम्र में यहाँ अकेले बैठे हुए सुबक-सुबक कर रोना बहुत शर्मनाक लगा। कुछ देर तक मैंने खुद को रोकने की कोशिश की फिर छोड़ दिया। यह मेरे बस में नहीं था सो मैंने बहने दिया और खूब रोया। जब बाद में रोना एक रिरियाती-सी हँसी में तब्दील होने लगा तो मुझे एकदम हल्का लगा। मैं उस पत्थर पर लेट गया और अपनी आँखें बंद कर लीं।

सुबह नींद खुली तो सामने Mont Blanc की चोटी पर सूरज की पहली रौशनी चमक रही थी। लगा यह पहाड़ नहीं है, किसी ने अपनी पेंटिंग लगा रखी है। बहुत देर तक बिस्तर पर पड़े-पड़े सूरज का पूरे पर्वत को घेर लेना देखता रहा। पहाड़ों पर आते ही हर चीज़ धीमी हो जाती है। मुझे बहुत देर लगी अपना बिस्तर छोड़ने में। बाहर कॉफ़ी पीने निकला तो इक्का-दुक्का लोग कॉफ़ी की दुकानों पर नज़र आए। कॉफ़ी और Croissant लेकर मैं धूप में बैठ गया। सुस्त और आलस भरी सुबह में लगा कि मैं अभी तक थका क्यों नहीं। इतने दिनों से अकेले यहाँ-वहाँ भटकते हुए अभी भी मुझे बहुत थकान नहीं हुई है। पुरानी यात्राओं में मुझे हमेशा बीच के कुछ दिनों का अकेलापन बहुत खलता रहा है। यहाँ भी मुझे बहुत बार अकेलापन महसूस हुआ, पर बहुत जल्द वह एक स्थिति में बदल गया था और मुझे उससे लड़ाई करने की ज़रूरत महसूस नहीं हुई थी। यहाँ पूरे शहर के बीच से एक नदी बहती है, जिसकी आवाज़ मुझे बहुत प्रिय है। मुझे मनाली की याद हो आई। वहाँ ओल्ड मनाली में मैंने नदी किनारे बैठे हुए बहुत लिखा है। मैं पूरे वक्रत नदी किनारे किसी अच्छे कैफ़े की तलाश करता रहा, पर हर कैफ़े लोगों से भरा हुआ था। मैं एक लंबी सैर पर निकल गया। पूरे शहर में सारे घर लकड़ी से बने हुए थे। मैं जब भी नज़र उठाकर शहर के घरों को देखता तो पीछे बर्फ़ीले पहाड़ नज़र आते। कितना ज़्यादा कश्मीर जैसा है ये। पर कश्मीर की खुशबू और ज़्यादा कमाल है। कश्मीर जाते ही लगता है कि मानो हमने जो बचपन में घर-घर खेल खेला था उस खेल के भीतर मैं वापिस से पहुँच गया हूँ। कश्मीर जाना अपने पिता के पास जाने जैसा है। इस साल अपने पिता के पास जाने की कोशिश करूँगा।

आते वक्रत मैं सॉसेज, अंडे, दूध लेकर आया। अपने लिए नाश्ता बनाकर मैं बालकनी में अपनी कहानी खोलकर बैठ गया। बतौर लेखक इससे ज़्यादा सुंदर जगह नहीं मिलेगी लिखने के लिए। जब सारा कुछ एकदम जमा-जमाया सामने हो बिल्कुल वैसा ही जैसे की कभी कल्पना की थी तो एक तरह का बोझ महसूस करता हूँ। काश लिखना मेरे बस में होता कि बैठे और बिना रुके कई पन्ने भर दिए। मैंने वापिस कहानी पढ़ना शुरू किया। एक लाइन लिखी और कुछ घंटे बाद वह भी काट दी। उठकर पूरे कमरे के चक्कर काटने लगा। खुद को कोस रहा था कि इससे अच्छा तो इस खूबसूरत शहर में घूमता या बाहर जाकर एक कॉफी पी लेता। इच्छा तो हो रही थी कि अपने भीतर पड़े लेखक को झंझोड़कर उठाऊँ और कहूँ कि और क्या चाहिए आपको श्रीमान? मैं यह सोच ही रहा था कि मेरे लेखक ने धीरे से कहा—कॉफी। मैं गुस्से में जहाँ था वहीं बैठा रहा। कुछ देर में मैं कॉफी लेकर वापिस बालकनी में आया तो उसने अपना मुँह बना लिया। मैं जानता हूँ मेरा लेखक चाहता है कि लैपटॉप से दूर... बाहर किसी हसीन जगह जाकर कॉफी पी जाए। मैंने कहानी बंद की और बाहर आ गया। कभी-कभी लगता है कि मैं गुलाम हूँ। ये लेखक आदेश देता रहता है और मैं सिर झुकाए उसका पालन करता रहता हूँ। बाहर आया तो देखा बादल बुरी तरह घिर आए हैं। कैफ़े में बैठा ही था कि बारिश शुरू हो गई। काश इस गिरती हुई बारिश में मैं अपने कमरे की बालकनी में होता तो कितना मज़ा आता लिखने में। यह गुहार मेरे लेखक ने लगाई। मैंने वहीं तय किया कि आज एक शब्द भी नहीं लिखूँगा। बस यूँ ही बेवजह Chamonix में टहलता रहूँगा।

बारिश को एक बहाने की तरह लेकर मैं दोपहर में लगभग दो घंटे सोया। जब बाहर निकला तो बारिश थम चुकी थी। मैं पहाड़ों की तरफ़ ऊपर चलने लगा। सूर्य अस्त होने ही वाला था और हल्की ठंड बढ़ने लगी थी। करीब बीस मिनट चलने पर शहर खत्म हो गया था। मैं भीगे हुए, घने हरे पेड़ों के बीच चल रहा था। अचानक मुझे खट-खट की आवाज़ आई... कठफोड़वा यहीं कहीं है। मैं ज्यों ही रुका, वह भी रुक गया। फिर कुछ देर में उसकी आवाज़ वापिस आई। मैंने अपने बाएँ तरफ़ देखा तो उसकी पूँछ दिखी। मेरे चेहरे पर एक मुस्कराहट आई। उसने पेड़ के पीछे से झाँका और तुरंत उड़ गया। मुझे लगा मैंने उसे उसके बहुत ही निजी क्षण में पकड़ लिया और वह शरमाकर भाग गया। मैं थोड़ा और पेड़ों के भीतर गया। बारिश के कारण पैर फिसल रहे थे, फिर एक आहट हुई, गिलहरी। झबरीली पूँछ वाली, कत्थई रंग की गिलहरी। बहुत ही खूबसूरत और वैसी ही चंचल।

जंगल से चलते हुए जब नीचे सड़क पर पहुँचा तो शाम थोड़ी गहरी हो गई थी। यूँ इस वक्रत सारे कैफ़े बंद हो जाते हैं या वो पब में तब्दील हो जाते हैं, पर एक कैफ़े खुला हुआ था। मैंने अपनी कॉफी का ऑर्डर दिया। मैं लिखने के बारे में सोच ही रहा था तभी कैथरीन का मैसेज आया, “मैं कल Geneva में रहूँगी एक दिन के लिए। यूँ मैं वापिस लंदन यहाँ से भी जा सकती थी, पर सोचा अगर तुम्हारे पास वक्रत होगा और तुम एक दिन के लिए आ सको तो बहुत अच्छा लगेगा। अगर नहीं तो कम से कम मुझे यह तो नहीं लगेगा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। कोई दबाव नहीं है। मैं यूँ भी Geneva देखना चाहती थी।”

मैंने इस मैसेज को दो बार पढ़ा फिर दिमाग में इसका उत्तर लिखने लगा, “प्रिय कैथरीन, अभी तो पहली गिलहरी देखी है, अभी तो एक कठफोड़वा शरमाकर भागा है आँखों के सामने से... अभी कैसे आ जाऊँ? ये कमीना लेखक अपने लिए बहुत ज़्यादा वक़्त माँग रहा है। तुम्हें पता है कि मैं एक बहुत ही मज़ेदार कहानी लिख रहा हूँ। ‘घोड़ा’ नाम है उसका और अभी-अभी इस नई कहानी के कुछ टेढ़े-मेढ़े मोड़ों पर सफ़र करना शुरू किया है। अभी तो कितने अकेलेपन से भरे हुए दिन पसरे पड़े हैं सामने। अभी कैसे आ जाऊँ? अगर मुझसे पूछो तो मैं ठीक इसी मैसेज पर तुरंत यहाँ से तुम्हारी तरफ़ निकलना चाहता हूँ। मैंने अपने फ़ोन पर अभी देखा है कि बस एक घंटे बीस मिनट में मैं Glixbus से वहाँ पहुँच जाऊँगा, पर मैं इस वक़्त सिर्फ़ लिखना चाहता हूँ और देर तक इस बात पर पछताना भी चाहता हूँ कि काश मैं अपने लेखक का गला दबा देता और Geneva चला जाता।

मैं यहाँ फँसा हुआ हूँ। हम फिर कभी मिलेंगे। सॉरी।” उन सारी भावनाओं से अलग एक ठंडा जवाब मैंने उसे लिखकर भेजा। मुझे डर था कि कहीं वह यहाँ न आ जाए। मेरी बहुत इच्छा थी कि वह यहाँ आ जाए, पर कैथरीन के यहाँ आने के सुख बहुत बड़े हैं और लिखने के घरे बहुत छोटे... उन घरों में देर तक कुछ भी नहीं का संसार गोल-गोल चक्कर काटता रहता है। बहुत सारे कुछ नहीं से धीरे-धीरे कुछ एकांतों के संवाद फूटते हैं जिनका इंतज़ार करते रहना ही मेरा काम है। जो लिखता है वह तो बस उन्हें बटोरने में व्यस्त रहता है। मैं अपने इंतज़ार को किसी बड़े सुख के आ जाने से पूरा नहीं करना चाहता हूँ। मेरा सारा इंतज़ार सिर्फ़ उन शब्दों और वाक्यों के लिए है, जिन्हें लिखते ही भीतर तक तसल्ली मिलती है। मेरी पूरी यात्रा बिखरने से बच जाती है। हर चीज़ के मानी दिखने लगते हैं। ये छोटे सुख हैं जिन्हें जीना मुझे आता है। बड़े सुखों को कहाँ टिकाकर रखूँ? घर में कोई खाली कोना नहीं है। बड़े सुख आते ही असहज कर देते हैं।

ये सारा कुछ उस ठंडे मैसेज के भेजने का गिल्ट है। मैं बहुत देर तक कैथरीन के बारे में सोचता रहा। फिर कुछ भी लिखना संभव नहीं हो सका। कितना मुश्किल है उस एक छोटे झूठ को ढोना। इच्छा तो हुई कि कैथरीन को वह मैसेज भेज दूँ जो मैं सोच रहा था, पर मैंने जब भी ऐसा कोई क़दम उठाया है, बाद में पछताया ही हूँ। कॉफ़ी खत्म होते ही मैंने एक बियर ऑर्डर कर दी। देर रात तक बहुत पीता रहा। अपने फ़ोन को खुद से दूर रखा। पता था आज रात एक शब्द लिखना भी मुश्किल होगा सो आज सिर्फ़ मैं पी सकता हूँ। ‘घोड़ा’ कहानी बार-बार ज़ेहन में कौंधे जा रही थी। उसके बारे में जितना सोचता था, वह अपने भीतर उतना ही घसीटती जा रही थी। मैंने खुद को नशे में कहानी की राह पर छोड़ दिया। कैथरीन वाला मोड़ बहुत पीछे रह गया था।

सुबह चार बजे हड़बड़ाकर उठा। बहुत बुरे सपने आए। सपनों में बहुत कुछ तो कहानी थी पर अचरज की बात है कि कहानी के पात्रों के चेहरे जाने-पहचाने थे। कुछ अपने जिनसे बहुत वक़्त से बात नहीं हुई। सोचा उन सबको मैसेज करके पूछूँ सब ठीक तो है न? मैंने किसी को मैसेज करना ठीक नहीं समझा। क्योंकि अगर उनमें से कोई मुझे इस वक़्त मैसेज करे कि कैसे हो तो मेरे जवाब बहुत ही औपचारिक होंगे। पुराने संबंध एक

बंजर ज़मीन पर औपचारिकता की क़ब्र ओढ़े दफ़्न हो जाते हैं, जो ठीक भी है, उन्हें अपनी ग़्लानि मिटाने के लिए कुरेदना ठीक नहीं है। मैंने चाय बनाई और कहानी खोलकर बैठ गया। कहानी खुलने के पहले एक अजीब-सी इच्छा भीतर कुलबुलाने लगती है कि काश मैं कहानी खोलूँ और जहाँ वह अटकी पड़ी है, उसके आगे उसने खुद ही कुछ लिख लिया हो। हर बार मेरे मन में यह विचार आता है और हर बार उस वाक्य पर निगाह पड़ती है जो पिछली बार मेरी नाभि में कहीं अटका पड़ा था। बहुत वक़्त तक उस अधूरे वाक्य को देखता रहा। कुछ पूरा करने की कोशिश की पर हर शब्द, हर वाक्य एक तरह की हिंसा लग रहा था। मैंने सारा कुछ वापिस मिटाया। उस अधूरे वाक्य को भी मिटाया, लैपटॉप बंद किया और चाय पीकर सो गया।

फिर सुबह हुई। सूरज पूरी बर्फ़ीली पहाड़ी को घेर चुका था। मैं बहुत देर से उठा। मुझे लगा था कि मैं कहानी को अपने ऊपर से झाड़कर सोया था। जब उठा तो कहानी का बोझ पूरे शरीर पर मैं महसूस कर सकता था। शायद आज यह कहानी पूरी होगी ऐसा लगता है। जब कोई कहानी इतनी ज़्यादा अपने भीतर मुझे घेरे रहती है तो वह खुद असल में रास्ता तलाश रही है, बाहर निकलने का। अगर उसके बाहर निकलने में कोई अड़चन है तो वह मैं खुद हूँ। मैंने पहले उठकर पूरा किचेन साफ़ किया और कमरे को जितना व्यवस्थित कर सकता था किया। लैपटॉप उठाकर अपने Croissant और कॉफ़ी के लिए चल दिया। मेरे कमरे से लगभग पंद्रह मिनट की दूरी पर एक छोटा-सा कैफ़े है जिसके पिछवाड़े में जब आप बैठें तो सुबह का सूरज आपके ऊपर अद्भुत आनंद से पड़ता है और वहाँ से आपको Mont Blanc की बर्फ़ीली पहाड़ियाँ भी अपनी पूरी खूबसूरती में नज़र आती हैं। सुबह के अभिवादन के बाद काउंटर पर जो महिला थी उसने मुझे पहचान लिया और मेरे बोलने के पहले उसने कहा, Croissant एंड कॉफ़ी। मैंने मुस्कुराकर 'हाँ' कहा और कुछ ही देर में मैं वापिस अपनी खुली हुई कहानी को लिए अपने Croissant और कॉफ़ी के साथ पीछे बैठा था। हर कुछ देर में मैं सोचने बैठ जाता हूँ कि कहीं लिखने के कारण इस खूबसूरती को तो मैं नज़रअंदाज़ नहीं कर रहा? पर फिर अपनी ही लिखी कविता याद आ जाती है—

थोड़े में बहुत कुछ देख लेना

और बहुत कुछ होने पर हमारा आँखें बंद कर लेना।

मैं कभी-कभी अपना सबसे खूबसूरत सपना याद करता हूँ।

मेरा सबसे खूबसूरत सपना भी कभी,

बहुत खूबसूरत नहीं था।

मेरे सपने भी थोड़ी-सी खुशी में, बहुत सारे सुख, चुगने जैसे हैं,

जैसे कोई चिड़िया अपना खाना चुगती है।

पर जब उसे एक पूरी रोटि मिलती है।

तो वो पूरी रोटी नहीं खाती है,
तब भी वो उस रोटी में से, रोटी
चुग रही होती है।
बहुत बड़े आकाश में भी हम अपने हिस्से का आकाश चुग लेते हैं...
देखने के लिए हम बहुत खूबसूरत और बड़ा आसमान देख सकते हैं।
पर जीने के लिए...
हम उतना ही आकाश जी पाएँगे...
जितने आकाश को हमने,
अपने घर की खिड़की में से जीना सीखा है।

कहानी को मैंने कई बार पढ़ा और अचानक मुझे घोड़ा साफ़-साफ़ दिखने लगा। मैं जानता हूँ ये छोटी खुशी दिखाई दे रही है, पर यकीन मानिए इतने दिनों से उथल-पुथल कर रही कहानी के लिए यह एक बड़ा दरवाज़ा खुला है। मैंने किसी भुक्खड़ की तरह जल्दी-जल्दी अपनी कॉफी और Croissant खत्म किया और कहानी लिखने बैठ गया। करीब एक पन्ना लिखने के बाद मैंने उसे दोबारा पढ़ा और लगा जो भी मेरे अगल-बगल बैठे हैं, उनमें से किसी के गले लग जाऊँ या किसी को चूम लूँ। बेहद प्रसन्नता से उठा और सिर कटे मुर्गे की तरह पूरे शहर में यहाँ-वहाँ भटकने लगा। इच्छा हो रही थी कि किसी लंबी वॉक पर निकल जाऊँ। मैं इस उत्साह को शांत करना चाहता था। मैं थकना चाहता था। इस कहानी को आगे लिखने के लिए जो स्थिरता चाहिए थी उसके लिए इस उत्साह को खत्म करना ज़रूरी था। मैं एक पहाड़ की तरफ़ चल दिया। मुझे एक डंडा मिला जो ज़रूर किसी ने अपनी हाइक करते वक़्त इस्तेमाल किया होगा। मैंने उसे उठाया और सीधा पहाड़ चढ़ना शुरू कर दिया। मैं कुछ ही देर में समझ गया कि यह वह पहाड़ नहीं है जिसमें आप गाना गुनगुनाते हुए चढ़ते हैं। यह पहाड़ सीरियस हाइकिंग के लिए है। मेरे बगल से कुछ लोग निकले जो हाइकिंग के सारे इंतज़ाम के साथ आगे बढ़ गए। मैं तो बस धीरे-धीरे कहानी को दिमाग़ में रखे थकना चाह रहा था। आधे घंटे में मैं भीतर जंगल में था। शहर नीचे दिख रहा था। एक घंटे में मेरे पैर जवाब देने लगे, पर मैं चलता रहा। मुझे अपने उत्साह को पूरी तरह मारना था। जब करीब दो घंटे बाद मुझे अपने आस-पास बर्फ़ दिखने लगी तो मैं रुक गया। रुकते ही मेरे घुटने काँपने लगे। बहुत दिनों बाद मैं लगातार इतनी चढ़ाई चढ़ा था। मैं अपनी पीठ से पसीना सरकता हुआ महसूस कर सकता था। अपनी साँस सँभालते हुए मैं बैठ गया। उस जंगल में मैंने अपना लैपटॉप खोला और कहानी पर काम करना शुरू किया। करीब एक घंटे कहानी के साथ बिताने पर सिर्फ़ चंद वाक्य ही लिख पाया। जंगल की अपनी आवाज़ें थीं जो इतनी ख़ूबसूरत थीं कि बार-बार उन्हें सुनने में मैं मगन हो जाता था। मैं Chamonix में बेहद अकेला था और भीतर तक कहानी की गुफाओं में कहीं गुम था। इन गुफाओं में बहुत कोशिश के बाद भी बहुत अकेला महसूस नहीं कर पा रहा था।

कभी-कभी जब इन जंगलों में खुद को अकेले देखता हूँ तो अपने छोटे शहर की याद आती है। कैसे मैं होशंगाबाद में अपने घर की चौखट पर बैठा हुआ दुनिया घूमने के सपने देखा करता था। क्या उस 'मैं' को यह अंदाज़ा भी होगा कि एक दिन मैं Chamonix की किसी अंजान पहाड़ी पर, बर्फ़ के बगल में बैठा हुआ उसके बारे में लिख रहा होऊँगा? काश उस वक़्त के मैं को यह पता होता कि जो सपना वह देख रहा है, वह असल में सच होने वाला है। मैंने हमेशा से यात्राओं के सपने देखे हैं... जब कश्मीर, ख़वाजाबाग़ में कोई हवाई जहाज़ ऊपर से जाता हुआ दिखता तो मेरे पिता कहते कि ये कैलिफ़ोर्निया जा रहा है। वह ऐसी-ऐसी जगहों के नाम लेते, उस वक़्त लगता कि इन नामों की जगह किसी दूसरे ग्रह पर होगी। फिर जब पहली बार ग्लोब देखा तो सारे नाम उसी में पड़े मिले। मतलब इन जगहों पर जाया जा सकता है? मुझे याद है कि कश्मीर, ख़वाजाबाग़ के हमारे क्वार्टर में बिटको कैलेंडर के शंकर जी के सामने मैंने प्रार्थना की थी कि मुझे बहुत सारी जगहों पर जाना है, बहुत घूमना है। कहाँ वह कश्मीर था, फिर उन सपनों से भरा हुआ होशंगाबाद

और कहाँ फ्रांस का यह जंगल। अभी लगता है कि कितनी आसानी से चमत्कार संभव हो जाते हैं! मुझे नहीं पता कि मैं यहाँ 'आसान' शब्द का इस्तेमाल सही कर रहा हूँ या नहीं। पर संभव सारा कुछ है। इसका बहुत सारा श्रेय मेरे लेखक होने को जाता है, क्योंकि मैं अपने जीवन को भी बतौर एक काल्पनिक कहानी की तरह ही लेता हूँ। अपनी कहानी में मैं जितने अच्छे मोड़ों पर मुड़ूँगा, जितने असंभव की तरफ़ क़दम रखूँगा... मेरा जीवन मेरे लिए उतना ही मनोरंजक होता जाएगा। और ये छोटी-सी चीज़ कितनी महत्वपूर्ण है कि मैं अपने लिए को बहुत संजीदगी से नहीं लेता हूँ। और मैं क़तई अपने जीवन को जीते हुए, अपनी खुद की कहानी में बोर नहीं होना चाहता हूँ। मैं यहाँ अकेले भटकते हुए क्या कर रहा हूँ? इसके जवाब इसमें ही कहीं मौजूद हैं... शायद।

अब वापसी करनी थी। पेट आवाज़ें करने लगा था। बहुत अखरा कि बिस्किट या चॉकलेट ही रख लेता बैग में, पर किसे पता था कि मैं अचानक पहाड़ पर चढ़ना तय करूँगा? चढ़ना उतना कठिन नहीं था जितना वापिस उतरना। मेरे पैर काँप रहे थे और उतराई एकदम खड़ी थी। पहाड़ चढ़ते वक़्त एक रिदम बन जाता है, पर उतरते वक़्त नहीं। उतरने में मैं कई जगह रुका। जब नीचे उतरा तो भूख पेट में उछाले मार रही थी और कहानी दिमाग़ में। मैं सीधा अपने कमरे पर गया। अपने लिए अंडा-ब्रेड और सीरियल तैयार किया। उसे लेकर बालकनी में आ गया। इस वक़्त मेरे दिमाग़ में सिर्फ़ कहानी हरकत कर रही थी। मैंने बहुत खाकर बालकनी का दरवाज़ा बंद किया और सो गया। जब उठा तो दो बज रहे थे। मेरा उत्साह पूरी तरह शांत था और दिमाग़ खाली... मैंने कहानी खोली और तय किया कि जब तक खत्म नहीं होगी उठूँगा नहीं।

बहुत चुप सन्नाटे में कहानी के कुछ आखिरी वाक्य लिखे। 'घोड़ा' जब खत्म हुई तो मैंने सबसे पहले चॉकलेट का एक बड़ा टुकड़ा मुँह में रखा और उसे धीरे-धीरे चूसता रहा। बहुत वक़्त बाद किसी कहानी ने इतने भीतर तक मुझे हिला दिया था। मैंने चाय पीते हुए एक बार पूरी कहानी फिर से पढ़ी और अपने पब्लिशर (शैलेश भारतवासी) को भेज दी। एक गहरी साँस ली और अपने बिस्तर पर बिखर गया, लगा कि कोई मैराथन भागकर आया हूँ। दिमाग़ तो थक गया ही था, पर शरीर भी कुछ इस तरह तिड़क रहा था कि लगा बहुत कुछ निचुड़ गया है।

थोड़ी देर में उठकर देखा तो अजीब लगा, मुझे लगा था कि मैंने किचेन साफ़ किया था सुबह और कमरा थोड़ा सलीके से जमाया था? पर ऐसा कुछ नहीं था। किचेन अभी भी गंदा पड़ा था, पर कमरे का बिखरापन मुझे अखर नहीं रहा था। मैं भीतर से एकदम खाली था और बाहर का बिखरापन बैलेंस बनाए रख रहा था। मैंने वक़्त देखा, छह बजने को आए थे। मैंने बालकनी का दरवाज़ा खोला। बाहर मौसम बहुत ख़ूबसूरत हो रहा था। मैंने सोचा कि अब एक लंबी वॉक पर निकला जाए। मेरी चाल में फिर से एक उछाल था। इच्छा हुई कि किसी टूरिस्ट को पकड़कर कहूँ कि मैंने बहुत मन से एक कहानी अभी लिखकर खत्म की है। उस कहानी का नाम 'घोड़ा' है और मुझे बहुत-बहुत अच्छा लग रहा

है। मैं यह तो नहीं कह पाया, पर मैंने कुछ बूढ़े लोगों से बहुत गर्मजोशी से हैलो कहा। एक बूढ़ा आदमी अपनी बालकनी पर अकेले बैठे हुए, बर्फीली पहाड़ियों को देखते हुए ड्रिंक कर रहा था। मैंने उससे कहा, “ये जीवन कितना खूबसूरत है!” उसने बालकनी से मुझे ऐसे देखा मानो मैं चाइनीज़ में बात कर रहा हूँ। वह उठकर भीतर चला गया। मैंने सोचा अपने उत्साह को मुझे अकेले ही सेलिब्रेट करना पड़ेगा। मैंने चर्च के पास एक कैफ़े देखा—अपने कोने में अकेला-सा। मैंने तुरंत एक बियर ऑर्डर की, फिर दूसरी, फिर तीसरी।

सुबह-सुबह नींद खुली तो एक वाक्य कल रात से ज़ेहन में कुंडली मारे बैठा था, “उनका नाम आनंद था।” वह सुबह भी वहीं का वहीं था। मैं बिस्तर से उठते ही लैपटॉप खोला और एक नया word document open किया और लिखा, “उनका नाम आनंद था।” फिर चाय का पानी गर्म करने रखा और बहुत से इकट्ठा हुए बर्तनों को माँजने लगा। एक कहानी जो मैं बहुत वक़्त से लिखने की सोच रहा था, पर कभी उसे कागज़ पर उतार नहीं पाया था। लैपटॉप खुला हुआ था और मैं चाय लिए उसके सामने बैठा था, “आनंद...” मैं जानता हूँ इस शब्द के पीछे छुपे हुए आदमी को। थोड़ी देर वह वाक्य पढ़ने के बाद आनंद का चेहरा हल्का-हल्का दिखने लगा। मैंने अगला वाक्य लिखा, फिर अगला और एक सिलसिला बन गया। विनोद कुमार शुक्ल कहते हैं, “मैं दृश्य में सोचता हूँ। मुझे दृश्य दिखता है और मैं उसे लिखना शुरू करता हूँ।” मुझे भी ठीक वैसा ही लगता है। मैं वहाँ पूरी तरह मौजूद होता हूँ, जहाँ कहानी घट रही होती है। मैं पात्र नहीं होता। मैं उपस्थित रहता हूँ हर जगह—किसी डिटेक्टिव-सा। हर एक बारीक हरकत को दर्ज करता हुआ। फ़्रांस में रहकर महज़ चाय से काम नहीं चलता। मुझे मेरा Croissant और कॉफ़ी चाहिए। लैपटॉप बंद करके मैं सीधा अपने कैफ़े की तरफ़ रवाना हुआ।

दो बूढ़ी महिलाएँ America के Minnesota से आई हुई थीं। वे अपना सामान लिए बग़ल की टेबल पर बैठी थीं। मैं अपने कॉफ़ी और Croissant के साथ मगन था, तभी Mary Michael नाम की महिला मेरी टेबल पर आई और उसने पूछा यहाँ से इटली कैसे जाते हैं? मैंने कहा कि यह जो बर्फीला पहाड़ आपको दिख रहा है Mont Blanc, उसके दूसरी तरफ़ इटली है, आप चाहें तो पैदल भी जा सकती हैं। Mary इस चुहल पर वह हँसने लगीं। पीछे उसकी सहेली ने बस अपने कंधे झटक दिए, शायद उसे मेरा ह्यूमर पसंद नहीं आया। Mary ने कहा कि क्या मैं यहाँ बैठ सकती हूँ, मुझे कुछ जानना है। मैंने ‘प्लीज़’ कहा और वह बैठ गई। बहुत देर तक मैं उन्हें इटली जाने के तरीक़े समझाता रहा। जब उन्हें थोड़ा कुछ समझ आया तो उन्होंने मुझे ‘धन्यवाद’ कहा। फिर पूछा आप इंडिया से हैं? मैंने पूछा आपको कैसे पता। आपकी अँग्रेज़ी से पता चल जाता है। मुझे नहीं पता था कि मेरा एक्सप्रेट इतना अलग है कि लोग पकड़ पाएँ। फिर Mary ने कहा कि असल में उन्होंने तमिल और हिंदी अपने कॉलेज में सीखी थी। इसलिए उन्हें इंडियंस के बारे में पता है।

“मेरे लिए तमिल और चाइनीज़ बराबर हैं।” Mary हँसी और उसकी दोस्त ने फिर कंधे झटक दिए।

“तुम अकेले ट्रैवल कर रहे हो?” Mary ने पूछा।

“हाँ। करीब एक महीना होने को है।”

“ओ! यह तो अच्छी बात है। क्या मैं आपसे एक पर्सनल सवाल पूछ सकती हूँ?”

मैंने कहा, “बिल्कुल।”

“क्या आपकी शादी हुई है?”

मैंने कहा, “नहीं।”

“क्या उम्र है आपकी?”

“Forty three.”

“क्यों नहीं की शादी? Sorry for being personal.”

“Its okay. मैं खुद इसका कारण कभी-कभी खुद से पूछता हूँ। अभी तक तो जवाब नहीं मिला।”

Mary फिर हँसी और उसकी दोस्त ने इस बार निराशा भरा ‘हुह’ किया। मेरी समझ में नहीं आया कि मैं ऐसा क्या कहूँ कि Mary की दोस्त को एक बार हँसी आ जाए।

“जब आप पचास के होंगे तो आपके विचार बदलेंगे।”

“शादी के बारे में?”

“जी हाँ।”

“तब तक वैसे भी बहुत देर नहीं हो गई होगी?”

“बिल्कुल नहीं।”

यह कहते ही वह अजीब-सी हँसी हँसने लगीं। अचानक वह एक अनजान महिला से किसी दूसरी चीज़ में तब्दील होती जा रही थीं। मैं इस हँसी को ठीक से समझ नहीं पाया। फिर एकदम उन्होंने पूछा, “क्या तुम यीशू के बारे में कुछ जानते हो?”

मैं तब समझा कि अच्छा ये सारे अच्छे संवाद कहाँ जा रहे हैं। मैंने कहा, “जी जानता हूँ।”

“नहीं कैथलिक नहीं, क्रिश्चियन यीशू के बारे में?”

“जितना बतौर कहानी पता होना चाहिए उतना तो जानता ही हूँ।”

“तो अभी तुम्हारा काला दिल है। जब तुम कहते हो कि मैं यीशू से प्यार करता हूँ तो वह दिल लाल हो जाता है फिर यीशू तुम्हें उस लाल दिल के बदले सफ़ेद दिल दे देते हैं।”

इस बार मैं अपने आपको रोक नहीं सका और मेरी हँसी छूट गई। मैंने अपनी हँसी पर क्षमा माँगी। उन्होंने कहा कि मैं पैसठ की उम्र की हूँ, इसलिए तुमसे कह रही हूँ कि यीशू को जानो।

मैंने कहा कि देखिए मैं भारत से हूँ और हमारे यहाँ सारे धर्म अपनी पूरी शिद्दत के साथ मौजूद हैं। पर आपको थोड़ा दुख होगा यह जानकर कि मैं नास्तिक हूँ। आपकी भाषा में कहूँ तो कट्टर नास्तिक।

“क्या तुमने बाइबिल पढ़ी है?”

“नहीं।”

“तो पढ़ो।”

“अगर कहानी मनोरंजक है, ह्यूमर है तो एक दिन पढ़ूँगा। वैसे अभी पढ़ने के लिए काफ़ी कुछ और बाक़ी है।”

“मनोरंजक नहीं, महत्वपूर्ण है।”

मेरी इच्छा हुई कि मैं उनसे पूछूँ कि आपने काफ़का पढ़ा है? बुद्धिज़्म पढ़ा है? Gorky, Dostoevsky, Sartre, Camus, हरिशंकर परसाई, विनोद कुमार शुक्ल, नेमाज़े, Coetzee, Saul Bellow, Brecht, Nietzsche, Wittgenstein और भी जाने कौन-कौन...। पर तभी मैंने देखा कि Mary की दोस्त भी मेरी टेबल पर आ चुकी है। मैं थोड़ा घिर चुका था, पर कुछ ही देर में Mary की दोस्त अपने मोबाइल में व्यस्त हो गई, पर वह वहीं बैठी रही। वह मेरी तरफ़ देख भी नहीं रही थी।

“आप पुनर्जन्म में यक़ीन रखते हैं?” उनका अगला सवाल था। अब यह संवाद मेरे लिए एकदम उबाऊ होने लगा था।

“क़तई नहीं।”

“क्यों?”

“क्यों रखूँ यक़ीन ऐसी चीज़ों में? मुझे यक़ीन इस कॉफ़ी पर है, जो मैं पी रहा हूँ। आपको पता है कि कितनी टेस्टी है ये कॉफ़ी? मैं रोज़ सुबह इसे अपनी शांति में पीने आता हूँ।”

“तो जब आप मरेंगे तो क्या होगा?”

“तो मैं मर जाऊँगा।”

“फिर...?”

“फिर छुट्टी।”

मैं थोड़ा चटने लगा था। अब मैंने कहा, “देखिए अगर आपको लगता है कि इस जीवन का कोई मतलब है तो ये मुग़ालता है। इस जीवन का कोई मतलब नहीं है। पर हम इंसानों के पास बहुत तेज़ दिमाग़ है। वह यह कभी मानने को तैयार नहीं है कि ये सारा कुछ बस ऐसे ही है और एक दिन हाथों से सब निकल जाएगा। तो ये सारी कहानियाँ हैं, हमारे पास जो कि सिर्फ़ और सिर्फ़ मनोरंजन के लिए हैं। इसके अलावा अगर आपको इन कहानियों को अपनी ज़िंदगी में ज़्यादा संजीदगी से लेना है तो बिल्कुल लीजिए, क्योंकि इससे भी कुछ फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। जब मृत्यु होगी तब होगी। अगर आपको अगला जीवन चाहिए तो good for you... अगर मिले तो अगले जीवन में ऐश करना।”

मैंने एक साँस में यह सारा कुछ बोल दिया।

“यीशू तुमसे प्रेम करते हैं।” उन्होंने एक प्लास्टिक-सी मुस्कुराहट के बाद कहा।

“और मैं इस वक़्त अपनी कॉफ़ी से... इसके बेहद प्यार में हूँ मैं अभी।”

इस बात पर अपने कंधे झटककर Mary की दोस्त उठकर वापिस अपनी टेबल पर गई। Mary कुछ देर चुप मेरे सामने बैठी रही। फिर धन्यवाद कहकर उठी और अपनी

टेबल पर चली गई। कुछ देर में मैंने लैपटॉप खोला, पर कुछ लिखने का मन नहीं किया। वह दोनों अपनी कॉफी खत्म करके जाने लगे। Mary ने बाँय कहा।

“आपको आपकी इटली यात्रा के लिए शुभकामनाएँ मेरी तरफ़ से... मज़े करिए।”

“एक बात पूछूँ?” Mary ने कहा और मेरी इच्छा हुई कि इस बार बोल दूँ... नहीं।

“पूछिए?”

“क्या इंडिया में लोग अमेरिकन राजनीति के बारे में जानते हैं?”

“आपको यकीन नहीं होगा कि इंडिया में लोग अमेरिकंस से ज़्यादा उनकी राजनीति के बारे में जानते हैं।”

“ओ गुड... तो इंडिया में लोग Trump के बारे में क्या सोचते हैं?”

मुझे हँसी आने लगी थी। मेरी हँसी को Mary की दोस्त ने बहुत ही अचरज से देखा। मैं जवाब देने ही वाला था कि Mary ने कहा, “आपको बता दूँ कि मुझे ट्रंप बहुत पसंद है।”

मैंने बिल्कुल सीधी तरह कहा, “मुझे पता था कि आपको ट्रंप पसंद होगा। इंडिया में ट्रंप को लोग जोकर मानते हैं।”

“ओ... सरप्राइज़िंग... और आप?”

“मैं इंडियन हूँ, पर मेरे लिए वह एक बोरिंग जोकर है।”

“तो इसका मतलब आप हिलेरी को पसंद करते हैं?”

“नहीं... पर अगर बुरे और बहुत बुरे में से चुनना पड़े जो कि राजनीति में हमेशा होता है तो मैं हिलेरी को चुनूँगा।”

“क्यों ट्रंप ने क्या बुरा किया है? He is a good Christian.”

मेरी इच्छा हुई कि उनसे पूछूँ कि ट्रंप ने जब कहा कि grab them by the pussy आप औरतों को यह भी a good Christian होने की निशानी लगी? पर मैंने कहा, “हम सारे लोग एक ही हैं... इंसान... यह एक एक्सीडेंट से ज़्यादा कुछ नहीं है कि आप Minnesota में एक क्रिश्चियन परिवार में जन्मीं और मैं कश्मीर में पैदा हुआ या फ़्लाँ कोई मुसलमान है या बुद्धिस्ट है। वह आदमी सबसे खराब है जो हमें आपस में, एक-दूसरे के प्रति घृणा करना सिखाए। पर आज की राजनीति यही है, और ट्रंप, आप लोगों की वजह से ही जीतता जाएगा। क्योंकि आप जैसे लोग अंत में अच्छा क्रिश्चियन हैं, कोई अच्छा हिंदू है, कोई अच्छा मुसलमान... पर हमें ज़रूरत सिर्फ़ अच्छा इंसान होने की है, उससे ज़्यादा की नहीं।”

“मैं समझ गई।” वह जाने को हुई और मैंने पीछे से कहा, “ईद मुबारक हो... Happy Eid.”

वह पलटी, पर उन्होंने इसका कोई जवाब नहीं दिया। मैंने मुस्कुराकर नमस्ते कहा। आज सच में ईद थी और मुझे खुशी हुई कि मुझे सही वक़्त पर ईद याद आई। जब अपनी कॉफी पर वापिस आया तो कॉफी ठंडी हो चुकी थी।

मेरे लिखने का पूरा सुर गड़बड़ा चुका था। मैंने अपना लैपटॉप अपने कमरे पर छोड़ा और Anthony Bourdain की किताब लेकर लंबी वॉक पर निकल गया।

Chamonix के एक छोटे गाँव से होता हुआ मैं Mount Blanc की बर्फीली पहाड़ियों की तरफ़ जाने लगा। उस छोटे से गाँव के बाद एक पगडंडी दिखी जो ऊपर पहाड़ों की तरफ़ जा रही थी। मैं उस ओर जाने लगा। एक छोटा बोर्ड आया जिस पर लिखा था La Casade du Dard और ट्रेक करने वालों का चिह्न बना हुआ था। मैं ऊपर की ओर जाने लगा। करीब एक घंटा चलने पर मैं अचानक एक बड़े-से झरने के पास आ गया। सीधा Mount Blanc से आता हुआ ठंडा झरना। मैं उसके करीब गया और एक पत्थर पर बैठ गया। झरने से आती हुई फुहारें मेरे चेहरे और शरीर को भिगोने लगीं। इतना चलने के बाद जो शरीर में गर्मी और पसीना आ गया था, उन फुहारों में लगा कि यह एक इनाम है। ऊपर से पानी के गिरने की आवाज़ इतनी ज़्यादा भारी होती है कि उसमें सारा कुछ घुल जाता है। भीतर और बाहर कुछ भी दूसरी चीज़ हरकत नहीं कर रही थी सिवाय पानी के। मैं सोचने लगा कि कितनी देर मैं इस पानी का इस क्रूर प्रचंड रूप में गिरना देख सकता हूँ? शायद बरसों-बरस तक। ध्यान की कुछ अवस्थाएँ ऐसी ही होती होंगी शायद... बहुत प्रचंड, पर एकाग्र।

उसी झरने के पास एक कैफ़े था। मैंने कॉफ़ी ऑर्डर की और Anthony Bourdain की किताब खोलकर बैठ गया। मेरा एक बहुत ही पसंदीदा यात्री, लेखक था Anthony उसे पढ़ते हुए यह बात दिमाग़ से बाहर निकालना बहुत मुश्किल है कि उसने आत्महत्या कर ली है। जब मुझे यह बात पता चली थी तो मेरे मुँह से निकला था Not Him. कैसे इतना जिंदादिल आदमी इस तरह से जा सकता है। अभी उसे पढ़ने में उसके आत्महत्या करने का चश्मा हटता नहीं है। एक अजीब-सी सांत्वना का पर्दा डला रहता है जो मुझे क़तई पसंद नहीं है। मैं कोशिश कर रहा था कि वह पर्दा हट जाए पर बहुत मुश्किल था। तभी जंग-हे का मैसेज आया कि तुम नौ तारीख को आ सकते हो। मैं खुश हो गया कि अंत में आठ साल बाद मैं जंग-हे से मिलूँगा। मैंने उनसे कहा कि मैं अभी Geneva जा रहा हूँ यहाँ से। जब मैं ट्रेन का टिकट ले लूँगा तो बता दूँगा। मुझे लगा कि यह कैसा संयोग है कि मैं अभी Anthony Bourdain को अपना जीवन इस तरह से ख़त्म करने पर कोस रहा था और ठीक इसी वक़्त जंग-हे का मैसेज आया।

मुझे याद है जब मैं अपने एक महीने के कोरिया-प्रवास के बाद वापिस मुंबई आया था, उस वक़्त मैं एक गहरे डिप्रेशन में चला गया था। न पैसा था, न ही घर का किराया देने का कोई साधन। मैं 'लाल पेंसिल' नाम का प्ले कर रहा था और लोगों से दो-दो हज़ार रुपए प्रोडक्शन के लिए इकट्ठा कर रहा था। ऐसे ही किसी मौक़े पर मुझे याद है मैं अपनी बाइक से, देर रात, अपने घर की तरफ़ जा रहा था। मैं मुंबई के वेस्टर्न हाइवे पर था और अचानक मुझे लगा कि इस तेज़ रफ़्तार में गिर जाता हूँ... बहुत दूर घिसटता हुआ जाऊँगा, इसका सुख मैं चलती हुई बाइक पर महसूस कर सकता था। मैं कई दिनों तक वनराई कॉलोनी के छोटे से कमरे में खुद को बंद करके रखता था। भूख लगने पर खुद से खीझ होती थी। खाना चबाने में थक जाता था। बहुत छोटी बातों पर लोगों के सामने देर तक हँसता रहता और अकेले में कभी भी फूटकर रोने लगता। अगर कोई उस वक़्त मुझसे पूछता कि क्या मैं डिप्रेस हूँ? तो मैं ज़रूर उस पर हँस देता। हमारे समाज की व्यवस्था ऐसी

है कि आप अपने बहुत करीबी दोस्त से भी यह नहीं कह सकते कि मैं कल देर रात बहुत देर तक बिना कारण रोता रहा। क्योंकि इस तरह का जीवन हमने ही बहुत लड़कर, सारे बहाव के विरुद्ध बहकर चुना है। अब कैसे कह दें कि तैरते नहीं बन रहा है? मैं डूबना चाहता हूँ। मैं उस वक़्त डूबना चाहता था। मैं पूरी तरह सब कुछ ख़त्म कर देने पर आमादा था। कुछ रातों के बारे में सोचकर मैं अब सिहर जाता हूँ। अब लगता है कि किसी से कह देना चाहिए था, पर किससे? इसका चुनाव अभी भी बहुत मुश्किल है। बतौर निर्देशक आप अपने दोस्त खो चुके होते हैं। आपसे लोग अपेक्षा रखते हैं। आपकी अपेक्षाओं के दरवाज़े बंद हो चुके होते हैं। शायद मेरा बंद हो जाना मेरा ही दोष था। मेरे दोस्त शायद हमेशा से थे वहाँ पर, उस वक़्त मुझे कोई भी दिखता नहीं था। सबके साथ होता तो जल्दी से अकेला होना चाहता। अकेला रहता तो लगता कि साँस लेना मुश्किल हो रहा है। किसी से मिल लेता हूँ और किसी से मिलते ही पछताने लगता। मुझे अपने दो-तीन साल का हिसाब अभी तक नहीं है। बस एक ही अच्छा काम किया था मैंने कि उन तीन सालों में कि मैंने लिखना पूरी तरह बंद कर दिया था, वरना मेरी पूरी लिखाई उस पीड़ा से सनी होती और मुझे आज अपने उन दिनों के लिखे से उबकाई आती रहती।

मैं Anthony Bourdain के बारे में बिल्कुल ग़लत सोच रहा था। अचानक मेरा पर्दा हट गया। मैं अब उसे समझ सकता था। अब मुझे पता नहीं कि त्रासदी क्या है? मैं अभी तक ज़िदा हूँ कि उसने आत्महत्या कर ली है? मैंने Anthony Bourdain की किताब को बंद किया और फिर से शुरू से उसे पढ़ना शुरू किया।

आज की सुबह स्याह है Chamonix में। मेरा आखिरी दिन है इस ख़ूबसूरत शहर में। आखिरी दिन आप कोई भी नई चीज़ नहीं देखना चाहते। आखिरी दिन आप उन्हीं जगहों पर जाना चाहते हैं जिन जगहों पर आपने ख़ुद को बहुत सहज पाया था। ये संबंध पूरी तरह जगहों से है, जो मुझे हमेशा याद रह जाती हैं। ठंड बहुत बढ़ गई थी और उसका असर यह था कि मैं किसी भी कैफ़े में बैठता मेरी उँगलियाँ ठंड से कड़क हो जातीं और मुझसे टाइप नहीं करते बनता। मुझे कहानी लिखने में मज़ा आ रहा था, पर मेरी उँगलियाँ मेरे विचार की रफ़्तार से नहीं चल रही थीं जिसकी वजह से ग़लतियों पर ग़लतियाँ हुए जा रही थीं और जब तक मैं ग़लतियाँ ठीक करके आगे बढ़ूँ मेरे विचार मेरा साथ छोड़ देते। अंत में मैंने गुस्से में लैपटॉप बंद कर दिया। एक ठक की आवाज़ हुई। मुझे लगा कि कहीं मैंने लैपटॉप ही तो नहीं तोड़ दिया जिसकी मैं पूरी क़ाबिलियत रखता हूँ। लैपटॉप ठीक था, तभी बग़ल की टेबल से आवाज़ आई—“every this is all right?” मैंने देखा एक जवान लड़का बैठा था, जिसे मैंने कई बार चौराहों पर या पार्क बेंच पर बैठे हुए अपनी डायरी में कुछ लिखते हुए देखा था। इतने दिनों बाद साफ़ अँग्रेज़ी सुनने को मिली तो मैं खुश हो गया। मैंने कहा कि हाँ अभी टूटा नहीं है। वह हँसने लगा। उसने अपना नाम निकोलस बताया, वह इटली से है। मैंने उससे पूछा कि तुम्हारी अँग्रेज़ी इतनी साफ़ कैसे है?

वह न्यूयॉर्क में पढ़ा है। वह काफ़ी मोटी डायरी लिए घूम रहा था और जिन पन्नों पर वह था, लग रहा था कि क़रीब महीने-दो महीने से तो लिख ही रहा है। मैंने पूछा, “क्या करते हो?”

“मैं यहाँ होटेल में काम करता हूँ, नाइट ड्यूटी है। मेरा पहला काम। मैं नवंबर तक यहाँ हूँ। इस वक़्त मेरी माँ, मेरी बहन के पास गई है, वे Los Angeles में रहते हैं। वे तस्वीरें भेज रहे हैं मुझे और मैं यहाँ पहाड़ों में फँसा पड़ा हूँ।”

इसे कहते हैं साफ़ दिखने वाला अकेलापन। कैसे इस उम्र में उसे समझ आएगा। वह इतनी खूबसूरत जगह में है और उसे लग रहा है कि कहाँ फँस गया है। मुझे लगा उसने बहुत वक़्त से किसी से बात नहीं की है सो वह एक साँस में अपनी सारी बातें बता देना चाहता है। उसने उसकी माँ की और उसके परिवार की तस्वीरें भी दिखाई जिसमें वे किसी beach पर घूम रहे हैं। उसके परिवार की सारी जानकारी के बाद मैंने पूछा—“क्या लिखते रहते हो?” तो वह शरमा गया। कहने लगा कि यही है जिसके सहारे वक़्त कट जाता है। मैं अपनी प्रेमिका से बात करता हूँ, मतलब जब मैं यहाँ से वापिस जाऊँगा तो उसको ये दे दूँगा कि रोज़ मैं उसके बारे में सोच रहा था और उससे ये सब बातें कर रहा था। मैंने कहा कि ये तो तुमने काफ़ी सारा लिख दिया है? वह पढ़ पाएगी इतना सारा? उसे अपने प्रेम पर बहुत विश्वास था, उसने जवाब दिया, “क्यों नहीं पढ़ेगी?” यह उम्र होती ही ऐसी है। हर बात पर विश्वास सीधा सात जन्मों का होता है। कितना रश्क होता है मुझे इस उम्र से। उसने मेरा नाम पूछा और पूछा आप क्या करते हो? मैंने कहा कि मैं लेखक हूँ, मगर तुम्हारे जितना कमाल नहीं। मुझे बहुत कोशिश करनी पड़ती है। वह हँसने लगा। मैं अपने लिखे पर वापिस जाना चाहता था और शायद वह भी। मैं उस रेस्त्राँ के भीतर चला गया। वहाँ भी मेरी उँगलियों को बहुत वक़्त लग गया सामान्य होने में। मैं अपनी कहानी पर वापिस आया।

दस पाँच की बस है जो मुझे Geneva ले जाएगी। Chamonix में आखिरी सुबह। कभी-कभी लगता है कि सारा खेल बिगाड़ दूँ और यहाँ आकर रहने लूँ। इतना कठिन भी नहीं है। क्यों मैं एकदम अँधेरे-वीराने से, एक छोटा-सा प्रकाश लिए, एकदम शुरू से सारा कुछ शुरू नहीं कर सकता? शायद मरने के पहले भी ऐसा ही कुछ विचार कौंधता होगा? यात्राएँ इसलिए जीवन के इतने क़रीब हैं। आप निकल जाते हैं, आप कहीं भी रहते नहीं। इस शहर का सुर मेरे सुर से एकदम मेल खाता था। यहाँ मैं कई महीने बिता सकता था, पर ये अपनी पूरी सुंदरता के साथ यहाँ रहेगा और आप जा चुके होंगे। कितना ज़्यादा सही है ये! कल पूरा दिन स्याह रहा, पर जब मैं अपने पसंदीदा पब L'Alibi से उठा तो देखा आसमान साफ़ हो गया था और Mont Blanc अपनी पूरी खूबसूरती के साथ साफ़ दिख रहा था। यह शायद अलविदा कहने का सुंदर तरीका था। मैं अपने कमरे पर नहीं गया। मैं इस शहर की छोटी-पतली गलियों में घूमने लगा, मानो इस शहर की नसों में से होकर गुज़रना चाहता हूँ। मन बहुत प्रसन्न था। नई कहानी बहुत आगे बढ़ गई थी और आसमान खुला नीला था और सामने बर्फ़ीले पहाड़। मेरे चेहरे से मुस्कुराहट खत्म नहीं हो रही थी। सोचा ऐसे तो रूम पर नहीं जाया जा सकता। मैं एक नए पब में गया, वहाँ बियर ऑर्डर की और बाहर Mont Blanc को चियर्स करके अपना आखिरी ड्रिंक पीने लगा।

कुछ ही देर में बादल वापिस आए और सारे पर्वत मेरी आँखों के सामने से गायब हो गए। मेरी बियर भी खत्म हो चुकी थी। मैं लड़खड़ाता हुआ इस शहर को विदा कहते हुए अपने कमरे पर आया था। पूरी रात बैचेनी में गुज़री। कहानी इतनी ज़्यादा दिमाग में दौड़ रही थी कि आँखें बंद करूँ तो आनंद दिखने लगते थे। कहानी का नाम 'आनंद' है। और जब नींद आई तो देर रात लोगों की पार्टियों की आवाज़ें बंद नहीं हुईं। इन आवाज़ों ने सोने नहीं दिया। मैंने कई बार अपना लैपटॉप खोला पर लिखने का मन नहीं हुआ। कुछ नोट्स लिए और सोने के अभिनय में व्यस्त रहा।

खुले आसमान के नीचे Croissant और कॉफी पीना बहुत ज़रूरी था। सो पहला काम सुबह वही किया। Mont Blanc की पहाड़ियों को देर तक ताकता रहा कि इन्हें भीतर कैद कर लूँ कि जब चाहूँ आँखें बंद करूँ और इन पहाड़ों की खुशबू आ जाए, पर यह होगा नहीं। मैं ठीक ऐसा महसूस नहीं कर पाऊँगा कभी। सोचा जल्दी कॉफी खत्म करके एक बार पूरे शहर का चक्कर लगा लिया जाए।

मैं बस स्टॉप पर खड़ा था और मेरी बस अपने वक़्त पर आई नहीं थी। ऐसा होता नहीं है। मैंने टिकट चेक की और तब पता चला कि मैंने जून के बदले सात जुलाई का टिकट बुक किया है। मतलब सच में मैं यहीं रहना चाहता हूँ। यह सोच ही रहा था कि बस आ गई। मैंने ड्राइवर से बात करने की कोशिश की जो इटैलियन था और क़तई अँग्रेज़ी नहीं बोल पाता था। मैंने अंत में थककर कहा कि एक टिकट Geneva का मिलेगा? उसने 'हाँ' कहा और मैं बस में बैठ गया। पूरी बस में मैं किताब पढ़ता रहा। मुझे Geneva नहीं आना था। मैंने बहुत कोशिश की कि किसी छोटे टाउन में चला जाऊँ पर हर जगह का कनेक्शन Geneva से ही होकर गुज़रता है, जहाँ मुझे जाना था। और फिर मैं जंग-हे को भी वादा कर चुका हूँ कि उससे मिलने आऊँगा। Basel, Geneva से जाना बहुत आसान है। मैं Geneva में प्रवेश करता हूँ और मुझे लगा इस शहर को भी पता है कि मैं यहाँ नहीं आना चाहता हूँ। हम दोनों ने एक-दूसरे को हिक़ारत से देखा। मैं उसके इतने बड़े और टूरिस्टिक होने पर मुँह बना रहा था और वह शायद मेरे इतने छोटे और इतना टुच्चा होने पर। हम दोनों ने पहली नज़र में एक-दूसरे को नापसंद कर दिया। और लोग सही कहते हैं कि स्विट्ज़रलैंड सच में बहुत महँगा है। अपने हॉस्टल का रूम लेने के बाद मैंने सामान पटका और Geneva के ओल्ड टाउन की तरफ़ रवाना हुआ। लेक Geneva से पैदल-पैदल होता हुआ, मैं ओल्ड टाउन में प्रवेश करता हूँ और मुझे स्टारबक्स दिखता है। यूँ मैं फ़्रांस में कभी स्टारबक्स नहीं गया, पर यहाँ इतना परायापन लग रहा था कि मुझे किसी छोटी ही सही पर अपनी चीज़ की ज़रूरत थी। मैंने अपनी अमेरिकानो मिल्क के साथ ऑर्डर की और ओल्ड टाउन के साथ अपनी पहली कॉफी पीते हुए इस शहर से कहा कि छोड़ो हमारी आपसी राय अब तो हम दोनों यहाँ हैं, मैं तुम्हें स्वीकारता हूँ और तुम मुझे स्वीकार लो... इस शहर ने कोई जवाब नहीं दिया।

मेरे लिए Annecy, Geneva जैसा ही है; पर इससे छोटा, ज़्यादा सुंदर और आत्मीय शहर है। यूँ मैंने भी बहुत कोशिश नहीं की, पर इस शहर ने तो मुझे बिल्कुल भी स्वीकारा नहीं। कुछ आगे चलकर जब मैं Geneva के पुराने शहर की सुंदरता देख ही रहा था कि एक कार ने मुझे टक्कर मार दी। मेरे बाएँ पैर के घुटने के नीचे, हड्डी में चोट आ गई। वह आदमी कार से उतरकर मुझसे फ्रेंच, इटैलियन, जर्मन क्या कह रहा था मेरी कुछ समझ नहीं आ रहा था। मैं खड़ा हुआ और एक तरफ़ चलने लगा ताकि सड़क पर भीड़ जमा न हो। तब तक मौक़ा पाकर वह गाड़ी वाला भी चल दिया। चलते वक़्त मुझे दर्द होने लगा। मैं एक कैफ़े में बैठा गया। कुछ देर में ठीक लगा पर ज्यों ही चलना शुरू किया दर्द फिर वापिस आ गया। Geneva के पुराने शहर में चढ़ाई है, सीढ़ियाँ हैं, उतराई है... पर अब मैं इतनी दूर आ गया था तो वापिस जाना मुश्किल था। मैं सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। पुराना शहर सच में काफ़ी सुंदर है। मैंने एक सुंदर-सा कैफ़े देखा और वहाँ उनकी सबसे ज़्यादा बिकने वाली वाइन ऑर्डर की। मैं वाइन ड्रिंकिंग उतना समझता नहीं हूँ। वाइन मेरे लिए या तो कड़वी होती है, या मीठी होती है या इनके बीच में कुछ होती है। मैं वेटर से ही पूछ लेता हूँ कि सबसे ज़्यादा बिकने वाली वाइन कौन-सी है?

Geneva में मेरी भी एक ग़लती रही कि मैं बहुत ज़्यादा अपनी कहानी में हूँ। मैं असल में इस शहर में टहल भी नहीं रहा हूँ। हर कुछ देर में लैपटॉप खोलकर लिखने बैठ जाता हूँ और शायद कार की टक्कर भी मेरी ही ग़लती हो। मैं कहीं भी सीधा नहीं चल पा रहा था। एक म्यूज़ियम गया और यह शायद पहली बार हुआ कि जैसा गया वैसा का वैसा बाहर आ गया। किसी चीज़ का कोई असर नहीं हुआ। पूरे शहर में यहाँ-वहाँ काम करते और हल्का लँगड़ाते चलने में बहुत थकान हो चुकी थी। अंत में मैं बोट पकड़कर अपने कमरे की तरफ़ आया। Lake Geneva के किनारे एक बियर पी, फिर कुछ कहानी पर काम किया। इस बीच मैं खाना भूल गया। रास्ते से कप नूडल लेकर कमरे पर आया। कप नूडल एकदम तीखे और बहुत ही बेस्वाद निकले। बिल्कुल खा नहीं पाया। कमरे की खिड़की में बाहर की तरफ़ से एक लोहे का शटर लगा था। मैंने बहुत कोशिश की, पर वह खुला नहीं। यह हॉस्टल है जहाँ एक प्राइवेट कमरा मैंने अपने लिए बुक किया था। पहली बार कोई कमरा मुझे अच्छा नहीं लगा। कहानी पर काम करने की मिठास बहुत पीछे रह गई, इस शहर की कड़वाहट के, यूँ खत्म हुआ पहला दिन Geneva में... भूखे, गुफानुमा कमरे में लँगड़ाते हुए। मैं बिस्तर पर अपनी एक बियर लेकर पस्त हो गया।

Geneva के अगले दिन मैं उठते ही सबसे पहले Tram पकड़कर UN (United Nations) गया। मुझे Daniel Berset की Broken Chair देखने का बड़ा मन था। एकदम सुबह वहाँ कोई भी पर्यटक नहीं थे। वह बड़ी-सी टूटी हुई कुर्सी सच में एक उदासी की तरफ़ आपको खींचती है।

“Broken Chair is a symbol of both fragility and strength, precariousness and stability, brutality and dignity.” UN के

ऑफ़िस के ठीक सामने, Geneva जैसे अमीर शहर में एक बड़ी-सी टूटी हुई कुर्सी बहुत कुछ कहती है। साल 1997 में इसे सबसे पहले प्रस्तुत किया गया था। मैं बहुत सुबह लंगड़ाते हुए हॉस्टल छोड़ चुका था, इस वक़्त कोई भी म्यूज़ियम नहीं खुले थे। मैं वहाँ से चलता हुआ वापिस पुराने शहर की तरफ़ आ गया। शनिवार की सुबह पूरा शहर अपनी सुस्ती में था। मैंने सुबह से एक कॉफ़ी भी नहीं पी थी और कहानी पूरे शरीर में घूम रही थी। मैं पहली कॉफ़ी के साथ कहानी शुरू करना चाह रहा था। बहुत मुश्किल से मुख्य सड़क के लगा हुआ एक कैफ़े दिखा। कुछ ही देर में मैं अपनी कॉफ़ी के साथ कहानी के सामने बैठा था। मैं जितना भी लिख रहा था उसमें एक थकी हुई उदासी तैर रही थी। कहानी के हिस्सों को वह घसीटकर कल की मेरी थकी हुई दोपहर में ले जा रही थी, जहाँ पुराने शहर की अँधेरी सीढ़ियों पर मैं ऊपर-नीचे हो रहा था। मैंने लिखना रोका। मेरी अपनी मनःस्थिति ठीक नहीं थी। आज की सुबह बहुत उदास थी। मेरे भीतर एक थकान और असहजता थी जो मुझसे कुछ और ही लिखवा रही थी। मैंने अपना सुबह का सारा लिखा मिटाया और काम बंद करके एक और कॉफ़ी ऑर्डर की। फिर इच्छा हुई कि किसी म्यूज़ियम में कोई अच्छी कला के सामने कुछ वक़्त गुज़ारा जाए, शायद यह उदासी थोड़ी कम हो।

ठीक ग्यारह बजे मैं म्यूज़ियम ऑफ़ मॉडर्न आर्ट के सामने खड़ा था। म्यूज़ियम उसी वक़्त खुला था और मैं उस म्यूज़ियम में अकेला था। वह दो हिस्सों में बँटा हुआ था। पहला हिस्सा Geneva और स्विट्ज़रलैंड के नए आर्ट और आर्टिस्टों के नाम था और दूसरे हिस्से में आइलैंड के आर्टिस्ट Hreinn Fridfinnsson की प्रदर्शनी लगी थी। मैं पहले स्विस् आर्टिस्टों वाली इमारत में गया जहाँ चार मंज़िल की इमारत में हर फ़्लोर पर अलग-अलग कलाकारों का काम था। मॉडर्न आर्ट मुझे बहुत ज़्यादा समझ नहीं आता है। कई बार वह बहुत loud होता है, तो कई बार बहुत एब्सर्ड... मैं हर जगह इस आर्ट को समझने की कोशिश में रहता हूँ। मुझे एक अच्छे संबंध की ज़रूरत है, इस आर्ट फ़ॉर्म से जो अभी मेरे भीतर बहुत कम मात्रा में है। गए वक़्त में कुछ आर्टिस्टों का काम मुझे बेहद पसंद आया था, पर अभी तक मैं उनके काम को आगे फ़ॉलो नहीं कर पाया था। हर माले पर आर्टिस्टों का काम बहुत रोचक था, पर मुझसे बात करता हुआ आर्टिस्ट अभी तक नहीं दिखा था। सारा कुछ एक स्ट्रक्चर में था। कुछ बहुत बोल्ड, कुछ मुझे असहज करता हुआ। अंत में चौथे माले तक आते-आते मैं थक गया। सीढ़ी चढ़ने में मेरे पैरों में दर्द भी हो रहा था। जब मैं चौथे माले से वापिस नीचे की तरफ़ जाने लगा तो एक महिला ने मुझे रोका, उनके हाथों में कॉफ़ी थी, जिसकी इस वक़्त मुझे बहुत ज़रूरत थी।

“कैसा लगा आपको?” उन्होंने पूछा।

“मैं अभी भी इस आर्ट फ़ॉर्म को समझने की कोशिश कर रहा हूँ। मुझे लगता है इन कामों की तारीफ़ करने में मुझे अभी वक़्त लगेगा?”

“आप कहाँ से हैं?”

मैंने बताया कि मैं भारत से हूँ। उन्होंने कुछ नाम बताए जिनका काम यहाँ दिखाया जा रहा है। फिर वह कहने लगीं कि रुकिए मैं आपको समझाती हूँ। उन्होंने फिर बहुत देर तक मुझे समझाया कि कौन-सा आर्ट कहाँ से है और बहुत सारे नाम जो मैं ठीक से फ़ॉलो

नहीं कर पा रहा था। और वह जो भी बता रही थीं, वह हर फ़्लोर के पहले लिखा था जो मैं पढ़ता हुआ अंदर घुसा था। मैं हर चीज़ में हाँ-हाँ कहता जा रहा था। अचानक वह एक टीचर की तरह मुझे कहने लगीं कि आप हाँ-हाँ तो ऐसे कर रहे हैं, मानो आपको सब पता है... Don't be like an Indian. ये सुनते ही मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने मुस्कुराते हुए शांत शब्दों में कहा, "नहीं... मुझे नहीं पता... पर मुझे स्कूल छोड़े बहुत वक़्त हुआ है तो अब टीचर के सामने कैसे बिहेव करें उसकी आदत छूट चुकी है।" पता नहीं कि मेरी अँग्रेज़ी का उन्होंने क्या मतलब निकाला, वह फिर मुझे बाक़ी सारे आर्टिस्ट के बारे में समझाने लगीं। मैं थक गया था। आज के दिन एक अजीब उदासी भी मैं महसूस कर रहा था। मुझे इस वक़्त कॉफ़ी चाहिए थी, बहुत भूख लगी हुई थी और ऊपर से इन महिला का लेक्चर वह भी ख़राब अँग्रेज़ी में बंद नहीं हो रहा था। कई बार ऐसी स्थितियों में मैं खुद को छोड़ देता हूँ। मैं एकदम शांत स्वभाव से सुनने लगा। मैं हाँ-ना कुछ भी नहीं कह रहा था, और न ही उन्हें रोकने की कोशिश कर रहा था। अंत में शायद वह थक गई। जब वह रुकीं तो मैंने उन्हें धन्यवाद कहा लेक्चर के लिए और वहाँ से चल दिया।

अभी भी भीतर एक भँवर थी जो नीचे की तरफ़ खींच रही थी। मैं हर कुछ क़दम पर थोड़ी देर रुक जा रहा था। उस म्यूज़ियम के ग्राउंड फ़्लोर पर आकर इच्छा तो हुई कि चला जाऊँ, पर मैं मन से कुछ अच्छा देखना चाहता था। सो मैं दूसरी एक्ज़िबिशन में चला गया।

मैं Hreinn Fridfinnsson को क़तई नहीं जानता था तो नीचे एक किताब में पहले इनके बारे में पढ़ा। आईलैंड में जन्मे Hreinn, The Poet Amongst Artists कहलाते हैं। इनकी एक्ज़िबिशन के तीन फ़्लोर थे। पहले फ़्लोर पर प्रवेश करते ही कुछ तस्वीरों ने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया। एक अजीब-सी स्थिरता, सहज और सामान्य-सी तस्वीरें, पर आकर्षक। इनकी फ़ोटोग्राफी और इनके काम में इनके बचपन के अनुभवों की गहरी छाप है। किसान परिवार में जन्मे Hreinn वेस्ट आइसलैंड के ऐतिहासिक Dalir शहर में पैदा हुए थे, जहाँ कुछ भी ख़ास घट नहीं रहा होता था। इनके पूरे काम में एक काव्य है और बहुत कोमलता है, उसका एक उदाहरण : मेरी निगाह कोने में रखे एक जूते पर गई। बाएँ पैर का जूता दीवार के पास रखा है और उसी दीवार पर जूते के पास एक आईना लगा है जिसमें आपको जूते का प्रतिबिंब कुछ ऐसे दिखता है कि आपको लगता है कि दाहिने पैर का जूता वहीं तो है, पर वह बाएँ पैर के जूते का प्रतिबिंब है। इसके कितने सारे मतलब हम निकाल सकते हैं। इतनी सामान्य-सी रोज़मर्रा की चीज़ों को एक आर्ट के रूप में प्रस्तुत करना और उसके अलग-अलग मायने भी निकाल लेना बिना कुछ ज़्यादा किए एक बहुत ही जटिल काम है, जो बहुत आसान नज़र आता है। मैं कई तस्वीरों के सामने बहुत देर खड़ा रहा। उसके बारे में पढ़ने पर भी बहुत आनंद था, क्योंकि काव्य का एक धागा हर जगह मौजूद था। उनका काम देखते हुए लगा कि एक बहुत दर्द भरा लोकगीत चल रहा है, पूरे वक़्त।

बाहर आया तो वह महिला नीचे मिलीं। उन्होंने मुझे फिर अपने पास बुलाया। मैंने जाते ही उनसे ढेर सारी हिंदी में बात की कि Hreinn कितने कमाल हैं। मुझे बहुत मज़ा आया वग़ैरह-वग़ैरह। वह मुझे घूरती रहीं और मैंने उन्हें अलविदा कहा। Geneva की

सड़कों पर चलते हुए भी Hreinn का दर्द भरा लोकगीत मेरे भीतर चल रहा था। मुझे एक सुंदर-सा टी-हाउस दिखा। मैंने खाने को कुछ ऑर्डर किया और अपनी कहानी पर वापिस आया। उस टी-हाउस में बिताए तीन घंटे मुझे अपनी लिखाई के सबसे सुंदर तीन घंटे लगे। टी-हाउस में बहुत भीड़ थी। चारों तरफ़ लोग अलग-अलग भाषाओं में अपने लंच पर बातचीत कर रहे थे। मैं उन सबके बीच में बैठा हिंदी कहानी लिख रहा था। मैं बहुत खुश था। बार-बार मन में उस आईलैंडियन आर्टिस्ट को धन्यवाद देता रहा जिसने मेरी उदासी को एक अच्छे काम की परत से भीतर दफ़्न कर दिया था। कहानी खत्म होने ही वाली थी कि मैं कहानी के खत्म होने के ठीक पहले उठ गया। अंत के पहले मुझे बहुत मज़ा आता है। मैं इस मज़े को इतनी जल्दी लिखकर खत्म नहीं कर देना चाहता था। मुझे पता था कि अभी कुछ और बचा हुआ है। मैं वहाँ से उठा और थोड़ा लँगड़ाते हुए फिर भी हल्की उछाल के साथ पुराने शहर Geneva की तरफ़ चलने लगा।

मैंने Basel की ट्रेन टिकट अगले दिन के लिए बुक की और जंग-हे को मैसेज किया कि मैं कल दोपहर तक Basel पहुँच जाऊँगा। उनका मैसेज आया कि मैं तुम्हें स्टेशन पर लेने आऊँगी। मैं मना करना चाह रहा था, पर इतने दिनों की यात्रा में मैं हमेशा अकेले ही कहीं पहुँचकर गूगल मैप के सहारे चला था। कोई लेने आ रहा है, इस मिल रहे स्नेह को मैं ठुकराना नहीं चाह रहा था। कल जंग-हे से मिलूँगा इस बात को लेकर मेरे भीतर बहुत उत्साह था। कितनी सुंदर दोस्ती थी हमारी! अब वह कैसी होंगी? क्या करती होंगी वह? उनका घर कैसा होगा? इसे देखना कितना सुंदर अनुभव होगा... मैं सोचता रहा।

शाम तक पुराने शहर में चलते हुए मैं अंत में वापिस उस कैफ़े में आया जहाँ कल बैठा था। कुछ देर कहानी के पुराने हिस्सों पर काम किया और जैसे ही कहानी का अंत लिखने बैठा कि लैपटॉप की बैटरी जाती रही। पहले मैं अंत से खेल रहा था, अब अंत मुझसे। शाम को एक लंबी वॉक के बाद सोचा आज के दिन का अंत Geneva लेक के किनारे बियर पीकर करते हैं। लेक के किनारे मैं देर तक कहानी के अंत की संभावनाओं के बारे में सोचता रहा। कितने तरीक़े से एक कहानी का अंत हो सकता है। कई बार इच्छा होती है कि सारे संभावित अंत को लिख दूँ, फिर लगता है कि एक समय आकर काल्पनिक कहानी भी जीवन के कितने करीब आ जाती है और आपको चुनना ही पड़ता है। हम सारा कुछ कहीं भी नहीं पा सकते हैं। अपनी लिखी कहानियों में भी नहीं। कितनी संभावनाएँ अभी बची हैं कहानी में। अभी कहानी खत्म नहीं हुई है।

रात डिनर करना भूल गया था तो सुबह उठते ही भूख लगने लगी पर देखा पूरा कमरा बिखरा हुआ है और मेरे पास सिर्फ़ एक घंटा है—स्टेशन तक पहुँचने को। जंग-हे से मिलने की उत्सुकता भी भीतर कुलबुला रही थी। सारा कुछ पैक करके जब मैंने हॉस्टल छोड़ा तो मेरे पास सिर्फ़ पंद्रह मिनट थे स्टेशन तक पहुँचने के लिए। ट्रेन खुलने के पाँच मिनट पहले मैं स्टेशन पर पहुँचा और वहाँ दिन की पहली कॉफ़ी ली। ट्रेन Geneva से पहले Bern की थी फिर वहाँ से मुझे ट्रेन बदलकर Bern से Basel जाना था। बाहर बारिश हो रही थी। मौसम एकदम बदल गया था। मैंने बैग से लैपटॉप निकालने ही वाला था कि निर्मल वर्मा की किताब 'पिछली गर्मियों में' पर निगाह पड़ी। मैं यह प्रलोभन छोड़

न सका। इन लंबी ट्रेन यात्राओं में जब हल्की ठंड हो और बाहर बारिश हो रही हो, आप निर्मल वर्मा को अलग नहीं कर सकते। मैंने यह किताब जाने कितनी बार पढ़ी होगी! हर बार लगता है कि पहली बार-सा नशा लिए हुए है। मैंने सीधे उनके संस्मरण निकाले जब वह प्राग वापिस गए थे। कल की जो उदासी कहीं नीचे दफ़न हुई पड़ी थी, उसने ट्रेन के इस खाली डब्बे में वापिस धर दबोचा। कुछ गहरी साँसें लेकर मैं बाहर के स्याह आकाश को देखता और कभी प्राग की ठंडी गलियों और पबों में निर्मल के साथ बैठा होता। किस तरह की सरलता से अपने साथ खींच लेता है उनका हर शब्द! कितना धैर्य है! कितनी ठहरी हुई प्रतीक्षा है हर घटना में! उनके लिखे के साथ सफ़र और भी सुंदर लग रहा था। Bern में मैंने ट्रेन बदली और अब Basel, जहाँ मेरी प्रतीक्षा जंग-हे कर रही होगी। मैंने एक दो बार कोशिश की कि लैपटॉप खोल लिया जाए पर निर्मल को इस वक़्त छोड़ना मुश्किल था। मैंने लिखना आज के लिए स्थगित रखा। ट्रेन का वेटर बीच पढ़ने में आया और मेरी कॉफ़ी का ऑर्डर ले गया। मुझे लगा इस वक़्त शायद कुछ और माँग लिया होता तो वह भी मिल जाता। अभी पढ़े में निर्मल जिस महिला से मिलने जाते हैं, वह उनके लिए कॉफ़ी लेकर आती है। ठीक उसे पढ़ते वक़्त मैंने एक आह भरी थी कि काश इस वक़्त एक कॉफ़ी मिल जाए तो... और कॉफ़ी सामने आ गई।

जंग-हे फ़ोन पर व्यस्त थीं। मैं बहुत देर उसके पीछे खड़ा रहा। आठ सालों के बाद भी मैं उनको दूर से पहचान सकता था। छोटा-सा क़द, गठीली काठी और हँसता हुआ जवान चेहरा। उनके बाल माथे के ऊपर सफ़ेद हो चले थे जो बहुत अच्छे लग रहे थे। उनकी उम्र इस वक़्त लगभग चौवन-पचपन के करीब होगी। फ़ोन पर बात करते-करते उनकी नज़र मुझ पर पड़ी और एक ज़ोर के ठहाके साथ वह हँस दीं, मानो उन्हें विश्वास नहीं हो रहा हो कि ये भारतीय लेखक सच में उनके Basel में आ टपका है। हम कसकर गले लगे और दोनों ने एक-दूसरे को देखने की खुशी जताई। एक अकेले रहने वाला आदमी जब दूसरे अकेले रहने वाले से मिलता है तो आप अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते कि किस क्रिस्म का याराना होता है वह। हम करीब पंद्रह-बीस मिनट पैदल चलकर उनके घर पहुँचे। Basel जितना मैंने सोचा था उससे कहीं ज़्यादा ख़ूबसूरत निकला। इस वक़्त यहाँ साल का सबसे बड़ा आर्ट फ़ेयर चल रहा था सो पूरे विश्व से बहुत सारे आर्टिस्ट यहाँ आए हुए थे। जंग-हे ने कहा कि तुम्हारे पास टाइम कम है, मैंने आज शाम की एक कन्सर्ट की टिकट ले रखी है। तुम्हें उसमें मेरे साथ चलना है और शाम को Bulgarian आर्टिस्ट जर्मनी में मिल रहे हैं, हमें वहाँ भी जाना है, तुम्हें मज़ा आएगा। मैंने तुरंत 'हाँ' कहा फिर पूछा कि कन्सर्ट ख़त्म कर हम जर्मनी कैसे जा सकते हैं? जंग-हे को समझ आया और उन्होंने कहा कि तुम्हें मज़ा आएगा। एक बस है जो यहाँ से हमें बारह मिनट में जर्मनी में उनके घर पर छोड़ देगी। जंग-हे देर तक मेरा चेहरा देखती रहीं। मैं अपने चेहरे पर आए बच्चे से अचरज को छुपा नहीं पाया।

जंग-हे खुद एक कंपोज़र हैं। कुछ ही महीनों पहले उनके शोज़ Basel में हो चुके हैं।

मैंने अपना सारा लिखा और अपने घूमने के चले आ रहे बँधे-बँधाए तरीकों को त्यागा और जंग-हे के पीछे, उनके Basel में प्रवेश कर गया।

हम पहले कन्सर्ट गए जो कि एक चर्च में था। जंग-हे ने कहा कि ये Georg Muffat (1653-1704) की कंपोज़ीशंस हैं, जो एकदम क्लासिकल कन्सर्ट है, जिसे वह कोर्ट में पेश किया करते थे। इसलिए इसे चर्च में सुनना ज़रूरी है। हम बारिश से बचते हुए वहाँ पहुँचे। दिमाग़ में मैं अभी भी आधा प्राग़ में निर्मल के साथ था। Basel की भीगी हुई गलियों में चढ़ते-उतरते अचानक मुझे लगा कि जंग-हे कितनी ज़्यादा निर्मल वर्मा जैसी दिखती हैं! मुझे इस बात पर बहुत तेज़ हँसी आ गई। उन्होंने पूछा क्यों हँस रहे हो? मैंने कहा कि मुझे आपका यह शहर बहुत पसंद है, इसे हँसी से व्यक्त कर रहा हूँ। हम चर्च पहुँचे तो उन्हें लगभग सभी आर्टिस्ट जानते थे। हम सरकते हुए आगे वाली सीट पर बैठे। वह मुझे हर बार छोटी-छोटी बारीकियाँ समझाती रहीं। Georg Muffat, Antonio Bertali (1605-69) और Giovanni Antonio Rigatti (1615-49) की कंपोज़ीशंस हम सुनने जा रहे थे। ज्यों ही कन्सर्ट शुरू हुआ, मैं उनकी एकाग्रता से कुछ दूर हट गया। इस तरह के संगीत की मेरी समझ न के बराबर है। मैं नहीं चाहता था कि मेरी नासमझी की झलक उनकी एकाग्रता भंग करे। उस कन्सर्ट की पूरी व्यवस्था इतनी ज़्यादा थिएट्रिकल थी कि मैं उस संगीत का हिस्सा हो गया थोड़ी देर में। पूरा हॉल खचाखच भरा था। जैसे ही पहला अंश खत्म हुआ, मेरे भारतीय दिमाग़ ने तुरंत ताली बजानी चाही पर कोई भी हिला तक नहीं। जंग-हे ने पूछा तुम बोर हो रहे हो तो बता देना? उन्होंने मेरी नासमझी दूर से भी सूँघ ली थी। मैंने कहा मुझे बहुत आनंद आ रहा है। करीब एक घंटे के कन्सर्ट में मैं क़तई बोर नहीं हुआ। मेरे लिए सारा कुछ बहुत नाटकीय ज़रूर था, पर बोरिंग क़तई नहीं। यह बात बार-बार असर कर रही थी कि यही संगीत था जो 1650 के आस-पास कहीं किसी बड़े कोर्ट के सामने लगभग ऐसा-का-ऐसा प्रस्तुत किया गया होगा। यही वाइब्रेशंस उस वक़्त भी लोगों ने ऐसी-की-ऐसी सुनी होंगी। और आज 2019 में आप उसी संगीत को सुन रहे हैं। जंग-हे ने मेरी तरफ़ देखा और थोड़ी खुश हुई कि मुझे आनंद आ रहा है। आखिर में लोगों ने बहुत देर तक तालियाँ बजाई और पूरे कलाकारों को तीन बार स्टेज पर वापिस आना पड़ा। ये प्रथा सारे यूरोप के थिएटर में भी है। लोग ताली बजाते रहते हैं, जब तक कि आप तीन बार वापिस आ-आकर उन्हें धन्यवाद न करें।

जब मैं और जंग-हे बस का इंतज़ार कर रहे थे तो मैंने कहा, “संगीत और नाटकों में यह बड़ा अंतर है। हम शेक्सपियर देखते हुए यह नहीं कह सकते कि उस वक़्त भी शेक्सपियर ऐसा-का-ऐसा ही होता होगा। अभिनेता और निर्देशक उसे अपने हिसाब से बदलते रहते हैं, जबकि संगीत में हम बिल्कुल वैसा-का-वैसा ही अनुभव कर सकते हैं, जैसा उस वक़्त वह संगीत बजा होगा।”

“नहीं ऐसा नहीं है, हर आदमी जो बजाता है, उससे संगीत अलग हो जाता है। वही कन्सर्ट अगर तुम किसी दूसरे ग्रुप का सुनोगे तो लगेगा कि वह एकदम अलग है। पर शायद तुम्हें वह अंतर अभी पता न चले।”

मैं समझ गया कि वह क्या कहना चाहती हैं। मैंने उनकी बात से बिल्कुल सहमत था। तभी बस आई और हम जर्मनी की ओर बढ़ गए। और सच में दस मिनट में एक नाका जैसा आया, जहाँ पर कोई भी नहीं था और उन्होंने कहा कि हम जर्मनी में आ चुके हैं। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने कहा कि यहाँ से दस मिनट की दूरी पर एक ब्रिज है, जिससे चलकर तुम जर्मनी से फ्रांस जा सकते हो। Basel बॉर्डर है।

हम पहाड़ों पर बनी एक कॉलोनी में गए। बहुत ऊपर सीढ़ियाँ चढ़कर एक खूबसूरत बंगला आया जिसके बाहर बहुत-सी कारें खड़ी थीं। भीतर जाते ही सबने जंग-हे को गले से लगा लिया। सभी बहुत देर से पार्टी कर रहे थे। Bulgarian Artist और जंग-हे की अच्छी दोस्त Albena Mihaylova का आज साठवाँ जन्मदिन था। सारे लोग बहुत उत्साह में थे। Bulgarian बहुत जिंदादिल क्रिस्म के लोग होते हैं। जंग-हे ने सबसे परिचय कराया। पेंटर्स, म्यूज़ीशियन, आर्टिस्ट पूरा घर इन्हीं लोगों से भरा पड़ा था। कुछ देर में जब परिचय की औपचारिकता खत्म हुई तो हम सारे लोग आपस में ऐसे घुल-मिल गए मानो मैं भी उन्हीं आर्टिस्टों में से एक हूँ। कुछ देर बाद मैं अपने देश की बात कर करके ऊब गया, क्योंकि उनके सवाल सारे बहुत ही बेसिक थे। मैं हर बार उनकी कला पर बात छेड़ देता, वाइन के असर के कारण वे मेरे बहकावे में आ भी जाते। फिर Bulgarian डिनर लगा और उसके बाद उनका कुछ ट्रेडिशनल स्वीट। वापिस आते वक़्त मैंने जंग-हे को आज की शाम के लिए धन्यवाद कहा। जंग-हे ने चिंता जताई कि तुम बिल्कुल अपना काम नहीं कर पाए? मैंने कहा कि वह इन सारे अनुभवों से ज़्यादा महत्वपूर्ण नहीं है।

बारिश थोड़ी कम हो गई थी। जंग-हे की एक दोस्त ने हमें जर्मनी से Basel के बॉर्डर तक छोड़ा। जंग-हे ने कहा कि चलो वॉक करते हैं। पानी में सनी सड़कें, हल्की झुरझुरी वाली ठंड और बीच-बीच में आती फूलों की खुशबू... जंग-हे ने कहा, "तुम्हें लगता है मैं इन सबका हिस्सा हूँ?" मैं बात को बिल्कुल नहीं समझा। मैंने कहा, "किन सबका?"

"इन सारे स्विस लोगों का, इस शहर का?"

"मैंने आपको कोरिया में देखा है और यहाँ देखा है, आप दोनों ही जगह बहुत सहज हैं। पर ये विचार आपको अचानक कैसे आया?"

"मैंने कुछ महीने पहले स्विस पासपोर्ट के लिए आवेदन दिया है। अब तीस सालों से रह रही हूँ। स्थायी नागरिक हूँ यहाँ की तो पासपोर्ट मिल ही जाएगा, पर मुझे अपना कोरियन पासपोर्ट छोड़ना पड़ेगा और मुझे इस डर के सपने आते हैं कि मेरा कोरियन पासपोर्ट कहीं गिर गया है।"

वह मुझसे बात करते-करते कब खुद से बात करने लगीं, उन्हें शायद इस बात का पता नहीं चला होगा। पर मुझे नहीं लगता कि उन्हें मुझसे जवाब की कोई उम्मीद भी है। कुछ देर की चुप्पी के बाद उन्होंने वहीं से बात शुरू की जहाँ छोड़ी थी।

"जबसे पासपोर्ट का आवेदन दिया है, तबसे कोरियन लोगों से दोस्ती करने की कोशिश करती हूँ। उनके साथ उठना-बैठना चाहती हूँ। इतने सालों में मैंने यह कभी नहीं

किया था। पर अब लगता है कि ज़रूरी है कि आपके कुछ दोस्त आपके देश से हों यहाँ, पर इस उम्र में आकर नए दोस्त बनाना कितना कठिन है, और खासकर कोरियन!" वह बच्चों-सी हँसने लगी। मैंने उनसे कहा कि जब मैं आपसे कोरिया में मिला था तब आप इतनी ज़्यादा खुश नहीं थीं। आप अभी बहुत अच्छी स्पेस में हैं।

"तुम्हें पता है क्यों? क्योंकि मैं आजकल एक चर्च में हर हफ़्ते जाकर ऑर्गन बजाती हूँ और उसका मुझे अच्छा-खासा पैसा मिलता है। सोचो एक कोरियन औरत चर्च में जाकर उनका ऑर्गन बजा रही है और चर्च से पैसा कमा रही है।" वह इस बात पर बहुत ज़ोर से हँसने लगी।

"तो आप आज तक ग़लत भगवान के सामने माथा टेक रही थीं। असली पैसों वाला भगवान तो चर्च में था।" मैंने कहा और वह और ज़ोरों से हँसने लगी।

यूँ बिल्कुल भी नहीं लगता कि हम आठ सालों बाद मिले हैं। कितना कुछ गुज़र गया है इस बीच मैंने सोचा, मैं कितना बदल गया हूँ, जंग-हे कितनी अलग हो गई हैं! पर उस एक महीने की हमारी दोस्ती की आँच अभी भी वैसी-की-वैसी है। जब हम घर वापिस आए तो उन्होंने कहा कि मैं भारतीय चाय पीना चाहती हूँ। हमने चाय पी और थोड़ी ब्रेड गर्म करके खाई। मैंने उनसे कहा कि मैं परसों Strasbourg जाऊँगा। इच्छा तो है कि मैं यहाँ आपके साथ कुछ और दिन रहूँ, पर बहुत काम करना है मुझे मुंबई जाने से पहले। उन्होंने अपनी चाय पर बने हुए कहा कि ठीक है तुम्हें जो सही लगे। तुम यहाँ मुझसे मिलने आए, यह मुझे बहुत अच्छा लगा। तभी मुझे याद आया कि मैं उनके लिए अपनी किताब लाया हूँ। मैंने उन्हें 'प्रेम कबूतर' का अँग्रेज़ी अनुवाद दिया तो वह बहुत खुश हो गई। उन्होंने मेरे सामने ही भूमिका पढ़ डाली और उन्हें बहुत पसंद आई। मैंने तब तक Strasbourg में अपना Air bnb बुक किया और Basel से Strasbourg की ट्रेन। जब उन्हें बताया कि बुकिंग हो चुकी है तो उन्होंने धीरे से कहा कि अरे हो गया?

इन यात्राओं में इतनी आदत पड़ गई है आधी चीज़ें छोड़कर चले जाने की कि मुझे अब बहुत ज़्यादा तकलीफ़ नहीं होती है। पर मैं उनके संसार में अचानक चला आया था और आते ही चले जाने के अपने प्लान को इस तरह कहना मुझे कुछ ग़लत लगा। मैंने बात बदली, पर देर हो चुकी थी। जंग-हे कुछ शांत थीं। जैसा कि मैं हमेशा करता हूँ। मैं हमेशा अपना पल्ला झाड़कर वहाँ से चल देता हूँ। मैंने उन्हें गुडनाइट कहा और अपने कमरे में चला गया।

कुछ देर में वह दरवाज़े पर आई और उन्होंने कहा, "मैंने उसे बताया कि तुम यहाँ मेरे घर रहने आ रहे हो। क्या तुम कल उससे बात करोगे?"

"नहीं... मुझे नहीं लगता कि यह ठीक होगा।"

"अच्छा... ठीक है... गुडनाइट!"

मुझे लगा था कि उसकी और जंग-हे की दोस्ती बहुत अच्छी थी कोरिया में। मुझे जंग-हे को शुरू में ही कह देना चाहिए थी कि उसे कुछ न बताएँ। ये सारी आठ साल पुरानी बातें हैं जिन्हें इस तरह खोलना, वह भी जब मैं महज़ एक दिन के लिए आया हूँ, ठीक नहीं है। बहुत देर मैं उसके बारे में सोचता रहा। कैसी होगी वह? क्या उसने अपना दूसरा

उपन्यास खत्म किया होगा? आजकल क्या लिख रही होगी? क्या वह अभी भी पेड़ों से बात करती होगी?

सुबह-सुबह Schubert सुनते हुए मेरी आँख खुली। कुछ देर समझ नहीं आया मुझे कि मैं कहाँ हूँ? किस शहर में हूँ? ये किसका बिस्तर है? खिड़की से बाहर देखा तो बारिश हो रही थी। ट्राम के गुज़रने की आवाज़ से सारी रियलिटी एक झटके में धड़धड़ाती हुई सामने आ गई। मैंने वक्रत देखा तो आठ बज रहा था। मैं अपने बिस्तर पर चित्त पड़ा रहा। पूरा शरीर अजीब-से पराएपन में सना हुआ था। यात्रा के कुछ ही दिन बचे हैं, जाने कितने कमरे, बिस्तर, बाथरूम, किचेन बदले हैं... मैंने इन बीते दिनों में। खिड़की से बाहर जब देखो, तब एक अलग शहर दिखा है। ऐसी यात्राओं की कल्पना तो मैंने बहुत की थी, पर जब यह सारा कुछ घट रहा होता है, तब उसे लगातार बटोरने का काम थका देता है। कुछ वक्रत बाद अपना ही जिया हुआ अलग करना मुश्किल हो जाता है कि ये अनुभव किस कमरे का था और किस खिड़की पर खड़े रहकर बाहर क्या दिख रहा था? इन सारी जगहों में क्या मैं नम था? क्या मैंने सच में सारे शहरों को जिया है? या बस गुज़र गया हूँ बिना छुए सभी में से? मैंने रज़ाई से अपना चेहरा ढक लिया और वापिस उस अवस्था में जाने की हारी हुई कोशिश करने लगा जहाँ गहरा अँधेरा था। जब बिस्तर छोड़ना पड़ा तो ज़िम्मेदार Schubert को ठहराकर सीधा किचेन में कॉफ़ी की आती खुशबू की तरफ़ चल दिया।

सुबह मैंने जंग-हे को अदरक वाली चाय दी जो उतनी अच्छी नहीं बनी थी। उन्होंने औपचारिकता में तारीफ़ की। अंत में हम दोनों ही आधी चाय छोड़कर अपनी-अपनी कॉफ़ियों पर आ गए थे। मुझे डर था कि कहीं वह उसकी बात न निकाल लें फिर से, सो मैंने कहा कि मैं Basel देखना चाहता हूँ। वह कहने लगीं कि बारिश बहुत है, तुम इस बारिश में कुछ नहीं देख पाओगे। मैं उनके मना करने पर भी चला गया। मैं जानता था कि हम दोनों के बीच अभी बहुत कुछ है, जिस पर हमें बात करनी है, पर मैं कल चला जाऊँगा और मैं उन संबंधों के बारे में बात नहीं करना चाहता था जिन्हें आठ साल पहले मैं दफ़्न कर चुका हूँ।

Basel की गीली सड़कों पर बारिश की फुहार में चलना इतना बुरा भी नहीं था। मैंने Basel को जंग-हे के द्वारा जाना था। अभी Basel में चलते हुए मैं बुरी तरह भटका हुआ और अकेला महसूस कर रहा था। सोचा वापिस जंग-हे के पास जाता हूँ, पर वापसी हमेशा अजीब होती है, चाहे वह बड़ी हो या छोटी। मैं चलता रहा और अंत में कुछ म्यूज़ियम और एक चर्च को देखने के बाद एक कैफ़े में ठिकाना पाया। जंग-हे का लंच के लिए मैसेज आया। मैंने टाइप किया कि लंच मेरी तरफ़ से है और चलो Basel की सबसे फ़ेमस जगह चलकर लंच करते हैं। जंग-हे ने मुस्कुराता हुआ चेहरा भेजा और बोला एक बजे मिलते हैं।

Basel में इस वक्रत हफ़्ते भर के सालाना आर्ट फ़ेयर का माहौल है। यूँ इस शहर में बारिश के वक्रत आपको बहुत ही कम लोग बाहर दिखेंगे। पर इस वक्रत हर जगह, हर कैफ़े, हर सड़क पर आपको, अलग-अलग देश से आए आर्टिस्ट अपने काम के उत्साह में नज़र आएँगे। बारिश हल्की कम हुई थी, पर ठंड माहौल में थी। मैं अपनी कॉफ़ी के साथ

था और कहानी के भीतर कहीं गुम हो चुका था। बहुत से हिस्सों में कहानी अपनी जो बातें कह रही थी, उसे पढ़ने में उत्साह था, पर इस वक़्त लिखने का मन नहीं था। मैंने पाया है कि बतौर लेखक हर छोटी चीज़ भी इस तरह असर कर रही होती है कि आपका लिखने के सुर का जो 'स...' है, वह तुरंत भटक जाता है। मैं सुबह जंग-हे को जिस तरह छोड़कर चला आया, और आठ साल पहले जिस तरह उसे छोड़ा था जिसकी बात जंग-हे कर रही थीं... उसने मेरे 'स...' को पूरी तरह भटका दिया था। मैंने जंग-हे को मैसेज किया कि अगर वह थोड़ा पहले आ जाएँ तो हम लंच के पहले एक कॉफ़ी पर मिल सकते हैं। जंग-हे का तुरंत जवाब आया कि मैं आती हूँ।

मुझे नहीं लगा था कि वह इतनी जल्दी आ जाएँगी। उन्होंने आते ही कहा, "मुझे लगा था कि तुम भटक जाओगे।" मैंने उनसे कहा, "आप एकदम सही सोच रही थीं। मैं भटक गया था।" वह सीधा मुझे आर्ट Basel के कुछ महत्वपूर्ण अड्डों पर ले गई। कुछ बहुत ही खूबसूरत इंस्टॉलेशन आर्ट देखा। एक चर्च में बच्चे की-सी उत्सुकता में उन्होंने बताया कि कैसे अगर मैं यहाँ फुसफुसाती हूँ तो तुम उसे उस तरफ़ साफ़ सुन सकते हो। हम देर तक एक-दूसरे के लिए कुछ-कुछ फुसफुसाते रहे। फिर उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा कि भूख लगी है चलें... और मैंने कहा, "मैं मर रहा हूँ भूख से, अभी चलो।" हम एक बड़े ही खूबसूरत रेस्त्राँ में गए। उन्होंने कहा कि यहाँ वह ऑर्डर करो जो आज की उनकी स्पेशल डिश है। हम दोनों को बहुत भूख लगी थी। हम खाने पर टूट पड़े।

Barbara Peyer, जंग-हे की बहुत अच्छी दोस्त हैं जिनका अपना स्टूडियो, Basel के बहुत पुराने घरों में से एक है। जब मैं कभी थोड़ी बहुत पेंटिंग किया करता था तो हमेशा से जिस तरह के स्टूडियो के सपने मुझे आते थे, आज समझा कि मैं उस तरह के सपने में ही खड़ा था। बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ, बाहर एक छोटी नदी गुज़र रही थी जिसकी आवाज़ अंदर तक आती थी। खिड़कियों से पुराना गिरजा और Basel की छोटी गलियाँ दिख रही थीं और चारों तरफ़ की हरियाली। मिट्टी और लकड़ी के बने ये हज़ारों साल पुराने घर में एक अजीब-सी सादगी थी। मैंने Barbara से पूछा कि वह इस वक़्त किस तरीक़े का काम कर रही हैं? उन्होंने बताया कि वह बहुत सारे अलग-अलग तरह के कामों के बीच हमेशा रहती हैं, सिर्फ़ एक पेंटिंग की ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी हो जाती है, सो वह कई अलग तरह की पेंटिंग्स पर एक साथ काम कर रही होती हैं जिससे एक तरीक़े का खेल जैसा बना रहता है। पूरा घर रंगों और कैनवासों से भरा पड़ा था। मैंने उनसे कहा कि अगर मैं Basel में रह रहा होता तो आपसे कहता कि मुझे एक कोना दे दो... मैं यहाँ आकर चुपचाप अपना लेखन करता रहूँगा।

Basel की लगभग सभी सरकारी इमारतें इस वक़्त आर्ट के लिए दे दी गई थीं। यूँ जिन बिल्डिंगों में आम आदमी घुस भी नहीं सकता, वहाँ इंस्टॉलेशन आर्ट लगा हुआ था और कोई भी वहाँ जा सकता था। ये Basel स्टेट का एक तरीक़ा भी है कि लोगों और उनकी पब्लिक प्रॉपर्टी के बीच एक संवाद-सा क़ायम हो, जो बहुत ही कमाल है। देखने को बहुत कुछ था और जंग-हे थोड़ी-सी स्ट्रेस में थी कि कहीं कोई चीज़ चूक न जाएँ। मैंने उनसे कहा कि देखिए आप मेरे लिए Basel हैं और मैं जितना इस शहर के साथ वक़्त

गुज़ारना चाहता हूँ, उतना ही आपके साथ भी... तो चलिए पहले कहीं कॉफ़ी पीते हैं और फिर धीरे-धीरे सब देख लेंगे। कॉफ़ी के पहले हम चर्च में गए जहाँ नीचे की तरफ़, एकदम चर्च के तहखाने में कहीं बहुत ही सुंदर Basel शहर के इतिहास के ऊपर एक फ़िल्म थी जो एकदम निराली थी। बहुत सारे प्रोजेक्टरों की मदद से सारी खंडहर जैसी दीवारों पर शैडोज़, फ़िल्म, Sound और Atmosphere का प्रयोग करके इतनी खूबसूरती से इतिहास समझाया जा रहा था कि मैं मंत्रमुग्ध हो गया। इतना साफ़ काम और इतनी खूबसूरती से मैंने पहले कहीं भी नहीं देखा था। हम कॉफ़ी भूल चुके थे और अचानक और आर्ट देखने के पीछे भागने लगे। जंग-हे ने कहा कि चलो Kunst Museum चलते हैं, अगर तुम्हें William Kentridge का काम पसंद आया तो तुम्हारे लिए शाम को एक गिफ़्ट है। हम म्यूज़ियम में गए। एक तरह से William Kentridge (A Poem That Is Not Our Own) का रेट्रो चल रहा था। मैंने उनके कुछ काम पहले देखे थे जो मुझे बेहद प्रायोगिक और महत्वपूर्ण लगे थे। Shadow Procession (1999), More Sweetly Play the Dance (2015), Triumphs and Laments (2016), The Head & the Load (2018) हम दोनों आँखें फाड़-फाड़कर उनके हर काम को देखते रहे, फिर एक दूसरे की तरफ़ मुस्कुराकर कहते कि मज़ा आ गया। William Kentridge, South African visual artist, Filmmaker और stage director हैं। वह मीडिया में जिसमें Animation film, prints, drawings शामिल हैं के साथ-साथ sculpture और थिएटर भी करते हैं। उनके लगभग सारे तरीक़े के काम का प्रदर्शन था। करीब दो घंटे बाद जब मैं और जंग-हे थककर चूर हो गए तो हम दोनों ने एक साथ कहा कि I need a coffee. इस तरीक़े का काम बहुत अच्छा असर छोड़ता है, जितने लोग थे उस म्यूज़ियम में लगभग हर व्यक्ति को किसी न किसी जगह पर उनके काम ने प्रभावित किया था। मैं William Kentridge के काम से बहुत प्रभावित था। मैंने और जंग-हे ने बहुत देर उनके काम की चर्चा की। जब जंग-हे ने देखा कि मैं कितना ज़्यादा उत्साहित हूँ तो कॉफ़ी पीते हुए उन्होंने मेरे सामने दो टिकट रखे और पूछा, “उन्हें साक्षात perform करते देखना है?” मैं दंग रह गया और उठकर जंग-हे के गले लग गया।

William Kentridge श्रोताओं के बीच खड़े सबको बैठने की जगह बता रहे थे। मैं उन्हें दूर से बैठा हुआ देख रहा था। जंग-हे का काम भी बहुत कुछ William Kentridge के काम की तरह ही प्रयोगवादी है। वह आगे से देखना चाहती थीं और किस्मत से उन्हें जगह मिल भी गई। फिर वह स्टेज पर गए और उन्होंने एक किताब का पन्ना खोला और पीछे स्क्रीन पर हमें एक किताब खुली दिखाई। उसमें चारकोल एनिमेशन शुरू हुआ ज्यों ही William Kentridge ने कविता पढ़नी शुरू की। कविता जर्मन कवि Kurt Schwitters की 1932 की Sound Poem थी। जिसमें सिर्फ़ जर्मन शब्द थे और उनका कोई मानी भी नहीं था। जंग-हे के हिसाब से लोग उस कविता को म्यूज़िकल स्कोर भी कहते हैं। William Kentridge ने एक घंटे तक वे शब्द दर्शकों की तरफ़ फेंके जिनका असल में कोई मानी नहीं था और पीछे संगीत के साथ उनका

एनिमेशन चल रहा था। कुछ देर में आप कविता को भूल जाते हैं और सच में शब्द संगीत का हिस्सा होते हैं, जो एनिमेशन की विभिन्न आकृतियों के साथ एक अलग ही मतलब फेंकने लगते हैं। जब कन्सर्ट खत्म हुआ तो William Kentridge नीचे दर्शकों के बीच आए। मैं मौक़ा पाकर उनसे मिलने गया। मैंने उनके काम की और उनकी एक्ज़िबिशन की तारीफ़ की। वह कहने लगे कि वह जल्द भारत में भी अपना शो करने वाले हैं। मैं खुश हो गया। बहुत-से लोग उन्हें घेरे हुए थे। मैं बहुत कम ही ऐसा करता हूँ, पर मैंने उनसे कहा कि क्या मैं एक तस्वीर आपके साथ ले सकता हूँ? उन्होंने खुशी-खुशी हाँ बोला और मैंने एक तस्वीर उनके साथ ले ली।

Basel में बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही थी और रात अभी खत्म नहीं हुई थी। आर्ट Basel के चलते, बारिश के बावजूद, सड़कों पर युवा आर्टिस्टों की भीड़ थी। जिन Bulgarian Artist के घर हम कल रात पार्टी में गए थे, उनकी आर्ट की प्रदर्शनी भी Basel में लगी हुई थी। जंग-हे ने कहा कि हमें वहाँ तो एक बार जाना ही चाहिए। करीब पंद्रह मिनट बारिश में चलते हुए हम वहाँ पहुँचे। सारे युवा आर्टिस्ट हमें देखकर खुश हो गए। Albena Mihaylova ने कसकर गले लगाया और कहा, “मैं बहुत थक गई हूँ। कुछ भी खाया नहीं है, पर मज़ा बहुत आ रहा है।” मैंने उनके उत्साह में कहा कि मैं कुछ ले आऊँ उनके लिए? उन्होंने कहा कि नहीं सारा कुछ खाने को यहीं रखा है, पर फुर्सत नहीं है। बाक़ी Bulgarian Artist बियर के नशे में दिखे। उनके कहे में उत्साह कुछ ज़्यादा ही था। पूरा दिन इतना ज़्यादा आर्ट देखा था कि इस वक़्त सब कुछ धुँधला दिख रहा था। मुझे एक कोने में एक चेयर दिखी मैं उस पर पस्त हो गया। जंग-हे आई और उन्होंने कहा कि मैं बहुत थकी हुई हूँ। मैंने उनसे कहा कि मैं मृत हूँ, पर मुझे बियर चाहिए। जंग-हे ने कहा कि हम एक छोटी पार्टी में जा रहे हैं, बस कुछ ही देर में।

मैंने खुद को किसी स्पैनिश आर्टिस्ट के स्टूडियो में पाया। उन्होंने मुझे स्पैनिश वाइन ऑफ़र की और मैं मना नहीं कर सका। मुझे उसकी बहुत ज़्यादा ज़रूरत थी। देर तक मैं सबकी बातों पर मुस्कुराता रहा, पर असल में मेरे भीतर वाइन के अलावा कुछ भी नहीं जा रहा था।

मैं वाइन के नशे में और दिन भर की थकान में चूर था। बारिश हल्की हो चुकी थी। मैं और जंग-हे Basel की अँधेरी, पुरानी, पत्थर की गलियों में चल रहे थे। कई हज़ारों सालों पहले भी ये गलियाँ ऐसी ही रही होंगी। यह सोचकर बड़ा सकून मिलता कि हम सच में इतिहास में चल रहे हैं।

“मैंने उसको कहा था कि तुम यहाँ आए हुए हो तो उसने कहा था कि हम तीनों स्काइप पर बात कर सकते हैं।”

जंग-हे ने ठीक वक़्त उसका ज़िक्र छोड़ा। मैं भी इन पुरानी सड़कों पर भीतर कहीं उसके बारे में सोच रहा था। हम तीनों कोरिया की सड़कों में नशे में यूँ ही घूमा करते थे।

“नहीं जंग-हे, यह ठीक नहीं है। कभी मुलाक़ात होगी तो ठीक है, पर ऐसे स्काइप पर क्या बात करेंगे?”

“तुम दोनों कर लेना, मैं दूसरे कमरे में चली जाऊँगी।”

“छोड़ दो... यह ठीक नहीं है।”

मैंने जंग-हे के कंधे पर प्यार से हाथ रखते हुए कहा था। हम तीनों की बहुत अच्छी दोस्ती थी। जंग-हे उस तीसरे हिस्से को वापिस लाना चाहती थी। हम दोनों जानते थे कि एक हिस्सा खाली है हमारे बीच।

घर पहुँचकर जंग-हे ने अपनी 1993 में की परफार्मेंस की वीडियो दिखाई। जंग-हे को याद नहीं है, पर इसे मैं आठ साल पहले कोरिया में देख चुका था और मुझे वह ठीक ही लगी थी। जंग-हे के हिसाब से यह उसका पहला अच्छा काम था, जिसे बहुत सराहा गया था। वाइन और थकान के बीच मैं उस बीस मिनट की कंपोज़ीशन को देख रहा था। कोरिया में आठ साल पहले मुझे यह ठीक लगी थी और अभी, ठीक इस वक़्त मुझ पर वह इतना गहरा असर कर रही थी कि मैं खुद को उसमें डूबा हुआ महसूस कर रहा था। इन आठ सालों में क्या बदला था? कौन-से तार किधर से निकलकर किधर जुड़ गए थे? मैं नहीं जानता पर मुझे ये बहुत गहरे कहीं झिंझोड़ रहा था। बीस मिनट बाद मैं चुप हो गया था। जंग-हे के रूम में मैं सोफ़े पर लेट गया और उनसे कहा कि आज के सारे अच्छे कामों में ये आपकी कंपोज़ीशन भी शामिल है। उस वक़्त एक चरमराती-सी इच्छा हुई कि जंग-हे से कहूँ कि चलो उससे स्काइप पर बात करते हैं। इस इच्छा के आते ही मैं उठ गया और जंग-हे को गुडनाइट कहा। जाते हुए जंग-हे ने कहा कि वह पिछले साल मुझसे मिलने आई थी और दस दिन मेरे साथ ही रही। वहीं उसी कमरे में जहाँ तुम सो रहे हो। मैंने अपने कमरे का दरवाज़ा खोला ही था उस वक़्त, वापिस देखा तो कमरा अब एकदम अलग ही अतीत साथ में लिए हुए था। उसके भीतर जाना वापिस आठ साल पहले जाने जैसा लग रहा था। मुझे पता था उसने यहाँ आते ही पहले पूरे कमरे को अपने तरीक़े से सजाया होगा। हर चीज़ को करीने से रखा होगा, तब कहीं वह पहली रात यहाँ सोई होगी। मैं वैसा-का-वैसा ही सो गया—वर्तमान की बिखरी हुई चीज़ों के और अतीत की पीड़ा के बीच में।

जंग-हे मुझे बोलकर सोई थीं कि तुम्हें सुबह पच्चीस मिनट लगेगा स्टेशन पहुँचने में, इसलिए तुम्हें थोड़ा जल्दी निकलना होगा। मैं अपने वक़्त से थोड़ा देर से उठा, पर लगभग वक़्त पर तैयार हो गया था। मेरे सूटकेस की आवाज़ से जंग-हे उठीं और उसने पूछा, “तुम जा रहे हो?” ऐसे मानो मेरे उत्तर में ‘हाँ’ और ‘ना’ की संभावना अभी बची है। सुबह उठते ही वह एकदम उस बच्ची जैसी लग रही थीं, जिसे ज़बर्दस्ती उठाकर स्कूल के लिए खड़ा करा दिया जाता है। मैंने कहा, “जी बस जा ही रहा हूँ। सॉरी आपकी नींद टूट गई मेरी खट-पट से।” उन्होंने कहा कि रुको मैं तुम्हें नीचे तक छोड़ती हूँ। वह तैयार होने अपने रूम में चली गई। अंदर से उनकी आवाज़ आ रही थी, मानो वह किसी से बात कर रही हों। मैंने वक़्त देखा, मैं थोड़ा लेट हो रहा था। कुछ देर में मैंने उनका दरवाज़ा खटखटाया तो उनकी आवाज़ आई कि बस आ रही हूँ।

वह कुछ देर में तैयार होकर आई और हम नीचे चल दिए। मैं थोड़ा जल्दी में था। उन्होंने कहा कि तुम बस ले लो, जल्दी पहुँच जाओगे। मैंने अपनी बस की टिकट ली और बस सामने आती हुई दिख गई। मैंने देखा वह भी टिकट निकाल रही हैं।

“आप क्यों निकाल रही हो टिकट?”

“मैं तुम्हारे साथ आखिरी कॉफी पीना चाहती हूँ—स्टेशन के बाहर।”

वह इसी तरह की थीं। वह पूछती नहीं थीं, बताती थीं। मैंने कहा ठीक है।

वह बस में बहुत चुप थीं। मैंने एक-दो बार बात करने की कोशिश की, पर वह चुप रहीं। स्टेशन पर हम जल्दी पहुँच गए थे। उन्होंने कैफ़े चुना और मैं हम दोनों के लिए कॉफी लेकर आया।

“मैं अभी उससे स्काइप पर बात कर रही थी।” यह उनके भीतर दबा पड़ा था जो वह बोल नहीं रही थीं। उन्होंने कह दिया और खिड़की से बाहर की तरफ़ देखने लगीं, मानो उन्होंने कुछ भी नहीं कहा हो।

“क्या कह रही थी वो?” मैंने बहुत स्नेह से पूछा।

“पूछ रही थी कि क्या वो वहीं है अभी भी... क्या कर रहा है इस वक़्त?”

“आपने क्या कहा?”

“मैंने कहा कि दरवाज़े के दूसरी तरफ़ अपना सूटकेस लेकर खड़ा है।”

कुछ तार कभी टूटते नहीं हैं। कितनी भी कोशिश क्यों न कर लें। उन्हें लाख आश्वासन भी क्यों न दें कि अभी तोड़ रहे हैं, पर बाद में गाँठ बाँधकर फिर से जोड़ सकते हैं, पर वह मानते नहीं हैं। सारे तनाव, खिंचाव के साथ वह भीतर कहीं बहुत महीन त्रासदी के साथ जुड़े रहते हैं।

मैं जब अपने स्टेशन की तरफ़ जाने लगा तो देखा वह मेरे पीछे-पीछे आ रही हैं।

मैंने कहा कि मैं अब चला जाऊँगा।

“असल में ये ट्रेन फ़्रांस स्टेशन से जाती है जो अलग है... फ़्रांस का हिस्सा। अब स्विस बॉर्डर तक आई हूँ तो फ़्रांस भी आ ही जाती हूँ।”

मेरी ट्रेन खड़ी थी। मैंने अपना सूटकेस अपनी सीट पर रखा और उनको विदा कहने बाहर आया। मैं शुरू से यह सहन नहीं कर पाता हूँ। वह भी मेरे बहुत मना करने पर भी कोरियन हवाई अड्डे तक आई थी मुझे छोड़ने। मैं जंग-हे से कहना चाह रहा था कि आप चली जाएँ, मैं ये अंतिम बॉय नहीं कर पाता हूँ। मैं उनके गले लग गया और कहा कि मैं अपनी सीट पर जाकर बैठता हूँ। उनकी आँखों में नमी थी। उन्होंने कहा कि अगर Strasbourg में बोर हो जाओ तो तुम वापिस भी आ सकते हो कुछ दिनों के लिए। मैंने कहा कि बिल्कुल। और अजीब-सी जल्दबाज़ी में मैं ट्रेन में चढ़ गया। वह कुछ देर खड़ी रहीं फिर... फिर आधे मन से जाने लगीं। मैं खिड़की से उन्हें जाता हुआ देख सकता था। किसी भी क्रिस्म की पीड़ा से बहुत बड़ी पीड़ा है मेरे लिए ये... ये दृश्य। छोटे-से क्रद की जंग-हे, लाल ओवरकोट में... अपने झुके बूढ़े होते हुए कंधों के साथ चली जा रही थीं। मेरी आँखें छलकने लगीं। मैंने तुरंत चश्मा लगा लिया। मेरे पास अभी भी चार दिन थे। मैं यहाँ आराम से दो दिन और रुक सकता था। मैंने फिर खुद से कहा कि मैं यात्री हूँ और यात्रा में यही होता है... आप गुज़र जाते हैं... बस। ट्रेन चलने लगी थी और मैं अपनी कुर्सी में अजीब-सी ग्लानि में घुसा चला जा रहा था।

Strasbourg इस यात्रा का मेरा अंतिम प्रवास, आखिरी शहर।

Air bnb की बुकिंग करते वक़्त पता नहीं चला, पर जब मैं Strasbourg के अपने कमरे में पहुँचा तो सुखद आश्चर्य हुआ कि ये Strasbourg के पुराने शहर में एक बहुत बुरानी बिल्डिंग के Attic में था।

मुझे Anne frank की डायरी याद हो आई। बहुत वक़्त पहले मैंने उस किताब को पढ़ा था। ये Attic शब्द वहीं से मेरे दिमाग़ में घुसा हुआ था। जब तक आप उस जगह रहें नहीं आपको असल में कभी पता नहीं चलता कि Attic के सही मायने क्या होते हैं। जिसका यह घर था वह शहर में नहीं था। इस वक़्त यह Attic पूरा मेरा था। अभी भी मेरे पूरे शरीर में Basel की थकान भरी हुई थी, पर शहर देखने की उत्सुकता मैं दबा नहीं पाया। नहा-धोकर, कपड़े बदलकर मैं सीधा Strasbourg की गलियों में टहलने लगा। बादल छाए हुए थे, मौसम में ठंड थी और मेरा शरीर टूट रहा था। पहला ठीक कैफ़े देखकर, मैं वहाँ पसर गया। एक कड़क कॉफ़ी ऑर्डर करके मैं सीधा अपनी कहानी के अंत से खेलने लगा जो दिमाग़ में एक ज़िद्दी बच्चे-सा घूम रहा था। राजा कैसे असल में प्रजा का गुलाम होता है, उस प्रजा के लिए उसे हर पल सोचना पड़ता है और कैसे प्रजा बिना निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी का हल्का जीवन जी रही होती है। अंत है और उसकी ढेरों संभावनाएँ... मुझे एक निर्णय लेना ही था सो इस ठंड में टूटते हुए शरीर के भीतर कॉफ़ी जाते ही मैंने एक तरफ़ जाना तय किया। जिसके कारण सबसे पहले उस कहानी का नाम मुझे 'आनंद' से 'नादान' करना पड़ा। जब कभी आप कहानी पढ़ेंगे तो आपको मेरे निर्णय का कारण समझ में आएगा।

ठंड बढ़ती जा रही थी और अब साथ ही हवा चलने लगी थी। मेरी उँगलियाँ एक तरफ़ से सुन्न होती जा रही थीं। Basel में मैं कहानी का एक शब्द भी नहीं लिख पाया था और मैं एक प्रेमिका की तरह अपनी कहानी को पूरे वक़्त याद कर रहा था, इसलिए लिखना भी थोड़ा ज़्यादा हो रहा था। कहानी का अंत लिखकर मैंने शुरू से उसे पढ़ना शुरू किया तो लगा अभी छोटा-छोटा बहुत काम बचा है। पर इस वक़्त Strasbourg को जानना ज़रूरी था और मेरी उँगलियाँ भी काम नहीं कर रही थीं। मैं इस शहर की नदी Ponts Couverts के किनारे-किनारे चलते हुए पूरे शहर को जानने की कोशिश करने लगा। इस शहर ने अपनी पुरानी इमारतों को इस क़दर सँजोकर रखा था कि पूरा शहर पुराने लकड़ी के बने घरों से अटा पड़ा था। हर रंग के सुंदर घर और पूरे शहर से तीन धाराओं में नदी बहती हुई। मेरा मुँह खुला हुआ था और हर कुछ वक़्त में वाह... वाह... निकल रहा था। भारतीय खाने की इच्छा आजकल थोड़ी बढ़ गई थी सो Thai रेस्त्राँ दिखते ही मैं भीतर चला गया। अपना फ़ेवरेट चिकन राइस ऑर्डर किया और वापिस कहानी पढ़ना शुरू की। अब कहीं जाकर मुझे अंत पता चला था और सारी कहानी की संरचना अब सामने दिखने लगी थी। मेरे लिखने के तरीक़े में अगला वाक्य कौन-सा होगा, यह भी मुझे पता नहीं होता। लिखने की उत्सुकता उतनी ही बनी रहती है, जितना किसी कहानी को जानने की। हर कुछ पैराग्राफ़ लिखने के बाद वापिस उसे ऐसे पढ़ता हूँ, मानो किसी और ने लिखे हों और मुझे पढ़ने के लिए दिए हों कि बताओ कैसे हैं? जब अंत होता

है तो समझो मैंने खुद एक कहानी पढ़कर खत्म की है। कई कहानियों के अधूरे छूटने का मुख्य कारण यही था कि मुझे उनकी यात्रा शुरू में ही पता चल गई थी कि ये किस तरफ़ जा रही हैं और इनका अंत क्या है। मुझे उन्हें आधे में छोड़ना पड़ा, क्योंकि यह पढ़ी हुई कहानी लिखने जैसा बोरिंग काम है। मुझे बिल्कुल उसमें आनंद नहीं आता। आनंद तब आता है, जब कहानी लिखी जा रही है और वह भीतर तक उथल-पुथल मचा दे। इस जिज्ञासा में कि वह किस तरफ़ को जा रही है। बार-बार उस कहानी के कुछ और वाक्य... कुछ और संवाद जानने की इच्छा भीतर उबलती रहे। इस यात्रा में चार कहानियाँ लिखी हैं और पूरी यात्रा उन कहानियों के कारण इतनी खूबसूरत हो गई है कि लगता है चार साथी अलग-अलग वक़्त में मेरी यात्रा के सहयात्री थे।

Strasbourg से Frankfurt एयरपोर्ट के लिए मैंने बस की टिकट बुक की। जैसे ही फ़ोन रखा तो अजीब-सी कसक उठी मन में कि यह यात्रा खत्म होने पर है। बस इतनी ही थी यह... विश्वास नहीं हो रहा था कि यह बस अभी की बात है, जब मैं पेरिस में था... Mâcon में था... Annecy... Geneva... Chamonix... कैसे यह यात्रा इतनी जल्दी अपने अंत पर है। वापिस मुंबई और फिर वही दिन, दोस्त, कॉफ़ी... घर... बातें... कितना याद रहेगा मुझे यह अकेले भटकना? उन अँधेरी रातों में जंग-हे के साथ चलना, बेनुआ की हँसी, कैथरीन की आँखें, बीच में मिले उमदा लोग... खुद से देर तक, बोलने की तड़प में, बातें करना। Mary, एलेक्स, मर्सीया और उनके पीछे वाले कमरे में रहने वाला जाने कौन? कैफ़े के वेटर्स... यहाँ-वहाँ की मुस्कुराहटें, लंबी वॉक, सुस्त दोपहरें, कॉफ़ियाँ, Croissant और वह सब जिनके नाम धुँधले होते जा रहे हैं और जिनके नाम मैं लेना नहीं चाहता, सारा कुछ। दो दिन और हैं मेरे पास... इन दो दिनों में इच्छा है अपनी ही यात्रा वापिस पढ़ने की। शुरू से पूरा-का-पूरा वापिस जीने की... पर अभी नहीं, अभी कुछ और बचा है। इन सबमें मैं अभी भी फ़्रांस की गलियों में ही हूँ, अभी भी हर मोड़ पर देर तक सोचता हूँ कि दाएँ जाऊँ कि बाएँ... अभी भी यात्रा में नई गलियाँ आ रही हैं।

मुझे फ़ेसबुक पर Martine का मैसेज आया कि मैं स्ट्रासबर्ग में ही रहती हूँ। एक हफ़्ते पहले तुम्हारी फ़िल्म Netflix पर देखी और तुम यहाँ हो यह बहुत खुशी की बात है। मैं तुमसे मिलना चाहती हूँ।” Martine, उनके पति और उनकी दो छोटी बेटियों से मैं उत्तराखंड के पहाड़ों पर मिला था शायद 2012 में। उन्होंने हमारी फ़िल्म ‘हंसा’ देखी थी और लंबी चर्चा हुई थी उनके साथ। उनकी बच्चियों के साथ (तब वे दोनों बहुत छोटी थीं) उत्तराखंड के जंगल में टहला भी था। मैंने तुरंत हाँ कह दिया। हमने लंच पर मिलना तय किया। पहाड़ों पर मुझे याद है मेरे दोस्त से मैंने कहा था, “इस खूबसूरत परिवार को देखकर बहुत अच्छा लगता है। दो सालों से ये इंडिया घूम रहे हैं, अपने बच्चों के साथ। और ये लोग फ़्रांस के एक छोटे गाँव में रहते हैं।”

हम Café Brant में मिले। जब वह आई तो मैंने देखा वह अपनी उम्र से कुछ ज़्यादा लग रही थीं। शरीर और चेहरे पर एक थकान थी। एक पल को लगा कि क्या यह

वही हैं, जिनसे मैं उत्तराखंड में मिला था? हम दोनों ने पहले देर तक 2012 में हुई हमारी मुलाकात की चर्चा की। फिर उन्होंने बताया, “शादी के बाद वह जर्मन बॉर्डर पर एक छोटे-से गाँव में, लगभग जंगल, में रहने चले गए थे। पर अब वह वापिस Strasbourg अपनी बेटियों के साथ आ गई हैं।” मुझे कुछ देर लगी यह समझने में कि वह कह रही हैं कि वह अपने पति से separate हो चुकी हैं। कुछ चीज़ों का आप यकीन नहीं कर पाते हैं। मुझे थोड़ा वक़्त लगा इस बात को ज़ब करने में। पर Martine एकदम सहज थीं और उन्होंने मुझे भी तुरंत सहज कर दिया।

वह बहुत ज़िंदादिल हैं। उन्होंने अपनी जवानी के दिनों में दक्षिण भारत का अकेले भ्रमण किया था। वह एकदम समझ रही थीं कि मैं क्यों इस तरह की यात्राएँ करता हूँ। पर फिर भी मैं कभी ठीक से बता नहीं पाता कि मैं क्यों इस तरह, बेसिर-पैर-सा घूमता रहता हूँ। माँ ने बचपन में कहा था कि तेरे दोनों पैरों में भँवर हैं, तू कभी एक जगह नहीं टिकेगा। बचपन में मुझे लगा था कि यह एक बीमारी-सी है कि मैं कहीं भी एक जगह टिकता नहीं हूँ। Martine मेरी बात पर देर तक हँसती रहीं। फिर कहने लगीं कि मेरी माँ से तो मुझे आज भी जर्मन में ही बात करनी पड़ती है। उनका Strasbourg अभी भी जर्मनी में ही है। इस उम्र में उनके भीतर से यह बात निकालना बहुत कठिन है। उन्होंने मेरे लिए बेकन के साथ पास्ता ऑर्डर किया जो कि यहाँ का लोकल खाना है। मैं कुछ एकदम लोकल खाना चाह रहा था। वह पास ही के छोटे-से गाँव में टीचर हैं। वह कह रही थी, “हम दस टीचर हैं, उनमें से मेरे अलावा महज़ एक और टीचर है जो थिएटर, एक्ज़िबीशन देखती है या यात्रा करती है। मुझे बहुत अजीब लगता है कि टीचरों का तो नई चीज़ें देखना कितना ज़रूरी है, वरना वे बच्चों को क्या सिखाएँगे। यहाँ भी लोग बहुत कम यात्राएँ करते हैं, खासकर जिन छोटी जगहों पर मैं रही हूँ।”

खाना बहुत लज़ीज़ था। हम देर तक अच्छे खानों की बातें करते रहे। उन्होंने कहा, “भारत के दो साल उनके जीवन के सबसे ख़ूबसूरत दो साल थे।” मैंने कहा, “अभी तो दूसरी पारी शुरू हुई है। अभी तो बहुत से आश्चर्य बचे हैं।” यह कहते ही मुझे लगा कि मैंने ग़लत राहों की बात छेड़ दी है। इससे पहले कि मैं बात को घूमाता वह कहने लगीं, “जब इस उम्र में आकर आप अचानक अकेले हो जाते हैं तो बहुत अजीब लगता है। सारे दोस्त दो भागों में बँट जाते हैं। अब आपको चुनना पड़ता है कि किससे मिलें और किससे नहीं। पर ये सब छोटी बातें हैं, असल में शरीर को, दिमाग़ को, घर को एक आदत है... उस आदत से आज़ाद हो पाना बहुत कठिन है। पहले मुझे लगा था कि आज़ादी मिली है। अब मैं जो चाहे वह कर सकती हूँ। पर कुछ ही वक़्त में लगा कि असल में इस आज़ादी का करना क्या है? मैं बहुत मेहनत करती हूँ खुश रहने के लिए। खुशी आ जाती है, पर ये आज़ादी असल में सिगरेट की तरह... आप हमेशा से पीना चाहते थे, पर जब आपके पास सिगरेट आई तो माचिस में तीलियाँ ख़त्म हो चुकी थीं। अब उस सिगरेट को हाथ में रखे हम क्या कर सकते हैं! ये आज़ादी इस वक़्त बिना माचिस की सिगरेट है मेरे लिए।” मुझे सिगरेट का उदाहरण मज़ेदार लगा पर समझ नहीं आया कि अचानक सिगरेट क्यों कहा उन्होंने। फिर उन्होंने बताया कि वह चैन स्मोकर थीं और अभी कुछ वक़्त से उन्होंने

सिगरेट छोड़ रखी है। हम खाने के बाद कॉफी पीने बैठे, मैंने उनकी इजाज़त ली सिगरेट के लिए तो उन्होंने कहा, “मुझे आजकल सिगरेट नहीं पीने में मज़ा आता है।”

वह आजकल पेंटिंग कर रही हैं। एक नाटक में काम कर रही हैं और अगस्त में अपनी एक दोस्त के साथ Backpack Travel कर रही हैं। वह इन सारी बातों को एक अजीब-से भारीपन से बता रही थीं। आज़ादी का बोझ मैं उनके कंधों पर देख सकता था।

उनसे मुलाकात छोटी थी, पर बहुत अच्छी थी। किसी भी शहर के रहने वालों से जब आप मिलते हैं तो लगता है कि उस शहर को आप थोड़ा और जानते हैं। मैं अपना बैग उठाकर वापिस उस जगह की तलाश में निकल गया जहाँ से मैं लिखे पर वापिस आ सकूँ।

अभी फ़ोन खोला तो उसके फ़ेस डिटेक्टर ने मुझे नहीं पहचाना। मैंने फिर कोशिश की। उसने कहा कि Use Pin. मैंने अपना चार अंकों का नंबर डाला और फ़ोन खुला। मुझे अचानक खुशी हुई कि इस यात्रा में मैं इतना बदल गया हूँ कि मेरा फ़ोन भी मुझे अब नहीं पहचान रहा, पर ध्यान से देखा तो उसका स्क्रीन एक कोने से तिड़क गया था। मेरे मुँह से ‘शिट’ निकला। मुझे लगा कि मैंने खुद से कहा है, पर वह थोड़ा लाउड निकला और सामने बैठी लड़की ने पलटकर मुझे देखा। मैंने अपनी छोटी बदतमीज़ी के लिए क्षमा माँगी और वापिस अपने फ़ोन को देखने लगा। यह हुआ कब? मेरा फ़ोन तो गिरता रहता है, पर इसका स्क्रीन तिड़क चुका है... यह मुझे अभी दिखा। तभी उस लड़की ने वापिस पलटकर देखा और पूछा, “All okay?”

“yes... its just my luck sometimes, surprises me!”

वह लड़की हँसने लगी। वह वापिस अपनी कॉफी पर गई और कुछ ही देर में पलटकर पूछा, “आप स्पैनिश हैं?”

“काश... नहीं मैं इंडिया से हूँ।”

“ओ... भारत... मैं कुछ भी नहीं जानती इंडिया के बारे में... कैसा है इंडिया?”

पहले तो मुझे इस सवाल पर हँसी आई... फिर मैंने कहा, “मैंने जब छोड़ा था तो गर्म था बहुत, अब सुना है बारिश शुरू हुई है।”

“क्या मैं आपसे एक सवाल पूछ सकती हूँ?”

“बिल्कुल।”

वह उठकर मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई।

“मैं ली-वान हूँ... चाइना से...”

“ओ... मुझे याद नहीं कि मैंने कभी किसी चाइनीज़ लड़की से बात की है। बहुत अच्छा लगा आपसे मिलकर।”

मैंने अपना नाम बताया। उसके बाल लंबे खुले हुए थे। चेहरा पतला था और दुबली होने के कारण लंबी लगती थी। उसने काले बूट पहने हुए थे और नीले रंग का कोट ऊपर डाला हुआ था।

“पाकिस्तान कैसा है?”

“मैं कभी गया नहीं हूँ पाकिस्तान, पर वह बहुत सुंदर है। बिल्कुल भारत जैसा सुंदर है।”

“मैं वहाँ जाना चाहती हूँ और इंडिया भी आना चाहती हूँ।”

“बिल्कुल आपको आना चाहिए, दोनों बहुत एक जैसे हैं और दोनों अपने भीतर बहुत सारी हलचल पाले हुए रहते हैं। मनोरंजन की फुल गारंटी है।”

वह हँसने लगी। फिर हमारी औपचारिक बातें हुईं, जिनमें उसके पास बहुत सारे सवाल थे कि मैं क्या करता हूँ? कहाँ-कहाँ जा चुका हूँ फ्रांस में? वगैरह-वगैरह। इन सबमें मैं हमेशा थोड़ा झेंपता हूँ किसी अपरिचित से पूछने में कि आपकी कहानी क्या है? इसका कारण शायद वह भीतर बैठा लेखक है। मैं नहीं चाहता कि वह अपना सिर बाहर निकाले और कहे कि अरे यह तो गज़ब कहानी है, इसे लिखा जा सकता है। मैं जीना चाहता हूँ। मैं हर चीज़ को, हर बात को हमेशा लेखक की नज़र से नहीं देखना चाहता हूँ।

कुछ देर हमारी बातें इस पर होने लगीं कि दुनिया किस तरह राइट विंग की तरफ़ बढ़ती जा रही है। इन संवादों में ज़्यादा गुंजाइश नहीं होती है। ये बातें हमेशा बहुत एकतरफ़ा चलती हैं। इनमें कोई बहुत सरप्राइज़ की गुंजाइश भी नहीं होती और ये आपको भीतर कहीं असहज भी कर देती हैं, क्योंकि आपके बस में कुछ भी नहीं है। हमारी बातचीत कहीं बीच में ही रुक गई। मैं बातें आगे बढ़ा सकता था, पर मैं इस विषय से थोड़ा थक चुका था। कुछ देर की चुप्पी के बाद ली-वान ने कहा, “यह बात कितनी काव्यात्मक लगती है कि शायद हम मनुष्यों की वह आखिरी जनरेशन होंगे जो अपने समय में इस दुनिया को खत्म होता देखेंगे।”

मैं अवाक्-सा उसे देखता रहा। मुझे पता था कि यह मैं नहीं यह मेरा लेखक उसे देख रहा था। इतनी खूबसूरत लाइन बिना लिखे वह नहीं रह सकता। इस वाक्य के बाद मेरी उत्सुकता ली-वान में बहुत बढ़ गई और मैंने अपने सवाल पूछने शुरू किए।

ली-वान पिछले चार सालों से Strasbourg में रह रही है। वह सोशल इशूज में पीएचडी कर रही है। उसका विषय है—रिफ्यूजी (How they are surviving)। वह सितंबर में लेबनान जा रही है। पर Beirut नहीं। वह असल में सीरिया जाना चाहती है। उसे सीरिया बहुत आकर्षित करता है। उसने लेबनान के सीरिया से लगे बॉर्डर के किसी शहर में जाना तय किया है, जिसके लिए वह अरबी ज़बान सीख रही है। फिर वह कहने लगी कि अरबी ज़बान की स्क्रिप्ट बहुत अलग है, पर बोलचाल में वह वैसी शुद्ध अरबी नहीं बोलते हैं। और लेबनान की अरबी दूसरी तरह से बोली जाती है और सीरिया में एकदम दूसरी तरह से। मैं बहुत मेहनत कर रही हूँ, पर मुझे सितंबर तक इतनी अरबी आनी चाहिए कि मैं वहाँ के बच्चों से बात कर सकूँ।

मैंने जब उसके घरवालों के बारे में पूछा तो उसने उनका ज़िक्र टाल दिया। उसने सिर्फ़ अपनी दादी के बारे में बात की। वह कहने लगी, “मेरी दादी कभी भी चाइना के बाहर नहीं गई हैं। चाइना तो छोड़ी वह जिस शहर में पैदा हुई हैं, उसी के आस-पास मँडराती रहती हैं। जब उन्हें पता चलता है कि मैं इन शहरों में हूँ तो बहुत चिंतित हो जाती हैं। बार-बार मुझे वापिस आने को कहती हैं। फिर मैंने उनके लिए एक बड़ा सही हथियार इस्तेमाल किया है।

मैं हमेशा उनसे कहती हूँ कि मैं दुबई जा रही हूँ या दुबई में हूँ। अब उन्हें दुबई रट गया है। मैं कहीं भी रहती हूँ, वह पूछती हैं कि दुबई ठीक है?"

उसकी बातचीत में दादी हर कुछ देर में चली आती थी। पर घर के बाकी लोगों के बारे में उसने ज़िक्र तक नहीं किया। मुझे थोड़ा अजीब लगा। मैंने अपनी माँ और अपने भाई की बातें छेड़ीं कि शायद यह सुनकर वह भी अपनी माँ के बारे में कुछ बताए, पर उस तरफ़ वह बिल्कुल नहीं जाती थी। इस बीच वह जिस तरह से आने जाने-वालों को देखती थी, वह बहुत ही अजीब था। कई बार वह हमारी बातचीत को बीच में ही छोड़ देती थी और किसी अंजान आने-जाने वाले को ऐसे देखती, मानो वह उन्हें जानती हो। कभी तो बीच बातचीत में वह कहीं खो जाती। मैं बात करते-करते चुप हो जाता। मुझे पता था कि वह वहाँ नहीं है। फिर कुछ देर में वह वहीं से बात पकड़ती... तो तुम कह रहे थे कि... मुझे अजीब लगता पर शायद ये अलग क्रिस्म की लड़की है, सो मैं अपनी बात वहीं से कहना शुरू कर देता। छोटी मज़ाक़िया बातों पर वह देर तक हँसती और कभी देर तक चुप रहने के बाद सीधा सीरियन बच्चों पर बात करना चालू कर देती।

"तुम वॉक करना चाहोगे? इस शहर को सबसे अच्छा पैदल ही देखा जा सकता है।"

मैंने अपनी कॉफ़ी का पैसा चुकाया और ली-वान के साथ पैदल Strasbourg देखने लगा। उसने चलते ही कहा, "तुम बस मुझे फ़ॉलो करो। मैं मेरी पसंदीदा गलियों में तुम्हें लेकर चलती हूँ।" मैं उसे फ़ॉलो करने लगा। शाम के आठ बज रहे होंगे, सूरज सुनहरा था और सारी पुरानी इमारतों को अपने सुंदर स्पर्श से सुनहरा कर दे रहा था। हवा में थोड़ी ठंड बढ़ गई थी तो बैग से मैंने अपना जैकेट निकाल लिया। वह एक इमारत में मुझे ले गई —The Barrage Vauban जो तीसरी नदी के ऊपर एक बड़े से डैम की तरह खड़ी दीवार थी। उसके ऊपर आप चल सकते थे, जहाँ से तीनों नदियाँ और Strasbourg दिखते थे। उसका दरवाज़ा एक तरफ़ से बंद था तो वह मुझे दूसरी तरफ़ ले गई। हम उस दीवार के अंदर थे और दीवार के दोनों तरफ़ गिरजे की टूटी हुई बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ रखी हुई थीं। टूटे हुए घोड़े, बिना सिर वाले प्रीस्ट, टूटे हुए शेर, तलवारें। मुझे ये बड़े गिरजों से ज़्यादा फ़ैसिनेटिंग लगा। हम कुछ देर वहाँ रुके और फिर दूसरे दरवाज़े से दीवार के ऊपर जाने लगे। एक आदमी दूसरी तरफ़ की दीवार का भी दरवाज़ा बंद कर रहा था। उसने कहा कि आठ बजे यह बंद हो जाता है, पर ली-वान ने फ्रेंच में पता नहीं उससे क्या कहा, वह हँसने लगा और उसने हमें पाँच मिनट वहाँ जाने की अनुमति दे दी। ली-वान ने मेरा हाथ पकड़ा और हम भागते हुए ऊपर चढ़ गए। सूरज डूब रहा था और पानी पर सारी इमारतों का सुनहरा अक्स दिख रहा था। मैं उस दृश्य में डूब गया। मैंने ली-वान से कहा कि सच में इतना सुंदर सूर्यास्त मैंने पहले कभी नहीं देखा था। जब मैंने उसे देखा तो वह वहाँ नहीं थी। वह कहीं और चली गई थी। मेरी दिलचस्पी इस वक़्त इस खूबसूरत सूर्यास्त से ज़्यादा उस दुनिया को जानने में थी, जिसमें ली-वान एक बटन दबाने से चली जाती है। मैं देर तक उसे देखता रहा। उसका चेहरा ऊपर आते वक़्त जितना बच्चों-सा लग रहा था। इस वक़्त वह उतना ही उम्रदराज़ दिख रही थी। मैंने उस आदमी को देखा जो हमें वहाँ से निकलने का इशारा कर रहा था। मैंने धीरे से ली-वान से कहा, "सुनो, हमें अब चलना चाहिए।" वह

वापिस आ गई। चेहरे पर एक दयनीय मुस्कुराहट लिए, जैसी बच्चों के चेहरों पर होती है, जब वे कोई चोरी करने के बाद रंगे हाथों पकड़े जाते हैं।

हम नदी के एक पुल से दूसरे पुल और दूसरे पुल से पता नहीं किन गलियों में भटक रहे थे।

“तुम अकेले क्यों घूमते हो?” उसने पूछा।

“मुझे अच्छा लगता है।” मैंने कहा।

“सच बताओ?”

“मैं बहुत ही बोरिंग ट्रेवल करता हूँ। अगर कोई और मेरे साथ घूमेगा तो वह मुझे छोड़कर भाग जाएगा।”

“मैं मुख्य कारण जानना चाहती हूँ।”

“मुख्य तो मुझे नहीं पता, पर शायद मेरे पैरों में भँवर हैं।” वह हँस दी। मुझे लगा इस वक़्त मेरी माँ क्या कहती हैं, वह बोलना ठीक नहीं होगा। सो मैंने कुछ और कहा, “मुझे मेरे सपनों में भी मैं अकेले घूमता हुआ दिखता था। मैं हर उस चित्र और हर उस फ़िल्म की तरफ़ आकर्षित हो जाता हूँ, जहाँ भी मुझे किसी अकेले व्यक्ति की कहानी दिखती है। मैं एक फ़िक्शन-सा संसार अपने अगल-बग़ल बुनता हूँ, जैसे मकड़ी अपना जाला बुनती है। उस संसार में खुद ही फँसे हुए मुझे बहुत आनंद आता है।”

मैं ली-वान को अच्छा जवाब देना चाहता था, पर झूठ कुछ भी नहीं। चाहता था कि वह जवाब कम से कम मनोरंजक तो हो, पर बिना झूठ का तड़का डाले मैं अपने अकेले घूमने को उसके लिए मनोरंजक नहीं बना सकता था। सो जैसा कुछ मेरे दिमाग़ में उस वक़्त आया मैं कहता गया। उसने मेरी बात का जवाब नहीं दिया। कुछ देर बाद उसने कहा, “मेरी दादी मुझसे पूछती है कि क्यों अकेले घूमती हो। मैं उन्हें जो भी जवाब देती हूँ, मुझे लगता है कि वह झूठा है। मैं खुद बहुत देशों में अकेले जाती हूँ, इसलिए भी कि मेरा काम बहुत रिसर्च का है। पर ऐसे भी मैं अकेले ही घूमती हूँ। पर पूरी तरह नहीं बता सकती कि ठीक वजह क्या है? इसलिए सोचा तुम लेखक हो शायद तुम मुझे बता पाओ।”

मैंने मुस्कुरा दिया। उसने फ़ोन निकाला और कुछ तलाशने लगी।

“क्या हुआ?” मैंने पूछा।

“तुम पीते हो न?”

“हाँ।”

“मैं सोच रही थी कहीं वाइन लेकर हम नदी किनारे बैठकर पीते हैं, तुम्हें कोई एतराज़ तो नहीं है?”

“मुझे क्यों होगा एतराज़... चलो।”

“मैं देख रही हूँ कि कोई स्टोर खुला हो तो हम वहाँ से वाइन ले लेंगे, बहुत सस्ती पड़ेगी।”

नौ बज चुका था और सारे स्टोर बंद हो गए थे। हम दोनों ने सोचा कि काश हमें पहले पता होता तो हम पहले ही वाइन ख़रीद लेते।

“मेरे घर पर बहुत वाइन है, चलकर एक उठा लें?”

“चलो...” कुछ दूर आगे चलकर वह रुक गई।

“नहीं घर नहीं। चलो मैं तुम्हें मेरी एक पसंदीदा जगह ले चलती हूँ।”

मैंने कहा कि ठीक है और हम दोनों नदी पार करके दूसरी तरफ़ चलने लगे। पूरा शहर जवान लोगों के नशे में डोल रहा था। हर कोने में प्रेमी जोड़े अपनी वाइन और बियर के साथ दिख जाते। सड़कों पर लोग नाच रहे थे। हर कैफ़े के बाहर एक मस्ती का माहौल था। मैंने अपनी यात्रा में बाहर रातें बहुत कम ही बिताई हैं। इस वक़्त इस अनुभव के लिए मैं ली-वान को धन्यवाद देना चाह रहा था, पर किसी भी तरह से धन्यवाद बड़ा ही अजीब सुनाई देता सो मैं अपनी मुस्कुराहट में चुप ही रहा। तभी मेरे पब्लिशर का मैसेज आया कि आपकी कहानी मिली है, आज पढ़ूँगा। तभी ली-वान ने मुझे हिंदी में टाइप करते देखा और वह उन अक्षरों को देर तक देखने लगी। मैंने उसका नाम हिंदी में टाइप किया उसे दिखाया, उसे बहुत सुंदर लगा। इस बात पर मैंने खुद को थोड़ा असहज पाया। अचानक कैथरीन याद हो आई। मैंने तुरंत फ़ोन अंदर रख दिया।

हम चलते हुए, नदी में खड़े एक बोट कैफ़े में पहुँचे। यह ली-वान की पसंदीदा जगह थी। वह बहुत उत्साहित थी। मैं इस बोट कैफ़े में पहले दिन ही आया था और यहीं बैठकर अपनी कहानी ‘नादान’ पूरी की थी। मैंने यह बात उसे नहीं बताई। वह लोगों से भरा हुआ था। ली-वान ने कहा, “चलो पीछे की तरफ़ चलते हैं। वह हिस्सा ज़्यादा खूबसूरत है। उसके बारे में बहुत कम लोगों को पता है।” बोट के पीछे की तरफ़ कम जगह थी, पर कुर्सी और टेबल लगे हुए थे। हम नदी पर बैठे हुए सामने Strasbourg के गिरजे को देख सकते थे। बहुत खूबसूरत जगह थी। कुछ देर में ली-वान एक वाइन की पूरी बोतल ले आई।

“यह वाइन Strasbourg के ही पास में बनाई जाती है और मुझे बेहद पसंद है।”

हम दोनों के हाथों में वाइन का गिलास था और पैर बोट की रेलिंग से बाहर नदी की तरफ़ लटके हुए थे। मुझे लगा कि यह किसी फ्रेंच फ़िल्म का सीन है। इस बात पर मुझे हँसी आ गई। “तुम्हें पता है कि मैं अपनी रिसर्च में एक सीरियन परिवार से मिली थी। वह जैसे-तैसे फ़्रांस में आ चुके थे। वह आदमी अब यहाँ एक सुपर मार्केट में सामान ढोता है। उसने मुझे अपने घर की तस्वीरें दिखाई थीं। वह सीरिया के बहुत समृद्ध परिवार का हिस्सा थे। यहाँ की न तो उन्हें भाषा पता है, न ही यहाँ के संस्कार उन्हें समझ में आते हैं; इसलिए जो काम मेहनत का है, वह उन्होंने ले लिया। बहुत अजीब लगता है इस वक़्त उनको देखकर। वह कहते हैं कि मेरा ये देश नहीं है... ये सारे लोग मेरे नहीं हैं... पराए घर में मैं महज़ एक नौकर हूँ। पर मेरी मुझे चिंता नहीं है यहाँ, बच्चों को ज़्यादा अच्छा भविष्य मिलेगा, मैं बस इसलिए काम कर रहा हूँ। तुम्हें पता है जब मैंने बच्चों से बात की तो वे मुझसे पूछने लगे कि 1980 में फ़्रांस के ये कौन राजा थे, चर्च का इतिहास और यीशू की बातें। मैं उनका चेहरा देख रही थी। वे सीरिया से भागकर आए थे और अब उन्हें कितना ज़्यादा वक़्त अभी और लगेगा फ्रेंच होना समझने में और पता नहीं तब हालात क्या हों?”

मैं उसे देखता रहा। एक चाइनीज़ लड़की जो फ़्रांस में अकेले रहकर रिसर्च कर रही है और सीरिया की क्राइसिस को लेकर इतनी चिंतित है और सीरियन बच्चों के लिए कुछ

करना चाहती है। मुझे नहीं पता कि इस वक़्त मैं उससे क्या कहूँ जो उसे अच्छा लगे। मैं असल में बस उसे सुनना ही चाहता हूँ। आसमान में इस वक़्त गहरे बादलों की लकीर-सी फैली हुई थी, जो इस वक़्त पूरे माहौल को बहुत भारी कर रही थी। मैं सामने पड़े गिरजे के अक्स को पानी में हिलते हुए देखने लगा। उसने कहा, “तुमने देखा है न कि फ़्रांस में लाइफ़ कितनी महफ़ूज़ है! लोग कितना ज़्यादा खुश हैं, सुखी हैं! मैं पेरिस के एक बहुत पुराने थिएटर में गई थी एक फ़िल्म देखने जो लेबनान के एक बच्चे के ऊपर थी। पीड़ा से भरी हुई उस फ़िल्म में उस बच्चे के संघर्ष को दिखाया गया था। फ़िल्म ख़त्म होने पर सारे बुर्जुआ फ़्रेंच लोग अपने वाइन का गिलास हाथ में लिए फ़िल्म की तारीफ़ करने लगे। मैं कोने में खड़े होकर इतना ज़्यादा खुश थी कि मैं सितंबर में लेबनान जा रही हूँ और पूरी कोशिश करूँगी कि सीरिया में घुस सकूँ। मैं कुछ कर रही हूँ इनके लिए। छोटी-सी कोशिश ही सही, शायद एक परिवार के एक बच्चे की कुछ मदद कर सकूँ, इतना भी काफ़ी है। जब मैं अपनी रिसर्च में होती हूँ तो यहाँ की सुविधाओं में रहने का गिल्ट खाए रहता है। पर ठीक है कि मैं कोशिश कर रही हूँ। जल्द ही मैं लेबनान में होऊँगी।”

“तुम अपने काम में कितनी डूबी हुई हो, यह देखकर बहुत रश्क होता है।”

“मुझे बहुत पसंद है मेरा काम।”

“दिखता है।”

“मेरे घरवालों को नहीं दिखता है। उन्हें बस यह अच्छा लगता है कि मैं फ़्रांस में हूँ और पीएचडी कर रही हूँ।”

“तुम कितनी भाषाएँ बोल लेती हो?”

“जर्मन, फ़्रेंच, स्पैनिश, चाइनीज़, केटोनीज़, अँग्रेज़ी और थोड़ी एरेबिक...”

“कितना सुंदर है ये!”

“तुम कोशिश करो तो तुम्हें भी आ जाएगी।”

“नहीं... इस जनम में तो मुमकिन नहीं है। मैं इस मामले में आलसी होने के साथ-साथ मूढ़ भी हूँ।”

वह कुछ देर मुझे देखती रही। मैं थोड़ा असहज हुआ और चारों तरफ़ फैले शहर को देखने लगा।

“तुम्हें लगता है कि मैं पेसिमिस्टिक हूँ?” उसने पूछा।

“मेरे एक पसंदीदा दार्शनिक का कहना है कि पेसिमिस्ट के पैर कम-से-कम ज़मीन पर अच्छे से जमे तो रहते हैं। वह किसी मुग़ालते में नहीं जीता है।” वह मुस्कुरा दी।

नशा अपना असर दिखाने लगा था। वाइन अच्छी होने के साथ-साथ बहुत स्ट्रांग भी थी।

मुझे पानी के आस-पास कितना सहज लगता है! होशंगाबाद की नदी का किनारा भी रातों में कितना चुप हुआ करता था! मैंने कई रातें वहाँ अकेले नदी से बातें करते गुज़ारी हैं। क्या इसको पता है कि मैं होशंगाबाद से हूँ? कश्मीर कितना खूबसूरत है? क्या मैं इससे अपने नदी को सुनाए सपनों की बात कर सकता हूँ? क्या मैं इसे कह सकता हूँ कि मैं अभी बहुत बच्चा हूँ। मुझे असल में बहुत सारी चीज़ें समझ में नहीं आती हैं। मैं जो भी कर रहा हूँ

जीवन में, उसके ठोस कारण नहीं हैं मेरे पास। मैं अकेलेपन में अकेलापन तलाशता हूँ। दूर एक रौशनी दिखती है और मैं अपने अँधेरों को चीरता हुआ लगातार उस तरफ़ भागता रहता हूँ। मुझे कभी-कभी सारा कुछ अंत में थका देने वाला चुटकुला लगता है। मैं उस सबसे भागता हूँ, जो थोड़ा भी बाँधता है। मैं बहुत कमज़ोर हूँ। कायर हूँ। फिर लगा कि क्या मैं इसके बारे में कुछ भी जानता हूँ? मुझे नहीं पता कि वह क्यों बीच में चुप हो जाती है? क्यों अपने घरवालों की बातें नहीं करती है? क्यों घर पर वाइन उठाने से पहले उसने वहाँ न जाना तय किया? क्यों वह अंजान आदमियों को बहुत संदेह से देखती है? और हम इस वक़्त क्या कर रहे हैं?

मुझे बस इतना ही पता है कि वह चाइना के एक मध्यवर्गीय परिवार से यहाँ है और मैं भटकता हुआ यहाँ हूँ और हम अभी एक-दूसरे को थोड़ा-सा जानते हैं—बहुत थोड़ा-सा। कुछ देर की चुप्पी में मैं अचानक गुनगुनाने लगा। उसने कहा कि क्या गाना है ये। मैंने कहा कि एक पुराना गाना है, सुनाता हूँ, “न जाने क्यों होता है ये ज़िंदगी के साथ...” यह वाइन का नशा था कि मुझे मेरी आवाज़ बहुत अच्छी लग रही थी। मैं गाता गया और उस गाने के बाद दूसरा गाना फिर तीसरा। एक अजीब-सी खुशी थी जिसका मुझे अंदाज़ नहीं था कि वह किस बात की है?

वाइन की बोटल ख़त्म हो चुकी थी। हम दोनों खासे खुश थे। बातें आपसी खुशियों की होने लगीं। कैसे बहुत छोटी चीज़ कितनी ज़्यादा खुशी देती है। वह बीच-बीच में चुप हो जाया करती थी, पर उसकी हँसी में एक मुक्तता थी जो बहुत अच्छी थी।

“कभी-कभी लगता है कि एक बार अपनी दादी को ले जाऊँ हर जगह, जिन जगहों पर वह कभी नहीं गई है और दिखाऊँ कि दुनिया कितनी खूबसूरत है और लोग असल में कितने अच्छे हैं या कम से कम उन्हें यह तो पता लगे कि मैं करती क्या हूँ? शादी के अलावा भी लड़कियाँ कुछ कर सकती हैं, यह बात अपने घरवालों को समझाना एक टास्क है।”

यह कहते हुए वह भीतर से गुस्सा थी।

“तुम्हें जो खुशी देता है, वह तुम कर पा रही हो, यह क्या कम है?”

“हाँ। इस मामले में मेरे घरवाले बहुत अच्छे हैं। वह मुझे रोकते-टोकते नहीं हैं।”

“तुम बहुत लकी हो।”

“तुम्हें ऐसा लगता है?”

“एक भारतीय की निगाह से तो तुम बहुत-बहुत-बहुत ज़्यादा लकी हो।”

वह फिर हँसने लगी।

“मैं एक दिन इंडिया आऊँगी, पर थोड़ी हिंदी सीखने के बाद।”

“इंडिया आपका स्वागत करेगा।”

मैंने वक़्त देखा रात के एक बज रहे थे।

“मैं आज तक फ़्रांस में इतना देर तक बाहर नहीं रहा हूँ।”

“चलो मुझे भी सुबह कॉलेज पहुँचना है।”

हम दोनों वहाँ से निकले और चलते हुए ब्रिज तक पहुँचे।

“मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ देता हूँ फिर मैं टहलता हुआ निकल जाऊँगा।”

“ठीक है। सुनो वह मेरा जो हिंदी में नाम है, वह मुझे भेज दो।”

“तुम्हारा नंबर?”

उसने नंबर दिया मैंने उसे उसका नाम लिखकर उसे भेज दिया। चलते हुए वह अपने नाम को देर तक निहार रही थी। कुछ देर में हम ऐसे इलाके से गुज़रे, जहाँ बहुत सारे पब थे और बहुत भीड़ थी चारों तरफ़।

“तुम्हें पता है कि मैं सामाजिक विज्ञान की छात्र हूँ और असल में मुझे ऐसा लगता है कि जैसे ही लोग शादी करते हैं, वह एक बाज़ार की साज़िश का शिकार हो जाते हैं। बच्चे होने के बाद वह बाज़ार के बने बनाए एक ढाँचे में घुसते हैं और उन्हें वही करना होता है जो समाज उन्हें कहता है कि यह सही है और यह ग़लत। प्रश्न करते ही वे उस व्यवस्था को चैलेंज करते हैं, जिसके भीतर वे गले तक डूबे हुए हैं। यह बहुत अद्भुत है कि हम इंसानों ने कैसे बाज़ार के सामने घुटने टेक दिए हैं और समाजशास्त्र कोई दूसरा जीने का तरीका जो एक सभ्य समाज को भी बनाए रखे, खोजने में नाकाम रहा है।”

मैं इसका जवाब देने ही वाला था कि वह रुक गई। मैं बोलते हुए थोड़ा आगे बढ़ा, पर वह वहीं खड़ी रही। मैं चुप हो गया और पूछा, “क्या हुआ?”

“मेरा घर पास में ही है। मैं यहाँ से चली जाऊँगी।”

“ओह! हाँ ठीक है। मैं सीधा जाता हूँ। मुझे गिरजा सामने दिख रहा है। उसके पीछे मैं रहता हूँ।”

“ठीक है।”

“बहुत धन्यवाद मुझसे मिलने के लिए।”

वह मुझे देखती रही। मैं जाने लगा तो उसने पीछे से कहा, “मैं कभी किसी इंडियन से नहीं मिली हूँ इस तरह। धन्यवाद...”

मैंने मुस्कुरा दिया।

“और मैंने किसी इंडियन को कभी kiss भी नहीं किया है!”

मैं उससे कुछ दूरी पर खड़ा था। इस बात का मतलब मैं क्या निकालूँ, मेरी समझ से परे था, सो मैं चुपचाप वहीं खड़ा रहा। हम दोनों एक-दूसरे को देख रहे थे। ये सब असहज होने ही लगा था कि वह चलती हुई मेरे पास आई और हम दोनों ने एक-दूसरे को चूमा। मैंने अपनी आँखें बंद कर ली थीं। पूरा शहर मोम की तरह पिघल गया। अगल-बगल से आती आवाज़ें भी अब ली-वान की थीं। ये शहर भी वही थी। इसकी सारी नदियाँ भी वही थी।

सुना है Strasbourg में हर ब्रिज की अपनी अलग कहानी है, अपना आर्किटेक्चर है, सबका अपना अलग समय है। जिस ब्रिज को इस वक़्त दो बजे रात मैं मुस्कुराता हुआ पार कर रहा था, अब उसकी और मेरी भी अपनी कहानी है, अपनी संरचना है और अपना अलग वक़्त है—सबसे जुदा।

सुबह बहुत देर से हुई। मैं बिस्तर पर ही पड़ा रहा बहुत देर तक। आज के दिन मैं बहुत खुला हुआ महसूस कर रहा था। अब इसके ठीक अर्थ क्या हैं, ये मैं भी नहीं जानता था। आज मुझे म्यूज़ियम जाना है, यह तय करके मैंने बिस्तर छोड़ा।

सुबह की अपनी कॉफ़ी और Croissant के बाद मैं Strasbourg Museum of Contemporary Art की तरफ़ चल दिया। कई बार इसके अगल-बग़ल से निकला था, कुछ चीज़ें ज़हन में खटकती रहती हैं कि अगर चूक गया तो अजीब-सी टीस रह जाएगी।

म्यूज़ियम में घुसते ही सबसे पहले मेरा परिचय Damien Deroubaix के काम से हुआ। उनके काम में बहुत पीड़ा और घनघोर अँधेरे में मुक्ति का सेलिब्रेशन दिखते हैं। उनकी कलाकृतियों पर पुराने ट्रेडिशन की छाप है जो बहुत निजी प्रतीत होती हैं।

दूसरे जिस काम को इस म्यूज़ियम में दिखाया जा रहा था, वह थे Christian Hincker, जिन्हें लोग Blutch के नाम से जानते हैं, जो फ्रेंच कार्टूनिस्ट हैं। इन दो लोगों के काम को देखने के बाद एक थकान हुई तो सोचा कि एक कॉफ़ी पीकर बाक़ी काम देखूँगा, पर किसी कारण से म्यूज़ियम का कैफ़े बंद था। सो बाक़ी काम में मैं अपनी शिरकत पूरी नहीं दे पाया।

मैंने जो यात्राएँ इससे पहले की हैं, अब बहुत अखरता है कि उन्हें मैंने दर्ज क्यों नहीं किया? इसे दर्ज करते वक़्त एक संवाद चल रहा होता है जो इस पूरी यात्रा को एक अलग शक़ल दे देता है। जितना यात्रा करने में सुख है, उतना ही इस यात्रा के बारीक असर को इस वृत्तांत में लिखकर महसूस करने में भी है। एक तरह से एक ही यात्रा में दो यात्राएँ चल रही हैं। अपने यात्रा-वृत्तांत को पढ़ते हुए लगा कि यह किस क़दर एक कहानी की तरह सुनाई दे रहा है। बस इसमें कहानी लिखने की जोड़-तोड़ नहीं है। यह अपनी सारी ख़ामी के साथ जैसा-का-तैसा है। मैं इसे क़तई काटना-छाँटना भी नहीं चाहता हूँ। यात्राएँ ऐसी ही होती हैं। कुछ दिन बहुत अच्छे जाते हैं और कई दिनों आपको पता नहीं चलता कि आप असल में कर क्या रहे हैं? मैं इन यात्राओं में कई दफ़े एकदम बदहवास-सा शहर को बस ताक़ रहा था और भीतर सारा कुछ शून्य था। ये सघन ख़ालीपन भी यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। मैंने इसे भी पूरी कोशिशों के साथ दर्ज किया है। मुझे यकीन है कि कई सालों बाद जब मैं इसे पढ़ रहा होऊँगा, तब मुझे लगेगा कि मैंने एक कहानी लिखी है... क्योंकि अंत में, लेखक के हाथों में पहुँचते ही सारा निजी भी काल्पनिक हो जाता है। मैंने अपनी कल्पनाओं को भी बहुत नए ढंग से समझा है यहाँ। उनकी उड़ान में कहीं भी पहुँचने की अब जल्दी नहीं है। उनकी उड़ान में मैंने एक तरह की स्थिरता महसूस की है और यह मेरे साथ पहली बार हुआ है।

इस वक़्त भी जब मैं यह लिख रहा हूँ, मेरे चारों तरफ़ फ्रेंच और जर्मन लोग बैठे बातें कर रहे हैं। उनके संवाद जो अब संगीत हो चुके हैं मेरे लिए।

Café Dreher शहर के बड़े गिरजे के पास है। इस शहर में रहने वाले धीरे-धीरे अपनी पहली कॉफ़ी के लिए यहाँ इकट्ठा हो रहे हैं। कुछ लोग अकेले से एक कोने में अपनी कॉफ़ी लिए चुप हैं। उनकी आँखों में पूरे दिन का हिसाब-किताब देखा जा सकता है। युवा लोगों की दुनिया में कभी न ख़त्म होने वाले जीवन-सी ऊर्जा है। यहाँ के बूढ़े लोगों

को देखने में बहुत सुख है। उनका अपनी पहली कॉफी पीना भी मुझे प्रेम लगता है। उनके पास बहुत वक्त है। उन्हें कहीं जाना नहीं है। वह देर तक चिड़िया का अगल-बगल होना देखते रहते हैं। मुझे उनके भीतर चल रही हर हरकत बेहद पसंद आती है और अगर वह भीतर घट रही किसी बात पर मुस्कुराते हैं तो उनसे खूबसूरत और कुछ नहीं होता। उनकी स्थिरता में एक नाटक है, कहानी है। वह अपने साथ अपना पूरा जीवन लिए कॉफी पीते हैं।

मेरी सुबह की दो कॉफी हो चुकी थीं। आज आखिरी दिन में कुछ भी नहीं करना चाहता हूँ। मैं टहलना चाहता हूँ इस शहर में, ऐसे जैसे पूरे बीते शहरों में टहल रहा हूँ। कुछ कोनों में जाकर देर तक लोगों का आना-जाना देखना चाहता हूँ। फिर कब इस तरफ़ आना होगा पता नहीं।

Martine का एक मैसेज आया, “क्या तुम एक छोटी फ़ोटो की प्रदर्शनी में आना चाहोगे? उसके बाद हम ड्रिक्स कर सकते हैं।” मैं अपनी आखिरी शाम लिखना चाह रहा था, पर फिर वही संवाद शुरू हुए कि जीना और लिखना। दोनों में इस वक्त महत्वपूर्ण क्या है। मैंने तय किया कि आखिरी दिन है। मैं जीना चाहता हूँ।

फ़ोटो प्रदर्शनी छात्रों की थी, La Chambre नाम की छोटी-सी आर्ट गैलरी में। कुछ तस्वीरें बहुत उम्दा थीं। फिर Martine के कुछ दोस्तों के साथ मैं उस अड्डे पर गया, जहाँ वे लोग बैठा करते हैं। Martine और उनकी दोस्त इतने सारे लोगों को जानते थे। मुझे बहुत अच्छा लगा कि ये एकदम से मैं ऐसी जगह आ पहुँचा हूँ, जहाँ यहाँ के लोकल लोग बैठते हैं। हम तीन लोग उस कैफ़े में आए थे, पर जब तक हम लोग बैठे तब तक सात लोग टेबल पर हो चुके थे। बियर ऑर्डर की गई और हँसी ठहाकों का माहौल शुरू हो गया। Martine जितनी कोशिश हो सके, दोस्तों के बीच हुई बातचीत को मुझे ट्रांसलेट करके बता रही थी और मैं हर बात पर बहुत देर बाद हँस रहा होता था। मेरी हँसी सुनकर बाक़ी लोग फिर हँसते और Martine उन्हें बताती कि यह दस मिनट पहले वाली बात पर हँस रहा है। मैंने Martine से कहा कि रहने दे, मुझे अच्छा लग रहा है फ्रेंच सुनने में। अंत में Martine की कुछ दोस्त रह गई जो उनकी ही उम्र की थीं। एक टीचर थीं, एक फ़ोटोग्राफ़र और एक महिला जो थोड़ी अँग्रेज़ी बोल लेती थीं, वे यहाँ के सरकारी ऑफ़िस में काम करती थीं।

इस ज़िंदादिल माहौल में मैं बहुत खुश था। आखिरी दिन बहुत अजीब होता है। आप दिमागी रूप से अपनी यात्रा खत्म कर चुके होते हैं। शहर भी छूटा हुआ लगता है। इस माहौल ने मेरे भीतर उठ रही उदासी को Martine और उसकी दोस्तों ने पूरी तरह से खत्म कर दिया था। जब महफ़िल खत्म हुई तो मैंने Martine को बहुत धन्यवाद कहा।

मैंने वक्त देखा तो नौ बज चुके थे। ली-वान का मैसेज बहुत पहले आया था, उसे क्या जवाब दूँ के चक्कर में और देर हो गई। फिर मैंने उससे माफ़ी माँगी और कहा, “अब हमारी मुलाक़ात कहीं और होगी शायद। तुम्हारे जीवन और रिसर्च के लिए शुभकामनाएँ।” उसका कोई जवाब नहीं आया। मैं रेंगते हुए अपने कमरे पर पहुँचा। पूरा कमरा मेरी यात्रा के बिखरेपन का गवाह था। लगभग सारा सामान सूटकेस के बाहर था। मैंने धीरे-धीरे

अपनी बिखरी हुई यात्रा को समेटना शुरू किया। बगल के कमरे से मोज़ार्ट की एक धुन सुनाई दे रही थी। ल्युडो जो कि इस घर का मालिक था (Air bnb का होस्ट) उससे मेरी मुलाकात बस आते-जाते ही एक-दो बार हुई थी। मैं मोज़ार्ट सुनता हुआ उसके कमरे की तरफ़ बढ़ा। उसके कमरे के दरवाज़े पर खड़ा होकर, मैं उसे प्यानो पर रियाज़ करते देख रहा था। उसका पार्टनर कमिलो पलंग पर बैठा अपने लैपटॉप पर उस कंपोज़ीशन के बारे में पढ़ रहा था। मेरी उपस्थिति देखकर उसने बजाना बंद किया। मैंने बहुत गुज़ारिश की कि वह बजाता रहे, पर वह अब उठ चुका था। कमिलो और ल्युडो के बीच बहुत खूबसूरत प्रेम था। मैंने उन दोनों को कई बार साथ खाना बनाते हुए देखा था। उन दोनों के प्रेम में उनकी उम्र का पागलपन था। ल्युडो ने पूछा कि क्या कल सुबह आपके जाने से पहले हम ब्रेकफ़ास्ट कर सकते हैं साथ में? मैंने कहा कि सुबह मैं इस शहर के साथ वक़्त बिताना चाहता हूँ, पर देखते हैं।

अपने बिखरेपन को समेटने के बाद मैं देर तक अपने बिस्तर पर पड़ा रहा। किसी भी चीज़ के ख़त्म हो जाने को हम कैसे भी रोक नहीं सकते। कितने सालों पुराने ये सपने थे इस तरह यात्रा को करने के। अभी भी लगता है कि कितना कम ही घूम पाता हूँ। मेरी आँखें बंद हो ही रही थीं कि बहुत पीड़ा से भरी हुई वायलिन की धुन सुनाई दी। मैं उठकर बैठ गया। खिड़की खोली तो नीचे की सड़क पर एक आदमी सुंदर वायलिन बजा रहा था। मैं एक बियर लेकर अपनी खिड़की पर आ गया। ठीक इस वक़्त मैं लिखना चाहता हूँ। इतनी प्रबल इच्छा था कि बस लिखता चलूँ। उन सारी उदासियों के बारे में जिनमें मैं छूटा जा रहा था सब जगहों से। सोचा ली-वान से मिल लेना चाहिए था। कैथरीन से मिलने Geneva चले जाना चाहिए था। जंग-हे के साथ स्काइप पर उससे बात कर लेनी चाहिए थी और पता नहीं क्या-क्या कर लेना चाहिए था। बदहवास-सा मैं अपने बिस्तर पर पसर गया। खिड़की से आती ठंडी हवा में वायलिन की धुन काँप रही थी। सड़क के लैंप का उजाला Attic के रौशनदानों से भीतर घुस आया था। उस उजाले से जो आकृतियाँ दीवारों पर बन रही थीं, उसमें मैं देर तक वह देखता रहा जो मैं हो सकता था। एक अच्छा इंसान, एक अच्छा बेटा, एक अच्छा प्रेमी, एक अच्छा यात्री।

रात सपने में कैथरीन आई। मैं और वह Granada, Spain में थे और वहाँ की गलियों में भारतीय खाना तलाश रहे थे। उसने सफ़ेद लंबा सुंदर गाउन पहना था, जिसमें बड़े-बड़े नीले फूल बने हुए थे—वॉन गॉग की पेंटिंग जैसे। हवा चलती और उसका गाउन उड़ते हुए बड़ा होता जाता। नीले फूल ज़मीन पर गिरते जाते। फिर मैंने खुद को किसी कैफ़े के किचेन में पाया। मैं कैथरीन के लिए कुछ भारतीय खाना बना रहा था और वह बाहर रेस्ट्रॉ में अकले बैठे मेरा इंतज़ार कर रही थी। मैं बुरी तरह खाना बनाने में व्यस्त था, पर जो भी बनाता, वह या तो छलक जाता, या कभी गिर जाता, या कभी गैस बंद हो जाती... मैं फिर से, शुरू से बनाने की कोशिश करता। कैथरीन बार-बार घड़ी देखती और मेरे इंतज़ार में कैफ़े के बाहर वाले दरवाज़े की तरफ़ देखती। मैं उसे कहना चाहता कि मैं यहाँ किचेन में कुछ बना रहा हूँ तुम्हारे लिए, पर खाना बनाने की व्यस्तता में मैं उसे यह कह नहीं पा रहा था। जब खाना बनकर तैयार ही हुआ था कि कड़की से भगोना फिसलकर नीचे गिर गया।

मैंने कैफ़े की तरफ़ देखा, वहाँ कैथरीन नहीं थी। खाली कुर्सी के चारों तरफ़ पर्यटक बैठ हुए, उस खाली कुर्सी की तस्वीरें खींच रहे थे।

मैं पसीने में उठा। वक्रत देखा तो सात बज रहा था। सूरज चमकता हुआ भीतर घुस चुका था। बारह-पचास की बस थी Frankfurt की। मुझे लगा मेरे पास बिल्कुल भी वक्रत नहीं है। कुछ बचा है? कोई है जिससे मुझे मिलना है? यह शहर मेरा इंतज़ार कर रहा है और मैं सो रहा हूँ। मैं हबड़-दबड़ में तैयार हुआ और तुरंत बाहर आ गया। शनिवार की सुबह एकदम खाली थी। सामने बच्चों के स्कूल की चहल-पहल भी गुम थी। मुझे लगा कि मैं किसी नए शहर में हूँ। यह Strasbourg नहीं है। मैं चलता हुआ अपनी परिचित जगहों पर पहुँचा। वहाँ भी परिचय के सारे निशान गायब थे। मैं नहीं था यहाँ कभी। मैं एक गली में चलते हुए बैठ गया। एक सिगरेट जलाई और कई हज़ार साल पुराने गिरजे को देर तक ताकता रहा। मैं कैसे इसे रोक सकता हूँ? इस यात्रा को ख़त्म होने से? क्या मेरे घूमने का कोई मतलब नहीं था? कहीं कुछ भी पकड़ में क्यों नहीं आ रहा है? क्या यह बस एक स्वप्न था जो ख़त्म हो चुका है? मैं और घूमना चाह रहा था। कितनी जगहें अभी बाक़ी हैं? कितने छोटे गाँवों में, जाने कितने अंजान लोग हैं, जिनसे देर तक बतियाया जा सकता है। टीस इस बात की भी थी कि मेरे इतने दिनों की यात्रा का कोई साक्षी भी नहीं था जिससे मैं जाकर पूछता कि क्या सच में हम इन सारी जगहों पर गए थे? क्यों सारा कुछ एक लंबे सपने-सा लग रहा है? तभी एक बूढ़ा आदमी आया सिगरेट माँगने। मैंने उसे एक सिगरेट दी और वहाँ से अपने पसंदीदा कैफ़े की तरफ़ निकल आया। कॉफ़ी और Croissant। यह वही कैफ़े है, जहाँ मैं पहले दिन आकर बैठा था, जहाँ ली-वान मुझे लेकर आई थी। मैं पीछे की तरफ़ बैठा, जहाँ ली-वान और मैं बैठे थे। सुबह के उजाले में सारा कुछ एकदम साफ़ दिख रहा था—साफ़ पानी, साफ़ गिरजा और साफ़-सुथरा यह पूरा शहर।

मैं अपनी कॉफ़ी के साथ सुन्न-सा इस शहर को ताक रहा था, मानो अपने घर में बैठे हुए कोई फ़िल्म देख रहा हूँ। मैं वहाँ नहीं था। मुझे लगा मेरी साँसें बदल रही हैं। मेरी यात्रा की उत्सुकता शून्य हो चुकी है। मैं रुक गया हूँ। यात्रा ख़त्म हो चुकी है। मैं लैपटॉप खोलकर अपनी यात्रा के वृत्तांत को लिखना चाहा, पर एक शब्द भी नहीं लिख पाया। सारा कुछ खाली हो चुका था। मैं कैथरीन को याद करने लगा, पर बहुत कोशिशों के बाद मुझे सिर्फ़ उसकी आँखें याद आईं। तो क्या सारा कुछ एक क्षणिक बुलबुले के समान था? ऐसा लगा कि किसी ने मेरे यात्रा के बुलबुले को फोड़ दिया है और अब जहाँ संवादों की बाढ़-सी लगी रहती थी, वहाँ महज़ कुछ शब्द कीचड़ में अपनी आखिरी साँसें ले रहे हैं।

मैं उस कॉफ़ी हाउस से उठकर पूरे शहर को आखिरी बार देखना चाह रहा था। शनिवार की इस सुबह सब कुछ मृत शांति लिए हुए था। मैं अपने चलने की आवाज़ सुन सकता था। एक धुँध छाई हुई थी पूरे शहर पर। मैं पराया था। मैं छूट चुका था। जिन गलियों में पहले दिन आकर मैं एक बच्चे-सा आँखें फाड़े मुस्कुरा रहा था, उन्हीं गलियों में मेरा सिर अपने कंधे पर लटका पड़ा था। मुझे लगा मैं किसी शहर के खंडहर में तैर रहा हूँ।

मुझसे यह सहा नहीं गया। मैं वापिस अपने कमरे पर आया और सामान पैक किया। ल्युडो और कमिलो को अपने हाथों से भारतीय चाय बनाकर पिलाई। उन दोनों के लिए मैं नाश्ता भी ले आया था। प्लेट में सजाकर उन्हें नाश्ता दिया और उन्हें विदा कहा।

अपने सूटकेस को घसीटते हुए मैं बस स्टॉप की तरफ़ रवाना हुआ। जाते हुए मैंने Strasbourg को पलटकर आखिरी बार देखा, मानो सामने आईना रखा हो।

मुंबई में कई बार अपने यात्रा-वृत्तांत को खोला, पर बिना यात्रा पर बने रहकर इसे छूना भी अजीब लगा। मैं अपने यात्रा-वृत्तांत को खत्म करने के लिए एक छोटी यात्रा की तलाश में था। इस बीच नैशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा, दिल्ली से न्यौता आया कि 'श्रुति' में आप अपना कुछ नया लिखा पढ़िए। मैंने तुरंत यह निवेदन स्वीकार किया।

मैंने नैशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा में अपने यात्रा-वृत्तांत के शुरुआती अंश पढ़े। सीने में अजीब-सी जलन महसूस हो रही थी, लगा मैं बाज़ार में खड़ा हूँ नंगा...। अपनी यात्रा के निजी कमज़ोर क्षणों को पढ़ते वक़्त लग रहा था कि मैं इन कोमल बातों की नुमाइश कर रहा हूँ। बीच में पढ़ते हुए लगा कि पता नहीं मुझे इसे पढ़ना चाहिए कि नहीं, पर जब मैंने अपना वृत्तांत खत्म किया और लोगों से बातचीत की तो उनके भीतर के उत्साह को देखकर लगा कि मेरा सारा निजी किस तरह उन सबके निज से मेल खाता है। हम सब कितने एक जैसे हैं। बहुत निजी भी क़तई निजी नहीं है।

अगली सुबह मैं ट्रेन पकड़कर पहाड़ों में आ गया। बिनसर में बैठे हुए जब भी अपने यात्रा-वृत्तांत पर आने की कोशिश की एक झिझक भीतर महसूस करता रहा। कई बार लैपटॉप खोलकर घंटों अपने लिखे को ताकता रहता। कुछ भी शब्द ठीक करने जाता तो हाथ काँपने लगते, लगता किसी पवित्र चीज़ को अपने छिछले लेखकीय जोड़-तोड़ से गंदा कर रहा हूँ। सो मैंने तय किया कि यात्रा-वृत्तांत जैसा का तैसा ही रहना चाहिए। उसमें किसी भी प्रकार का जोड़-तोड़ पूरी यात्रा को सुंदर कर देगा, जो असल में वह थी नहीं। सारा कुछ झूठ हो जाएगा जिसमें थकान, बोरियत, पीड़ा, अकेलेपन की जगह नहीं के बराबर होगी। बिनसर में बहुत कोशिशों के बावजूद कुछ भी लिख नहीं पाया। वहाँ से निकलकर मैं मुक्तेश्वर की तरफ़ आ गया। मेरे घर जैसी जगह—'सोना-पानी'। यहाँ पर मैंने जाने कितना काम किया है! दो फ़िल्में बनाई हैं, कई बारिशों में घंटों अपनी कहानियों के अधूरेपन को लिए टहलता रहा हूँ। कितने ही नाटक यहाँ लिखे हैं! सोचा यह सबसे सही जगह है, अपने यात्रा-वृत्तांत के अंत के लिए।

आज सुबह अपना पूरा यात्रा-वृत्तांत फिर से पढ़ा। अभी भी सारा कुछ इतना ताज़ा है कि हर सुबह लगता है कि मुझे अभी अपने कॉफ़ी और Croissant के लिए किसी अच्छे कैफ़े को तलाशना है। कुछ देर लगती है यह समझने में कि यात्रा बीत चुकी है... मानो किसी ने झंझोड़कर मुझे एक अच्छे सपने से उठा दिया हो।

जंग-हे ने मेरी दो कहानियाँ पढ़ी ली थीं। 'प्रेम-कबूतर' और 'शक्कर के पाँच दाने' दोनों कहानियों को लेकर उसने एक लंबा मैसेज लिखकर भेजा था। उसे कहानियाँ बहुत अच्छी लगीं। वह कह रही थी, "काश तुमसे मिलने से पहले मैंने कहानियाँ पढ़ी होतीं। मैंने तुम्हें बतौर लेखक पहली बार जाना है और अब लगता है कि मैं तुम्हें थोड़ा ज़्यादा जानती हूँ।" जंग-हे का मैसेज पढ़ते हुए लग रहा था कि मैं Basel के उनके घर के किचन में बैठा हूँ और वह कॉफी पीते हुए मुझसे बातें कर रही हैं। मेरी इच्छा हुई उनसे पूछने की कि क्या उन्होंने अपना कोरियन पासपोर्ट सरेंडर कर दिया है? पर मेरी हिम्मत नहीं हुई पूछने की। मैंने लिखा कि मैं Basel को, आपको बहुत मिस कर रहा हूँ... काश मैं कुछ दिन और रुक जाता। यह लिखते हुए मुझे लग रहा था कि पहली फ़्लाइट पकड़कर जंग-हे के पास चला जाऊँ और कई दिनों तक उनके साथ देर रात, Basel की सड़कों पर पैदल घूमता रहूँ। उन्होंने कहा कि मैं Chamonix जाना चाहती हूँ और वहीं उसी कमरे में रहना चाहती हूँ, जहाँ तुम रहे थे। मुझे उस घर का पता भेज दो। मैंने उन्हें वह पता भेजा। कुछ वक़्त बाद उनका जवाब आया कि असल में यह पता उसे चाहिए। वह Chamonix में उस घर में रहना चाहती है, जहाँ तुम रहे हो। मैं चुप हो गया। कुछ देर में मैंने जंग-हे को मैसेज किया कि उसे बहुत अच्छा लगेगा Chamonix.

कैथरीन और मेरे बीच संवाद पूरी तरह खत्म हो चुका था। उसने आखिरी बार मुझे मैसेज करके पूछा था कि क्या तुम भारत वापिस चले गए हो? मैंने एक शब्द में जवाब दिया था, "हाँ।" फिर उसने एक दुखी और एक मुस्कुराते हुए चेहरे का इमोजी भेजा, जिसे मैंने अभी तक सँभालकर रखा है। किस तरह सब अपनी कहानी में होते हैं और जब किसी चौराहों पर दो कहानियाँ क्रास करती हैं तो जीने का रंग बदल जाता है। सारा स्याह, हरा दिखने लगता है। एक उम्र के बाद आपको पता चलता है कि कितना महत्वपूर्ण है इस हरे को बचाए रखना। मैं इस यात्रा में पूरा हरा होकर आया था। आशा है कई पतझड़ों के बीच भी इस हरे को मैं बचाए रखूँगा।

मैंने अपने किसी एक नाटक में कहीं लिखा था कि मैं बूढ़ा होना चाहता हूँ। उसके असल अर्थ इस यात्रा-वृत्तांत में निहित हैं। बूढ़ा होना मेरे लिए बिना अपेक्षाओं के जीना है। उस स्थिति में पहुँचना है जिसमें किसी भी मोड़ से किसी भी तरह की कोई अपेक्षा न हो। बस वह स्थिति हो जिसमें जो जैसा है उसे वैसा का वैसा जिया जा सके—एकदम हल्के होकर। बिना उन खुश रहने वाले चित्रों के जो हमने अपने जिए में बटोरे हैं। बिना हिस्ट्री के, बिना बहुत इन्फ़ॉर्मेशन के... एक ऐसा जीवन जिसमें अगर मैं फिर से यात्रा करूँ तो इस यूरोप-यात्रा का उस पर कोई भी असर न हो।

यात्रा तो बहुत पहले खत्म हो चुकी है। अब यह जो भी है, बस उस यात्रा की कतरन है। पर उस यात्रा से इनका कोई संबंध नहीं है। कुछ सालों बाद जब मैं इसे पढ़ूँगा तो यह मुझे एक कहानी लगेगी, जिसका मुझसे भी बहुत संबंध नहीं होगा। इस जीने में भूल जाना और छोड़ देना कितना ज़रूरी है। शायद यात्रा-वृत्तांत लिखने का यह भी एक मक़सद था कि यह यात्रा बँट जाए सबमें और मेरे पास इसका सबसे कम हिस्सा रह जाए। एक भूली-

सी बात-सा जिसे कुछ ऐसे याद करूँ, मानो जैसे मैं जंग-हे और मेरी कोरियन दोस्त को कभी-कभी याद करता हूँ और चेहरे पर एक मुस्कराहट आ जाती है।

आप भी इस यात्रा को खत्म कर चुके हैं और मैं भी आज उत्तराखंड के आखिरी दिन इस यात्रा को आखिरी बार देख रहा हूँ (अपने पब्लिशर को भेजने से पहले)। अपने पास से इसे अलग करना अभी किसी बच्चे से खिलौना छीनने जैसा है।

ऐसा लग रहा है मानो मैंने एक ख्वाब देखा था, जिसे सुबह उठकर भूलने से ठीक पहले मैंने दर्ज कर लिया था। आखिरी बार अपने ख्वाब को पढ़ते वक़्त बार-बार लग रहा था कि क्या ये सब घटा था? या मेरी कल्पना में मैंने वह सारा कुछ लिखा, जैसा मैं घटित होते देखना चाहता था? मैं बहुत देर तक उस बिंदु को तलाशता रहा, जहाँ मैं पूरी ईमानदारी से कह सकूँ कि हाँ यह हिस्सा मैंने ही जिया था। कैथरीन शायद थी नहीं कभी, Chamonix के बर्फ़ीले पहाड़ शायद मेरे कश्मीर नहीं जा पाने की तड़प थे, जंग-हे के साथ सच जिया पर बहुत झूठ ओढ़े रहा, Annecy में एलेक्स ऑस्ट्रेलियन था या वो मेरा कोई पुराना छूट गया दोस्त था, क्या मैं मर्सीया के साथ रहा था या उसके साथ जो पीछे वाले कमरे में था, मर्सीया महज़ मेरी कल्पना थी, जैसे आज की सुबह एक कल्पना लग रही है जिसमें मैं अपनी यात्रा को अपने से अलग नहीं करने की जद्दोज़हद में लगा हूँ।

यही कारण है कि मैं अपने लिखे के बारे में बात नहीं करना चाहता हूँ। बार-बार भीतर एक आदमी कहता है कि वह तू नहीं था, वह तो कोई दूसरा था जिसने ये सब जिया है, तुझे उसकी बातें करने का हक़ नहीं है। इसलिए मेरे कुछ कहते ही मेरे सारे शब्द बहुत झूठे सुनाई देते हैं। मैं झूठ नहीं बोलना चाहता हूँ, सो इस यात्रा को अपने भीतर से निकालकर आपके हाथों सौंप रहा हूँ—मेरे सहयात्री।